सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2011 ★ श्रावण, 2068

ISSN
2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है।
मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता।
निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से
मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से
लोगों को बचाओ।"

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो ।

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना
गो सेवा अनुसंधान केंद्र
गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसुंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यार्थी, भोपालगढ़

ACHARYA SHRI ... GYANMANDIR
SRI ... RA
Koba ... 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-05

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अगारि-सामाइयंगाइं,
सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं,
एगरायं न हावए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.23

श्रावक श्रद्धालु स्वयं तन से,
सामायिक आदि ग्रहण करते।
दोनों पक्षों में पौषधव्रत,
ना एकरात्रि भी कम करते।।

अगस्त, 2011

वीर निर्वाण संवत्, 2537

श्रावण, 2068

वर्ष 68 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)

फोन नं. 0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	क्षमाशीलता और कषाय-विजय	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	तन के रथ को सुपथ पर बढ़ाते चलें	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	आत्म-दर्पण में निहारें और निखारें स्वयं को	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	16
	संबुज्झह किं न बुज्झह	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	24
	चातुर्मास की चमक	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.	29
शोधालेख-	जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा (4)	-डॉ. जीवराज जैन	31
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Ṛshbhāṣita : A Prakrit work of Universal Values (2)**	*-Prof. Sagarmal Jain*	41
अध्यात्म -	प्रमाद से अप्रमाद की ओर	-श्री चांदमल बाबेल	45
चिन्तन -	चित्त की निर्मलता से तनावमुक्ति	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	50
जीवन व्यवहार-	करुणा और अनुकम्पा	-श्री कन्हैयालाल लोढा	53
	जैन समाज की अच्छाइयाँ	-सुश्री नेहा चोरडिया	83
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है (6)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	57
प्रश्नमंच -	संगठन	-श्री पी.एम. चोरडिया	63
नारी-स्तम्भ -	विश्वास और अंधविश्वास	-श्री के.एस. गलुण्डिया	67
युवा-स्तम्भ -	भगवान् से हमारी माँग	-श्री रणजीत सिंह कूमट	72
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (67)	-श्री धर्मचन्द जैन	75
स्वास्थ्य-स्तम्भ-	जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली (3)	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	79
बाल-स्तम्भ -	जय जिनेन्द्र हम बोलें	-डॉ. दिलीप धींग	87
विचार -	क्षमा और उसके लाभ	-श्री दुलीचन्द जैन	74
	साधु-साध्वियों की चर्या है आश्चर्यकारी	-श्री महेश नाहटा	86
कविता/गीत-	मैत्री : जीवन का अमृत	-डॉ. धर्मचन्द जैन	52
	शत-शत वन्दन, शत-शत नमन	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	62
	यह कैसा विज्ञान है मन का	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	71
	हीरा गणिवर का क्या कहना..	-श्री धर्मचन्द जैन	78
	चातुर्मास : करे आत्म-विकास	-श्री जितेन्द्र चोरडिया	82
प्रेरक-प्रसंग -	हमें पत्थर मत मारो	-आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया	91
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	92
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (17)	-संकलित	94
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		100
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		119

सम्पादकीय

क्षमाशीलता और कषाय-विजय

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

क्षमाशील होना मानव जीवन का भूषण है, किन्तु क्षमाशीलता का यह भूषण हर एक धारण नहीं कर पाता है। बाह्य आभूषणों के प्रति मानव का जितना आकर्षण है उतना आन्तरिक सद्गुणों के प्रति नहीं। इसका मूल कारण मूल्यांकन का यथोचित आधार नहीं होना है। मूल्यांकन का आधार जब बाह्य चमक-दमक तक सीमित होता है तो सद्गुणों की मूल्यवत्ता की पहचान फीकी पड़ जाती है। दूसरा कारण हमारे में विद्यमान अहंकार, माया, लोभ और क्रोध कषाय की रुचि है। हमारी प्रज्ञा के समक्ष जब इन क्रोधादि कषायों का पलड़ा भारी रहता है तब हम क्षमाशीलता को नहीं अपना पाते हैं। ऐसी स्थिति में हमें दूसरे के दोषों का पलड़ा भारी नज़र आता है और हम अपने को निर्दोष मानकर दूसरों पर आक्रोशित हो जाते हैं।

अपने दोषों का दर्शन तभी हो सकता है जब हमारी प्रज्ञा निर्मल और चित्त शान्त हो। चित्त की अशान्त अवस्था में हम दूसरें के दोषों का दर्शन तो कर लेते हैं तथा दूसरे के दोषी न होने पर भी दोषारोपण कर सकते हैं, किन्तु अशान्त अवस्था में अपने दोषों का दर्शन नहीं हो पाता। दूसरे में दोष देखने एवं उस पर दोषारोपण करने से हमें सुख का अनुभव होता है। सुख का यह अनुभव अपने अहंकार को पुष्ट करता है। यह बड़ी विचित्र बात है कि प्रज्ञा जागृत न होने पर तथा चित्त की अशुद्ध एवं अशान्त अवस्था में हमें अपना क्रोध भी उसी प्रकार प्रिय लगता है जिस प्रकार कामभोगों का सुख प्रिय लगता है। इसी प्रकार अहंकार हमें प्रिय है, माया हमें प्रिय है, लोभ हमें प्रिय है। प्रिय लगने के कारण ही हम इनका त्याग नहीं कर पाते। दूसरी विचित्र बात यह है कि दूसरों में क्रोध का, मान का, माया का, लोभ का होना हमें अप्रिय लगता है। इसलिए दूसरे के क्रोधी, अहंकारी, मायावी और लोभी जीवन की हम निन्दा करते हैं।

हम चाहते हैं कि दूसरा इन दोषों से रहित हो जाए और वे हमारे अनुकूल हो जाएँ। हमारे अभिमान में वे सहयोगी बनें, हमारे लोभ की पूर्ति में उनका सहयोग हो। हम गलत करें, सही करें, सबमें वे आँख मूंदकर हमारा समर्थन करें एवं साथ दें। हम उनका अपमान करें तो भी वे समता से सह लें, हम उनकी

निन्दा करें तो भी वे हमारा बुरा न करें। इसके विपरीत हम दोषी बने रहना चाहते हैं। दूसरे के द्वारा अपमान को हम सह नहीं सकते, अपनी निन्दा को सुन नहीं सकते। क्या हमारी यह चाह न्यायसंगत है? हम ऐसा क्यों नहीं सोचते कि दूसरों को जिस प्रकार हम निर्दोष देखना चाहते हैं उसी प्रकार हम भी निर्दोष क्यों न हो जाएँ। संसार में जिसकी जितनी तीव्र चाह है, वह उतना ही अधिक अशान्त एवं दुःखी है।

क्रोध हमें अशान्त बनाता है, किन्तु अशान्ति के क्षणों में वह हमें दुःखद नहीं लगता यही हमारी सजगता की कमी एवं भूल है। इस भूल की आवृत्ति होती रहती है, फिर भी हम चेत नहीं पाते। इसी प्रकार अहंकार की पुष्टि किस तरह हमें सत्य से दूर ले जाती है एवं निष्पक्ष निरीक्षण की क्षमता को क्षीण करती है, इसका भी हमें भान नहीं होता। अपनी प्रशंसा सुनकर,. अपना सम्मान देखकर हम अपने को श्रेष्ठ समझने लगते हैं। यह व्यवहार हमारी प्रज्ञा या विवेक पर आवरण ही डालता है तथा समता को विषमता में, शान्ति को अशान्ति में परिणत कर देता है। इस अशान्ति का, विषमता का और प्रज्ञा पर आवरण का हमें तनिक भी बोध नहीं होता। जिस प्रकार मद्य का नशा हानिकारक होने पर भी मद्यपायी को सुखद प्रतीत होता है उसी प्रकार अभिमान पोषण का नशा हानिकारक होते हुए भी सुखद प्रतीत होता है। यही ज्ञानावरण का प्रभाव है, जो मोह के कारण सत्ता पाता है।

माया और लोभ भी मनुष्य की चेतना के विकास में बाधक तत्त्व हैं। माया के कारण मनुष्य सच्चाई से दूर भागता है। छल, छद्म एवं कपटपूर्ण आचरण को अपनाता है। यह उसका मिथ्यात्व है। वह दूसरों को धोखा देने में, अपनी डींगे हांकने में, अपना भला मानता है। उसे यह नहीं पता होता कि दूसरों के ठगने के प्रयास में वह स्वयं ठगा जा रहा है। वह बेशकीमती आत्मगुणों को मिट्टी के मोल बेच देता है। साधना पक्ष में अपनी क्षमता एवं वीर्य का पूर्ण उपयोग करने की तत्परता न होना एवं कोई न कोई बहाना ढूँढना भी माया का ही आचरण है। इस आचरण से व्यक्ति स्वयं को ही हानि पहुँचाता है, किन्तु मिथ्या धारणा के कारण माया का आचरण नहीं छूट पाता है।

लोभ को सब पापों से बढ़कर माना जाता है, जिसका मूल भी मिथ्या मान्यता है। लोभ के विभिन्न रूप हैं। हम प्रायः धन के प्रति लोभ से परिचित हैं। वस्तुतः सुख के प्रति लोलुपता ही लोभ है। वह सुख इन्द्रियभोग-जनित भी हो सकता है एवं धनार्जन, वस्तुसंग्रह, आत्मप्रशंसा, परनिन्दा, प्रतिष्ठा, पद, सत्ता-प्राप्ति आदि से जन्य भी हो सकता है। लोभ के कारण ही धनादि का

परिग्रह किया जाता है। भीतर में विद्यमान सुख की लालसा मनुष्य को लोभी बनाती है। इन्द्रियजन्य सुख को पूर्ण सुख समझना भ्रान्ति है और इसी भ्रान्ति के कारण मनुष्य लोभाविष्ट होता है। लोभ अनर्थ का मूल है। लोभ के कारण मनुष्य का पतन होना सुनिश्चित है। दोषजन्य सुख का लोभ व्यक्ति को कभी निर्दोष नहीं बना सकता।

हमारी सबसे बड़ी भूल यही है कि हम हमारे दोषों को दोष रूप में जान नहीं पाते हैं। अपने दोष हमें आवश्यक प्रतीत होते हैं। क्रोध करना हमें आवश्यक लगता है। अहंकार, माया एवं लोभ के आचरण भी हमें सांसारिक जीवन में आवश्यक प्रतीत होते हैं, इसलिए छोड़ने का हमारे मन में कोई भाव ही नहीं आता है। यह हमारी कमजोरी है, इसे पहचानना होगा।

क्षमाभाव इन चारों कषायों के निवारण का श्रेष्ठ उपाय है अथवा यूं कहा जा सकता है कि जब ये चारों कषाय दोष रूप में अनुभूत होते हैं तथा इनके निवारण का प्रयत्न प्रारम्भ होता है तो मनुष्य में क्षमाभाव अभिवृद्ध होता जाता है। पूर्ण क्षमाभाव चारों कषायों का पूर्ण अभाव होने पर होता है। किन्तु क्षमाभाव का निरन्तर अभ्यास इन चारों कषायों पर विजय का मार्ग प्रशस्त करता है। चारों कषायों का मूल लोभ है। लोभ में बाधा होने पर क्रोध आता है, लोभ की पूर्ति होने पर अहंकार होता है तथा लोभ की पूर्ति हेतु व्यक्ति माया का आचरण करता है। चारों कषाय एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं, इसलिए कर्म सिद्धान्त में चारों कषायों के अनन्तानुबन्धी भेद का एक साथ बंध एवं एक साथ उदय निरूपित है। इसी प्रकार अप्रत्याख्यानावरण एवं प्रत्याख्यानावरण के कषाय चतुष्क का भी बन्ध एक साथ एवं उदय एक साथ होता है। हाँ, संज्वलन कषाय चतुष्क में लोभ का उदय क्रोधादि के पश्चात् भी होता है। इसलिए लोभ को कषायों का मूल कहा जा सकता है एवं चारों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध अंगीकार किया जा सकता है।

क्षमाभाव को धारण करने पर ज्ञात होता है कि किस प्रकार क्रोध, मान, माया एवं लोभ पर विजय पायी जा सकती है। व्यक्ति को क्रोध तभी आता है जब उसमें क्षमाभाव न हो, क्षमाभाव होने पर क्रोध काफूर हो जाता है। क्योंकि क्षमाभाव शान्ति का आधार है। क्रोध को क्षमा का विपरीत माना जाता है। इसलिए जहाँ क्षमाभाव है वहाँ क्रोध नहीं रह पाता है। दूसरे का बुरा मानने पर क्रोध आता है, अतः क्षमाभाव तभी होगा जब हम दूसरे का बुरा नहीं मानेंगे। दूसरे का बुरा न मानने पर चित्त में शान्ति एवं समाधि बनी रहती है। फिर क्रोध का प्रश्न ही नहीं उठता। क्रोध किसी भी कारण से हो सकता है। उन कारणों को

जानकर उन्हें दूर करते हुए अथवा सजगता रखते हुए क्रोध का निवारण किया जा सकता है। आवश्यक नहीं कि क्रोध अत्यधिक तीव्र होने पर ही हेय हो, चित्त में उत्पन्न अशान्ति क्रोध के रूप में प्रकट होती है इसलिए वह हर क्षण हेय है, अशान्ति भी हेय है। उसका कारण जानकर निराकरण करना चाहिए।

दशवैकालिक सूत्र में कहा है-'उवसमेण हणे कोहं' क्रोध का क्षय उपशम या शान्ति से किया जा सकता है। वहाँ मान के नाश के लिए मार्दव, माया के नाश के लिए आर्जव तथा लोभ के नाश के लिए संतोष को उपाय निरूपित किया गया है। किन्तु इन चारों उपायों का समावेश क्षमाभाव में हो सकता है। क्योंकि जहाँ क्षमाशीलता है वहाँ विनय एवं मृदुता है अतः क्षमाभाव के द्वारा अहंकार को जीता जा सकता है। यद्यपि अहंकार क्षमा में बहुत बड़ा रोड़ा है। अंहंकारी व्यक्ति को लगता है कि क्षमा को अपनाने पर उसका कद छोटा हो जाएगा,किन्तु यह उसका भ्रम है। क्षमा को अपनाने पर मान का स्तम्भ धराशायी हो ही जाता है। कोई स्वाभिमान के नाम पर अभिमान का पोषण करते रहते हैं, किन्तु स्वाभिमान और अभिमान में भेद है। स्वाभिमानी व्यक्ति किसी को कष्ट दिए बिना आत्मतोष एवं आत्म-सम्मान के साथ जीवन जीता है, जबकि अभिमानी दूसरों को सदैव चोट पहुँचाता रहता है। आत्म-सम्मान भी उसका थोथा होता है। क्षमाभाव धारण करने पर स्वाभिमानी व्यक्ति में प्रतिशोध की भावना नहीं होती, अहंकारी प्रतिशोध की दृष्टि रखता है।

माया पर विजय पाने में भी क्षमाभाव सहायक है, क्योंकि क्षमाशील व्यक्ति सरलचित्त होता है। सरलचित्त व्यक्ति मायावी नहीं होता। उसे छल-छद्म एवं कपटपूर्ण जीवन जीने की आवश्यकता नहीं होती। क्षमा के माध्यम से लोभ पर भी विजय सम्भव है। क्योंकि क्षमाशील व्यक्ति संतोषी भी होता है। यदि संतोषी न हो तो एक भाई को अधिक हिस्सा मिलने पर दूसरा उसे क्षमा नहीं कर सकता। लोभ पर नियन्त्रण होने पर ही वह अधिक हिस्सा पाने वाले अपने भाई को क्षमा कर सकता है, अन्यथा पाई-पाई के लिए कोर्ट तक जाने वाले भाई भी देखने को मिलते हैं। सुखी एवं संतुष्ट जीवन के लिए लोभ पर विजय आवश्यक है। जो लोभ पर विजय के मार्ग पर बढ़ता है वह क्षमा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेता है। फिर उसकी लोभपूर्ति में बाधक होने पर भी दूसरे पर उसे क्रोध नहीं आता। अपितु उसका प्रह्लाद भाव बना रहता है। प्रह्लाद भाव से ही वह मैत्री को प्राप्त करता है। मैत्री जीवन का अमृत है। इस प्रकार क्षमाशीलता मनुष्य का वह सद्गुण है जिस पर चलने का दृढ़ संकल्प व्यक्ति को समस्त कषायों से छुटकारा दिला सकता है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अनर्थदण्ड

अहावरे दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिए त्ति आहिज्जति। से जहानामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति ते णो अच्चाए णो अजिणाए णो मंसाए णो सोणियाए एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए णहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए, णो हिंसिंसु मे त्ति, णो हिंसंति मे त्ति, णो हिंसिस्संति मे त्ति, णो पुत्तपोसणयाए णो पसुपोसणयाए णो अगारपरिवूहणताए णो समण-माहणवत्तियहेउं, णो तस्स सरीरगस्स किंचि वि परियादित्ता भवति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति, अणट्ठादंडे।

अर्थः-इसके पश्चात् दूसरा दण्डसमादानरूप क्रियास्थान अनर्थदण्ड प्रत्ययिक कहलाता है। जैसे कोई पुरुष ऐसा होता है, जो इन त्रसप्राणियों को न तो अपने शरीर की अर्चा (रक्षा या संस्कार के) लिए अथवा अर्चा-पूजा के लिए मारता है, न चमड़े के लिए, न ही मांस के लिए और न रक्त के लिए मारता है। इसी प्रकार हृदय के लिए, पित्त के लिए, चर्बी के लिए, पिच्छ (पंख), पूंछ, बाल, सींग विषाण, दाँत, दाढ़, नख, नाड़ी, हड्डी और हड्डी की मज्जा (रग) के लिए नहीं मारता। तथा इसने मुझे या मेरे किसी सम्बन्धी को मारा है, अथवा मार रहा है या मारेगा, इसलिए नहीं मारता एवं पुत्रपोषण, पशुपोषण तथा अपने घर की मरम्मत एवं हिफाजत (अथवा विशाल बनाने) के लिए भी नहीं मारता, तथा श्रमण और माहन (ब्राह्मण) के जीवन निर्वाह के लिए, एवं उसके या अपने शरीर या प्राणों पर किञ्चित् उपद्रव न हो, अतः परित्राणहेतु भी नहीं मारता, अपितु निष्प्रयोजन (बिना किसी अर्थ या निमित्त के) ही वह मूर्ख (बाल) प्राणियों को दण्ड देता हुआ उन्हें (दण्ड आदि से) मारता है, उनके (कान, नाक आदि) अंगों का छेदन करता है, उन्हें शूल आदि से भेदन करता है, उन प्राणियों के अंगों को अलग-अलग करता है, उनकी आँखे निकालता है, चमड़ी उधेड़ता है, उन्हें डराता-धमकाता है, अथवा परमाधार्मिकवत् अकारण ही नाना उपायों से उन्हें पीड़ा पहुँचाता है, तथा प्राणों से रहित भी कर देता है। वह सद्विवेक का त्याग करके या अपना आपा (होश) खोकर (अविचारपूर्वक कार्य करने वाला) तथा निष्प्रयोजन त्रस प्राणियों को उत्पीड़ित (दण्डित) करने वाला वह मूढ़ प्राणियों के साथ (जन्म-जन्मान्तरानुबन्धी) वैर का भागी बन जाता है।

-सूत्रकृतांगसूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, क्रियास्थान, द्वितीय अध्ययन, सूत्र-696

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

समाज-सेवा

- किसी समय यह कहा जाता था कि स्थानकवासियों में खर्चा कम होता है। लेकिन आज तो लाखों रुपये खर्च होते हैं। सन्तों की थोड़ी सी आवाज निकलेगी तो एक-एक व्यक्ति उनके इशारे पर अपनी भूमि, कोठी और लक्ष्मी छोड़ सकते हैं। उनके प्रति इतनी श्रद्धा है, असर है। फिर भी हम लोग आगे क्यों नहीं बढ़े? श्रद्धा के साथ ज्ञान और विवेक चाहिये। इनकी कमी के कारण पैसा गलत मार्ग में भी जाने लगता है। लाखों रुपये हर साल खाली स्थानकवासी समाज का खर्च हो जाता है। उस रुपये से कुछ वर्षों में समाज के लोगों के लिये, बच्चों की शिक्षा के लिये, उनकी व्यवस्था के लिये कितना बड़ा काम हो सकता है।
- हमारा समाज-सेवा का कार्य आगे नहीं बढ़ता। काम करने वाले कुछ सम्मान चाहते हैं और काम कराने वाले चाहते हैं कि सम्मान किस बात का दें? ''ए तो घर का टाबर है, इणा रो भी फर्ज है, म्हारे ऊपर एहसान करे कंई। बाहर का आदमी होवे तो सम्मान भी देवां।'' समाज के अगुवा उनको सम्मान देते नहीं और काम करने वालों का नाम आता नहीं। नतीजा यह होता है कि काम करने वाले, अन्य समाज का काम करेंगे। आर.एस.एस. का काम करेंगे, कांग्रेस का काम करेंगे, लेकिन संघ-समाज का क्षेत्र खाली रह जायेगा।
- जो भाई-बहन उपवास करते हैं वे अपना समय खेलों में, प्रमाद में, पिक्चर देखने में नहीं लगाएँ। प्रतिक्रमण करें, आलोचना करें, सत्संग की आराधना करें। समाज-सेवा का मौका आए तो उसे करें, लेकिन धर्म-क्रिया को नहीं छोड़ें। आप धर्मक्रिया करते हैं और दूसरा ऐसा नहीं करता है तो उसे नास्तिक कहकर उसका तिरस्कार नहीं करें, उसको भी प्रेम से गले लगावें।
- समाज में ऐसे कितने लोग हैं जो यह कहें कि मेरी बहनें और भाई जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं, उन भाई-बहनों की मदद करना, वात्सल्य करना मेरा काम है, क्योंकि मेरे पास दो पैसे का साधन है और इनके पास नहीं है। इनकी मदद नहीं करूँगा तो मेरी हल्की होगी।
- किसी रोगी की सेवा करनी है, उसका मल साफ करना है, उसका शरीर और मल-मूत्र से खराब कपड़े साफ करने हैं। यह काम तभी किया जा सकेगा, जबकि ग्लानि या सूग मिटेगी। जिसको यह खयाल होगा कि यह काम मेरे करने का थोड़े ही है तो वह स्वयं सेवा का आनन्द नहीं ले सकेगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

तन के रथ को सुपथ पर बढ़ाते चलें

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 3 जुलाई, 2011 को अजीत कॉलोनी, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

शाश्वत स्थान को प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवन्तों, आत्मा की शांति का संयोजन करने वाले अरिहन्त भगवन्तों और शांति के पथ पर चलकर समाधि भावों को बढ़ाने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में अभी तत्त्व-चिन्तक प्रमोदमुनि जी द्वारा शान्ति प्राप्ति के कुछ मार्ग सुझाये गए। महाव्रतों को अपनाकर, अणुव्रतों का आचरण कर, श्रावक के कर्त्तव्यों का पालन कर इस उपलब्ध मानव-जीवन का सदुपयोग करके शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है, आपने श्रवण किया। सबसे पहले अपने-आपका चिन्तन आवश्यक है। शान्ति-पथ के इन विभिन्न रूपों को सुनकर आपने अपना क्या लक्ष्य बनाया? क्या आप इस अनमोल तन के सदुपयोग हेतु सार्थक प्रयास कर रहे हैं? अथवा जो आपकी दिनचर्या बन गई है वह चाहे धनप्राप्ति की हो, चाहे परिवार चलाने की हो, चाहे शरीर को सुख देने की हो, उसमें कहीं कुछ धर्म का प्रभाव हुआ है? खेद तब होता है जब यहाँ एक घंटा जिनवाणी सुनने वाले भाई तीन घंटे तास खेलते हैं, तीन घंटे टी.वी. देखते हैं और न जाने कितने-कितने पापों का सेवन करते हैं, फिर भी उनके मन में ग्लानि नहीं, संकोच नहीं, सुधार का कोई प्रयत्न नहीं। धर्मस्थान में सात्त्विक दिखाई देने वाले व्यक्ति धन के लोभ में कितना अहित कर जाते हैं, शरीर के सुख के लिए कितनी हिंसा करते हैं? आप जानते हैं, जिस समाज के गौरव की बात अभी आपके समक्ष रखी गई उसमें बताया गया- ओसवाल वे थे जो व्यसनों के त्यागी थे। आप जरा चिन्तन तो करें कि आप उस मर्यादा में कितने कायम रह पाये हैं?

धर्म-साधना का प्रभाव जीवन के हर व्यवहार में झलकना चाहिए। यहाँ बैठकर एक घंटे वीतराग वाणी सुन लेने, सामायिक कर लेने, पाप से निवृत्ति कर लेने का मतलब यह तो नहीं कि दिन भर पाप करने का अधिकार मिल गया है। अपना दृष्टिकोण निर्मल हुए बिना क्या एक घंटे की सामायिक-साधना से आप दिनभर का पाप धो लेंगे? दृष्टि बदले बिना क्या ऐसा कभी होता है? क्या ऐसा कभी हुआ है? अगर ऐसा नहीं है तो हमें अपना भीतरी सुधार करना होगा। हमारे जीवन में आये हुए व्यसन जो हमारे कुल, खानदान, धर्म और शासन-दीप्ति को धूमिल करने वाले हैं, दाग लगाने वाले हैं, उन्हें दूर करना होगा। इसके लिए दृढ़ संकल्प-शक्ति की आवश्यकता है। जीवन में जो भी बुराइयाँ आ गई हैं, वीतराग वाणी श्रवण कर धीरे-धीरे ही सही उन बुराइयों को नष्ट करने, कम करने का प्रयास अवश्य करें।

मुझे अचम्भा होता है कि अच्छे खानदान में जन्म लेने वाले कुछ भाई ऐसे होते हैं जो प्रवचन के पश्चात् मुँहपत्ती उतारते हैं तो उनके दाँत कत्थे की तरह लाल दिखते हैं। कुछ लोगों के मुँह से गुटखे की गंध आती है, कुछ के मुख से बीड़ी-सिगरेट की बदबू आती है। क्या यह मानव जीवन व्यसनों का सेवन कर बर्बाद करने के लिए है? सुन तो यह रखा है कि पारस पत्थर चटनी बाँटने के लिए नहीं, अमृत कलश पैर धोने के लिए नहीं, नवलखा हार कुत्ते आदि पशु के गले में पहनाने के लिए नहीं है। क्या आपने कभी कुत्ते के गले में हार पहनाया है? नहीं तो फिर इस देव दुर्लभ नर तन को पाकर इसे व्यसनों से कलंकित क्यों करते हैं? क्यों किसी के साथ वैर-विरोध, क्रूर व्यवहार करते हैं? पैसे के लिए क्यों भाई-भाई कोर्ट-कचहरी चढ़ते हैं? क्यों लालच में आकर परिवार की बहू को पीड़ा दी जाती है? क्यों एक बहू दहेज का नाम लेकर पूरे परिवार को जेल भेज देती है? यह सब कुछ क्या आप नहीं देख रहे हैं? इनमें सुधार कौन करेगा? मात्र धन के लक्ष्य से नैतिकता का कितना ह्रास हो रहा है सुनकर मन खिन्न हो जाता है।

कल एक भाई आया। वह एक किस्सा सुनाने लगा। पाप धोने का झांसा देकर दो मित्र हरिद्वार पहुँचे। वहाँ पर एक ने दूसरे से कहा- यहाँ डुबकी लगा, तेरे सब दुःख समाप्त हो जायेंगे, सारे पाप धुल जायेंगे। उसने लोटा भर पानी लिया और शरीर पर डाल दिया। कहा-ऐसे नहीं, डुबकी लगा।

वह भाई बोला- मुझे तैरना नहीं आता। मैं डूब गया तो?

अरे तूने नोटिस बोर्ड पर लिखा हुआ नहीं पढ़ा? लिखा है- डूबने वाले को बचायेगा उसे पाँच सौ रुपये इनाम में मिलेंगे। तू डुबकी लगा। मैं तुझे निकाल लूँगा।

ज्यादा कहने पर वह कूद गया। पानी में जाते ही गुचलकियाँ खाने लगा। वह चिल्लाने लगा-बचाओ, बचाओ।

अरे चिल्लाता क्यों है? नोटिस बोर्ड के पीछे जो लिखा है उसे तुमने नहीं पढ़ा। वहाँ लिखा है जो डूबी लाश निकालेगा उसे 2500 रुपये इनाम मिलेगा।

वह दोस्त को पाप धोने के बहाने लेकर गया। अब 2500 रुपये के लिए विश्वासघात कर रहा है। यह क्या है? अचम्भा होता है यह सुनकर कि शील की रक्षा के लिए प्राणों को न्यौछावर करने वाली रूप सुंदरिया आज देश में अपना शील बेचने को तैयार हो रही हैं।

मैं कोई आश्चर्य की बात नहीं कह रहा। आज घर-घर में क्या हो रहा है? लड़का अपने बाप के साथ क्या व्यवहार कर रहा है? बहू ससुराल वालों के साथ कैसा व्यवहार कर रही है? क्या इस तरह के व्यवहार से कोई सुखी हो जायेगा? क्या इस तरह के व्यवहार से प्रतिष्ठा बढ़ जायेगी? क्या ऐसे व्यवहारों से कभी शांति मिली है?

हमारा लक्ष्य क्या है? गृहस्थ के षट् कर्म हैं- ईश-स्मरण, गुरु-सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान। आप इनमें क्या-क्या कर रहे हैं, अपना चिन्तन करें। आप नोट कर लें- दुःख देने से कभी सुख मिलने वाला नहीं है। आप यह तो सोचें कि आपके बुजुर्ग जिनके पास न पंखा था, न कूलर और न ही ए.सी., वे गर्मी में कैसे रहते थे? गर्मी पहले भी थी, आज भी है, लेकिन आज आप बिना साधन के नहीं रह सकते। सहनशक्ति घटती जा रही है।

कई लोग कहते हैं- महाराज! मैंने धंधा छोड़ दिया। अब मैं निवृत्ति में हूँ। आपमें से बहुत से निवृत्त हैं, लेकिन वे क्या करते हैं? व्यापार से निवृत्ति के पश्चात् संवर-सामायिक रूप धर्म की प्रवृत्ति में स्वयं को ढालने के बजाय अनर्थ की प्रवृत्ति में ढालना क्या निवृत्ति है। राजनीति, तेरी-मेरी, अखबार, टी.वी. आदि में समय बिताना क्या निवृत्ति कहलाती है? निवृत्ति वालों को

तो भावी पीढ़ी को संस्कार देना, परिवार के सदस्यों को नैतिक बनाना चाहिए, लेकिन उन्हें सामायिक में बैठना, प्रवचन सुनना, साधना करना, माला जपना भारी लगता है। कई तो साधना में बैठना भी मुश्किल बताते हैं। कुछ हैं जो घंटे भर के लिए ही सही, यहाँ आते हैं, लेकिन यहाँ से जाने के बाद समय का कोई ठीक उपयोग नहीं करते। निवृत्ति का अर्थ है पाप कार्यों से निवृत्ति। धंधे से निवृत्ति के साथ संवर की, संयम की साधना करनी चाहिए।

आज असंख्य जीवों को दुःख देकर सुख ढूँढ़ा जा रहा है। किन्तु दुःख देने से सुख नहीं मिल सकता। फिर इतनी हिंसा करके भी क्या आप सुख की अनुभूति कर रहे हैं? क्या अब शरीर को शांति है? आप तेबीस घंटे भौतिक सुख-साधनों के बीच रहते हैं यहाँ एक घंटा रहना आपको कैसा लगता है? जरूर उन तेबीस घण्टों की अपेक्षा धर्मश्रवण में शान्ति का अनुभव होता होगा। आप जिस सुख को साता मान रहे हैं वस्तुतः वह साता नहीं, असाता है। दूसरे जीवों को दुःख देकर जो भी सुख मिल रहा है वह आगे चलकर दुःख देने वाला ही बनता है। आप अगर इस तथ्य को समझ लेंगे तो हिंसा के साधनों में कमी लाने का भाव बनेगा।

आज न शरीर का दुःख सहन करने की स्थिति है न वचन का दुःख सहने की स्थिति है। किसी ने कुछ कह दिया तो........? आज सहन शक्ति बिल्कुल नहीं है। अध्यक्ष को भी कह देते हैं- मैं आपकी क्यों सुनूँ? मैं अपने घर की रोटी खाता हूँ। संघ-समाज की क्या बात कहूँ अपने घर में भी सहनशक्ति नहीं है। इसी जोधपुर में कभी एक-एक घर में तीस-तीस, चालीस-चालीस सदस्य एक साथ रहते थे, आज चार सदस्यों का साथ रहना मुश्किल हो रहा है। कारण क्या? मैं तो आगे की बात कहूँ- आप शायद साथ रहना ही नहीं चाहते। लड़के का कमरा अलग है, लड़की का अलग। उसके साधन अलग हैं, आपके अलग। बच्चों को बचपन से अलग-अलग कमरों में रखा जाता है तो आगे चलकर साथ रहेंगे और एक दूसरे की सेवा करेंगे, उम्मीद मत रखना।

आज पारिवारिक स्थिति हो या सामाजिक स्थिति, करणीय काम छूट रहे हैं। श्रद्धावश यहाँ आकर सामायिक करने वाले भी हैं तो उनके लिए लोग कहते हैं-बाबजी! यहाँ से जाने के बाद ये चार घंटे ताश खेलते हैं, तीन-चार

घंटे टी.वी. देखते हैं, आप इनको नियम करा दें। जरूरत क्या? जरूरत है हमारी नैतिकता की भूमि मजबूत हो। यह जितनी मजबूत होगी उतना मजबूत आध्यात्मिक महल खड़ा हो सकता है।

आप अपनी दिनचर्या में, व्यवहार में परिवर्तन लाने का काम कीजिये। देव-स्मरण, गुरु-भक्ति, स्वाध्याय, संयम, तप, दान को जीवन-व्यवहार में बढ़ाइये, फिर देखिये आपके जीवन में ही नहीं, घर-परिवार में और संघ-समाज में शांति बढ़ती है या नहीं। आज शांति नहीं है। पिता ने पुत्र को कुछ कह दिया तो वह मुँह चढ़ाकर पाँच दिन पिता से बोलता नहीं, आखिर पिता को ही उसे मनाना पड़ता है।

आप शिक्षारूप वचन सुनकर भी आचरण में लाने की कितनी तैयारी कर रहे हैं, आप अपना चिंतन करना। जीवन उत्थान के लिए ये सूत्र बताये जा रहे हैं, लेकिन आप में से अधिकांश इन सूत्रों को यहाँ से उठने के साथ भुला देते हैं। आपका लक्ष्य आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा अभी बना नहीं है। अतः आवश्यकता है अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने की। आप जीवन-निर्माण में, घर-परिवार और संघ-समाज की शांति के साथ शासन दीप्ति में ऊँचे उठने का लक्ष्य रखेंगे, इसी मंगल मनीषा के साथ.......।

IT IS JAINISM

Untouchability- existed in past, decreasing in present, hope not in future. In ancient times untouchability included not only the strata of lower class people but also the disabled in the terms of handicapped, blind, deaf, dumb and bruised body.

As you all are aware of such cruel behaviour towards them being performed, the abled could have at least bear it but disabled......??? It cannot be expressed how difficult it was for them to live a life like a slave.

People started neglecting them, treating them as sinners. At that time it was only one religion which gave meaning to the lives of disabled. And it was none other but "JAINISM" which promoted humanism with its basic motto 'Live and Let Live'.

प्रवचन

आत्मदर्पण में निहारें और निखारें स्वयं को

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी गुरुवार दिनाँक 30 जून, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

दर्प का नाश कर, जीवन को आदर्श बना कर चैतन्य को मुकुर के समान निर्मल बनाने वाले अनन्त-अनन्त वीतराग भगवन्त और काँच के इन पर्यायवाची दर्पण, आदर्श और मुकुर के अर्थ को भली भाँति हृदयंगम कर दूषण समाप्त कर भूषण से अलंकृत कराने वाले संघ के भूषण आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन के पश्चात्..........!

अभी-अभी काँच को लेकर चर्चा चल रही थी, गुरु भगवन्त की कृपा से काँच के विभिन्न पर्यायवाची शब्द स्मृति पटल पर अवतरित होने लगे। काँच का पर्याय है-दर्पण। दर्पण दर्प को बढ़ाता है। देखने के साथ व्यक्ति का ध्यान चैतन्य से हटकर जड़ पर चला जाता है। बाल व्यवस्थित हैं या नहीं, चेहरे पर कहीं कोई धब्बा तो नहीं, क्रीम-पाउडर लगाया, वह कैसा लग रहा है यह सब काँच से देखा जाता है। हमारे यहाँ किसी अपेक्षा से आगम को भी दर्पण कहा जाता है। दर्पण का दूसरा काम है चेहरे की विकृति बताकर विकृति हटाने में सहयोग करना। बाल बिखरे हुए थे, अस्त-व्यस्त थे, उनको व्यवस्थित करने का काम दर्पण से सम्पन्न हो सकता है। आगम भी दर्पण है जो विकृति निकालने की प्रेरणा करता है। आगम कहता है- अपने दोषों को निकालने की तैयारी करना।

प्राणिमात्र में दोष-दर्शन की बुद्धि विद्यमान है। मानव प्रमादवश उसका प्रयोग दूसरों पर करने लगता है। दोष-दर्शन की बुद्धि नहीं है तो दूसरों के दोष देख नहीं सकते। और जब-जब दूसरों के दोष देखते हैं तब-तब अपना अहित कर बैठते हैं। विनयचन्द जी कुम्भट ने अच्छा ही कहा है-

परनिन्दा अघपिण्ड कहीजे, आगम साख न धारे तू,
विनयचन्द कर आतम निंदा, दुर्गति दुःख न पावे तू।
रे चेतन पोते तूं पापी, पर ना छिद्र चितारे क्यूँ,
निर्मल होय कर्म कर्दम सूँ, निज गुण अम्बु नितारे तू।।

आज पाक्षिक पर्व है। कई बार पहले कहा जा चुका है–भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं है और की हुई भूल को सुधारने के लिए कोई समय खराब नहीं है। काल भी बहुत बड़ा सहकारी कारण है। आप चाहे जितने न्यौते दे दो। संचालक महोदय रोज प्रेरणा करते हैं कि आप अपने आसपास के लोगों को सूचना कर दें कि संत यहाँ विराजमान हैं, सत्संग–सेवा का लाभ लें। सूचना करने पर भी आएँ, न आएँ, पर एक संवत्सरी पर्व है जिसमें बिना बुलाये लोग उपस्थित हो जाते हैं। जो अन्य दिनों में नहीं आ सकते, संवत्सरी को देख लीजिये कोई भी स्थानक खाली मिलता है क्या? संवत्सरी को सब स्थानक खचाखच भरे रहते हैं, यह किसका प्रभाव है? यह काल का प्रभाव है। सामान्यजन के लिये ये पर्व पवित्र करने वाले बन जाते हैं इसीलिए पक्खी को विशेष धर्मध्यान की प्रेरणा चल रही है। भूल सुधारने का अच्छा प्रसंग है, जिस समय आलोचन हो, प्रतिक्रमण हो, स्वकृत पाप की निन्दा हो, गर्हा हो उसी समय पक्खी है, चौमासी है, संवत्सरी है, आत्मा की दिवाली है। पर उतनी ऊँचाई पर पहुँचने के लिए कालक्रम से ये पर्व उपस्थित होते हैं। हमें आज ही भूल सुधारनी है।

आपने सुन रखा है मृगावती से प्रतिक्रमण के समय का अतिक्रमण हो गया था। जानबूझकर किया हुआ अपराध नहीं था। आसक्ति से, तीव्र मोहोदय से किया हुआ अपराध नहीं था। सूर्यास्त होने का पता ही नहीं चला, साथी साध्वियों के चले जाने का पता ही नहीं चला। लीनता थी भगवान में, लीनता थी देवाधिदेव में, लीनता थी सर्वज्ञ सर्वदर्शी में। अन्तर का बिगाड़ नहीं, पर बाहर का व्यवहार, जिन मर्यादा का लोप हुआ, रात्रि में विलम्ब से अपने उपाश्रय पहुँची। मौसी है संसार पक्ष की। फिर भी मर्यादा उल्लंघन का उपालम्भ मिला साध्वी प्रमुखा चंदनबाला से। जो आयु में छोटी है। संसारपक्षीय भानजी है। किन्तु मृगावती ने लौट के जवाब नहीं दिया। 'मेरी क्या गलती थी। सूर्य का प्रकाश था, रात का पता ही नहीं चला। भगवान के ही पास में तो थी, कह देती। देखिए उस राजरानी महासती की अन्तरात्मा।

भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं, की हुई भूल को सुधारने के लिए कोई समय खराब नहीं है। इसको अनुप्राणित कर भीतर में उतर गई। आलोचना, निंदा, गर्हा, शल्योद्धरण, मोहोद्घाटन, घातिकर्म नाश अहा... हा.... केवलज्ञान, केवलदर्शन हो गया। चन्दनबाला के प्रयास से भूल सुधर जाती है। चन्दनबाला हजारों साध्वियों का नेतृत्व कर रही है, मृगावती को उपालम्भ दिया। उसके पूर्व भी कइयों को चन्दनबाला ने कुछ न कुछ कहा ही होगा पर उन्हें केवलज्ञान नहीं हुआ। आज सर्प से हाथ बचाने के लिए मृगावती ने साध्वीप्रमुखा चन्दनबाला का हाथ ऊपर किया। क्या हुआ? कौन है? क्या बात है? "गुरुणी जी! सर्प जा रहा था। आपके हाथ को आघात ना पहुँचे, सांप डस ना ले, इसलिये ऊपर उठा दिया।" इतनी अंधेरी रात, उपाश्रय में कोई प्रकाश की रेख नहीं। काले कजियारे तम में साँप कैसे दिख गया? क्या कोई विशेष ज्ञान....आपकी कृपा से.......कौनसा? प्रतिपाती या अप्रतिपाती। कृपालु, आपकी अनन्त कृपा बरस रही है तो प्रतिपाती क्यों होगा? और भूल सुधार के लिए दिए उपालम्भ से अनादि कालीन भूल से मोह से मुक्त होने की स्वर्णिम वेला आ गई । भीतर में खलबली मच गई और केवलज्ञान हो गया।

किसी भी समय प्रतिक्रमण किया जा सकता है। एक नवदीक्षित साधु गुरु चण्डरुद्राचार्य को कंधे पर बैठाकर ले जा रहा है। वह बड़ी दीक्षा से पूर्व श्रेष्ठी पुत्र के रूप में नई-नई शादी करके आया था। दोस्तों ने संतों को कहा- वैरागी आया है। संतों ने कहा- ऊपर आचार्य श्री विराजमान हैं। दोस्तों ने मजाक की और मजाक में मुंडन कर दिया। दीक्षा लेकर अन्यत्र विहार करने के लिए वह गुरु को कंधे पर बैठाकर ले जा रहा है। रास्ता ऊबड़-खाबड़ है, रात में पूरा दिखता नहीं है, उसका पाँव इधर उधर पड़ता है तो कंधे पर बैठे गुरु को पीड़ा होती है और गुरु चेले को भला-बुरा ही नहीं कहता, सिर पर ओघे की डंडी मारता है। मार खाते हुए भी वह बुराई नहीं देख रहा है। उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन 1, गाथा 13 के विवेचन में कथा उपलब्ध है। पाँच पाण्डवों ने जुए में द्रौपदी का दाँव पर लगा दिया। उसे जंगल में जाने की नौबत आई। द्रौपदी के माँ-बाप ने नहीं कहा- क्यों जंगल में भटक रही हो, घर आ जाओ। आज के माँ-बाप क्या कहते हैं, क्या करते हैं, आप जानते हैं। आज घर-घर

में अशांति पैदा होती जा रही है।

अभी मुनिराज कह गये- हम केवल कानों से सुनते हैं, प्राणों से नहीं। आप क्या कर रहे हैं? यहाँ बैठकर मुख-वस्त्रिका लगाकर संतों के सामने उपस्थिति लगाना, इतना मात्र पर्याप्त नहीं। आज हमारी सहनशीलता समाप्त होती जा रही है। हम आज की चर्चा कर रहे हैं। मदनरेखा अपने शील पर रही। उसे विश्वास हो गया था कि जो कुछ हो रहा है, कर्मों के कारण से हो रहा है। अतीतकाल में मेरे प्रमादवश की हुई भूल का ही परिणाम है। प्रत्येक परिस्थिति प्राकृतिक न्याय है। वह की हुई भूल को सुधारने के लिए आती है। द्रव्य कर्म से भाव कर्म और भाव कर्म से द्रव्य कर्म का अनादिकालीन चक्र चल रहा है। यह टूटे कैसे? द्रव्य कर्म-उदय के बहाव में बहना नहीं, विद्यमान राग से निवृत्ति तथा नवीन राग की उत्पत्ति नहीं। उदय में सहज रहना यह निश्चय धर्म। वह आत्मस्थ मुनि-आज ही मुण्डित हुआ है। खुद की मुण्डित होने की भावना नहीं थी। यह काम हो गया तो पार पटकना है। पंचम आरा है, अच्छे लोग गिनती में कम होते है जा रहे हैं, पर नास्ति नहीं है। आज भी ऐसे लोग हैं जो शादी होने के बाद विजय सेठ-विजया सेठानी जैसा नियम पालते हैं। शादी के पश्चात् महीनों नहीं, वर्षों तक एक पलंग पर रहते हुए कभी हाथ का स्पर्श तक नहीं करते, आत्म नियंत्रण रखते हैं। अपार धन सम्पत्ति-वैभव में आसक्त नहीं होते, जुड़ते नहीं। आम का बगीचा आया। बोलते हैं- यह पिताजी के आम का बगीचा है। मिले हुए को अपना नहीं मानते वे ईमानदार हैं। आज क्या कहा जाता है? मेरा बेटा, मेरी बेटी ये शब्द कितने मोहवर्धक हैं?

किसी भी व्यवस्था की कमी का दोष किसका है? सबसे पहले दोष मेरा है। मेरा दोष है इसीलिये तो मैं पाँचवें आरे में जन्मा हूँ। मैं पहले से करणी करता तो मुझे आज का दिन नहीं देखना पड़ता। कोई बात नहीं, मैं अब भी आराधक बनूँ। मैं सम्यक् दृष्टि बनूँ। सम्यक्दृष्टि किसी दूसरे के माथे दोष नहीं मँढता।

पुण्य-पाप का तूँ है कर्त्ता
सुख-दुःख का भी तूँ ही है भोक्ता,
तूँ ही है छेदन हार, ज्ञान से तत्त्व विचारो

समझो चेतन जी अपना रूप

यो अवसर मत हारो।।

क्या कह रहे हैं गुरु भगवन्त? यहाँ बैठे भाई-बहिनों से विनम्र अनुरोध है, लड़के वाले आपके सामने हैं, लड़की वाले भी यहीं बैठे हैं, फिर उनका कोर्ट-कचहरी में मुकदमा क्यों? की हुई बुराई कालान्तर में कई गुना बढ़कर वापस लौटने वाली है। आज जिसने सात रत्न चुराये हैं कल सात बेटे जाने वाले हैं। एक रत्न वापस कर दिया तो श्री कृष्ण को पा रहे हैं। भगवान महावीर का जन्म होता है 64 इन्द्रों के सिंहासन हिल जाते हैं, उन्हीं भगवान के कानों में कीले ठोके जाते हैं तो एक भी इन्द्र का आसन नहीं हिलता। क्यों?

हम सामने वाले को दोषी नहीं ठहरायें। तेरे में यह दोष है, उसमें यह दोष है, सबके दोष देखता रहेगा तो दोष देखने वाला अपना भयंकर नुकसान करेगा। आज विदेशी संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है? हमें विदेशियों से कोई द्वेष नहीं, किन्तु भौतिकता से, जड़ के आडम्बर के आकर्षण से मुक्त होना ही पड़ेगा। इस देश की पारिवारिक व्यवस्था नष्ट करके देश को निष्प्राण बनाने का काम चल रहा है। कभी बाल-दीक्षा के नाम पर, कभी संथारे के नाम पर बवाल खड़ा किया जाता है। क्यों तो, इस देश की सबसे बड़ी ताकत है ब्रह्मचर्य। इधर बालदीक्षा पर रोक, उधर विद्यालय को वासनालय में बदलने का कुचक्र। यौन शिक्षा का विकराल राक्षस। दस-बारह साल स्कूल-कॉलेज में बच्चे-बच्चियों को पढ़ाकर उनके शील-अपहरण का षडयंत्र।

आज पाक्षिक पर्व है। यह पर्व जीवन को निहारने का है, जीवन निखारने का है। हम जीवित रहेंगे, धर्म रहेगा 'न धर्मो धार्मिकैर्विना' इसमें कोई संशय नहीं है। कभी कोई छुपा संत होगा, कोई ईमानदार श्रावक होगा, श्राविका होगी।

किस तरह से इस देश में सांस्कृतिक विरासत को नष्ट-भ्रष्ट करने की तैयारी चल रही है? भ्रष्टाचार का विराट् दैत्य अट्टहास करता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। कुछ राष्ट्र-प्रेमी संस्कृति-रक्षक महावीरजी त्यागी सरीखे दया की दृष्टि से भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाते हैं, तो उन पर रात्रि के 1 बजकर 20 मिनिट पर आरक्षक दल ऊपर के आदेश की पालना में डंडे बरसाता है।

अश्रु गैस के गोले छोड़ता है। अहिंसा प्रेमी योग-प्रचारक बाबा रामदेव के शब्दों से अनशन पर बैठे लोग शांत रह जाते हैं, वरना कितना खून-खराबा हो जाता। भ्रष्टाचार नहीं मिट सकता जब तक विचारों की भ्रष्टता समाप्त नहीं होती। विचार से भ्रष्ट यानी मिथ्यादृष्टि। जब तक पुद्गल में सुख नज़र आयेगा फिर वह चाहे जहाँ से आए, भोग की साधन-सामग्री चाहिये। धर्म की श्रद्धा साता की आसक्ति से अलग करती है। आराधक वही बनता है जो पुद्गल का उपयोग करता है, भोग नहीं करता।

साधक को छह कारणों से इस शरीर को भाड़ा चुकाने की व्यवस्था दी गई है। पाँचों इन्द्रियों के विषयों से विरक्ति, निर्लिप्त-जो मिल गया उसमें संतोष, तभी होगा शिष्ट आचार। आत्मरमण, ब्रह्मचर्य, जीवन बनेगा आदर्श। 36 साल की उम्र में शीलव्रत ले लेते हैं, 31 साल की उम्र में खंद करने वाले हैं। प्रकाश जी पटवा ने छब्बीस साल में शीलव्रत का खंद किया। भोग-वासना से ऊपर उठने का यह पांक्षिक पर्व है। दर्पण का एक नाम है आदर्श। आदर्श जीवन कैसा होता है? जो जीवन में उच्चता की प्रेरणा करता है वह आदर्श जीवन होता है। आदर्श-काँच शरीर के विकारों को, चेहरे की विकृति को दूर करा शरीर को अच्छा, स्वच्छ करता है। आचारों की पवित्रता वाला जीवन आदर्श बन जाता है।

मुनिराज फरमा रहे थे कैमरे का काम ग्रहण करना है। कभी काँच भी ग्रहण कर लेता है। काँच पर तेल की बूँद गिर जाय तो उस पर धूल-मिट्टी जो भी आये उसे काँच पकड़ कर ग्रहण कर लेता है। काँच ने ग्रहण कर लिया तो मौलिक गुण नष्ट प्रायः हो गया। किसी में अस्वाभाविकता का आ जाना ही अशुद्धि है। हम अशुद्धि निकालने का चिन्तन कर रहे हैं। पहले आवश्यक में अशुद्धि को ध्यान में लिया जाता है। मेरे द्वारा क्या-क्या त्रुटियाँ हुईं, कौन-कौनसी अशुद्धियाँ हुईं? जब तक दर्पण पर रही अशुद्धि हटेगी नहीं, तब तक स्वाभाविकता में नहीं आ पायेगा। मेरे चैतन्य के गुण में ऐसी कौनसी अशुद्धि आ गई है?

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः।
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।।

केवलज्ञान दर्पण के समान है। केवलज्ञान में त्रिभुवनवर्ती समस्त

सामग्री का त्रैकालिक प्रतिबिंब पड़ता है। जीव-अजीव की पर्याय चाहे अतीत की हो, वर्तमान की हो, भविष्य की हो। तीनों काल के सारे चित्र एक साथ दिखते हैं। उस मुकुर की उपमा से उपमित है विशुद्ध चैतन्य, पर इस जीव रूपी काँच ने बाहरी मल या मैल को पकड़ कर अपने को दोषी बना रखा है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय कर्म के कारण से, कषाय के कारण से जो मैल लग गया वह चिपकता गया, इसलिये शुद्ध स्वरूप आज बदरूप हो गया है। आज जीव कहाँ मानने को तैयार है कि मैं शुद्ध परमात्मा हूँ?

गुरु को नवदीक्षित शिष्य कंधे पर बैठाकर ले जा रहा है। उसका कोई दोष भी नहीं है, फिर भी गुरु का उपालम्भ। वह गुरु के प्रहारों को सहता हुआ भी गुरु का दोष नहीं मान रहा है। मैं अपना चिन्तन करूँ, आप अपना सोचें। मैंने कभी श्रद्धेय महेन्द्रमुनिजी महाराज के प्रवचन में पढ़ा- एक आचार्य ने किसी संत को पात्र फूटने का उपालम्भ दिया, संत बड़े शान्तचित्त से सुनते गये। क्षमायाचना कर गलती का मिच्छामि दुक्कड़ं देने गए, अन्यत्र से आए दूसरे संत ने कहा- यह इनके हाथ से नहीं,मेरे हाथ से टूटा है। आचार्य खेदखिन्न हुए, पूछा गया उन्होंने अपनी निर्दोषता क्यों नहीं कहीं। संत कहने लगे- अरे! मेरे को ऐसा सुन्दर अवसर, दुर्लभ अवसर उपलब्ध हुआ। अनन्त कृपालु आचार्य भगवन्त के हितशिक्षा के अमृत वचन मिले, धन्य-धन्य हो गया आज मैं।

वह नवदीक्षित मुनि दीक्षा लेने नहीं आया था। साथियों ने मजाक की। मजाक-मजाक में संतों ने मुंडित कर दिया, फिर भी गुरु को कष्ट नहीं हो, इसीलिये कंधे पर बैठाकर ले जा रहा है। आपके और मेरे में यह गुण आ जाय तो.......।

दर्पण पर, मुकुर पर आए मैल को, मोह ओर योग से आत्मा पर आए कर्म-कालुष्य को समाप्त करने की चर्चा चल रही है। उसी प्रसंग में भूल सुधारने के लिये पाक्षिक पर्व की वार्त्ता भी चली। ज्यादा वैर-विरोध चार दीवार के भीतर उत्पन्न होता है। आज भूल सुधार का विशेष पर्व दिवस उपस्थित है। आज परिवार के सम्बन्ध छिन्न-भिन्न कर सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक विरासत को नष्ट करने के लिये षड्यंत्र हो रहे हैं। टी.वी. पर वैसे ही सीरियल, फिल्मों में वैसे ही दृश्य, बीभत्स कानूनों का निर्माण। इस समय भी

कुछ आदर्श हैं हमारे सामने सकारात्मक सोच विकसित करने के लिये। परमावश्यकता है इनके श्रवण की, मनन की जीवन में आत्मसात् करने की।

गुरु के डंडे पड़ रहे हैं तो भी सकारात्मक सोच है। चलते-चलते अन्दर की गहराई में चले गए, एक दिन के मुण्डित संत को केवलज्ञान हो जाता है। केवलज्ञान होने पर रास्ते में पड़े खड्डे साफ दिखते हैं। गुरु सोचते हैं डंडे की मार से भला कौन सीधा नहीं चलता। पर ऐसा सीधा, रात के अंधेरे में पूछ लेते हैं, क्या हुआ? अब सीधा कैसे चल रहा है? गुरुजी आपकी अनन्त कृपा जो बरसी। मुझे मार्ग, सारे मार्ग स्पष्ट दिख रहे हैं। अरे क्या? तूझे ज्ञान हो गया। गुरुदेव! आपकी कृपा से। कौनसा? गुरुदेव! परिपूर्ण। ओ हो मैंने केवली की आशातना कर दी। उतारो-उतारो मुझे नीचे उतारो। उतरे नीचे और चढ़ गए ऊपर गुणश्रेणी पर। आत्म-आलोचन, आत्म-अन्वेषण अत्यन्त व्याकुलता और यह आ गया तेरहवाँ गुणस्थान। कितना हितकारी है भाव प्रतिक्रमण। रात के अंधियारे में पूर्ण प्रकाश। आप सोचते होंगे केवलज्ञान कोई रास्ते में पड़ा है।

आज चतुर्दशी है, पाक्षिक पर्व है। आपके-हमारे समक्ष आध्यात्मिक चिकित्सक विराजमान हैं। आचार्य श्री इनवेस्टीगेशन करके हमको मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। आप भी जगें। अपने दोष देखकर जगने का प्रयास करें। चौबीस तीर्थंकर भगवन्त अपने दोषों से सर्वथा मुक्त हो चुके। जो भी साधक मिथ्यात्व को दूर कर पुद्गलों में रही आसक्ति तोड़कर, अपनी भूलों का परिमार्जन करने का पुरुषार्थ करेगा तो उसके दोष ठहर नहीं सकते।

2008 में मुम्बई में आतंकवादी हमला हुआ। लगभग रात के चार बजे दिल्ली से विशेष प्रशिक्षित कमाण्डो पहुँचे। आतंकवादी निस्तेज हुए। पाकिस्तान में लादेन के लिए अमेरिका से हेलीकॉप्टर आये। राडार तक में पता नहीं चला। कुछ क्षणों में सारा काम तमाम । हमारी चेतना जगे तो पुद्गल का दल भाग जायेगा। शेर की दहाड़ होती है तो भेड़-बकरी ठहर नहीं पाते।

आप दर्पण को अपनी तरफ कर लें। आपको अपने दोष दिखाई देंगे। दोष कौनसे हैं, क्या उपचार है जान लिया तो फिर उनका निवारण भी हो सकेगा।

卐

प्रवचन

संबुज्झह किं न बुज्झह

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक 16 जून, 2011 को राजीव नगर, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

अनन्त करुणानिधि, अकारण करुणा करने वाले भगवान महावीर ने संसार के भव्य जीवों को सम्बोधित करते हुए एक सूत्र प्रदान किया- **संबुज्झह किं न बुज्झह**। हे प्राणी! तू बोध को प्राप्त कर। क्यों तू संसार की गफलत में पड़ा है? संसार में मानव ने क्षुद्र से विराट्, नर से नारायण, जग से जगदीश्वर बनने के लिए देह धारण की। विराट् बनने के बजाय क्षुद्र की ओर क्यों बढ़ रहा है? जो क्षुद्र से राजी होता है वह विराट् नहीं होता। जो प्राणी नल के पानी से संतुष्ट हो जाते हैं वे मानसरोवर के पानी का स्वाद नहीं पा सकते। हमारी जिज्ञासा ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है त्यों-त्यों हम आगे-से-आगे बढ़ते हुए विकास कर सकते हैं। मानव अगर प्रोफेसर पद से संतुष्ट है तो वह परमेश्वर पद नहीं पा सकता।

वीतराग भगवन्त के छोटे-छोटे सूत्र हमें विराट् बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। भगवान ने कहा- **संबुज्झह किं न बुज्झह**। मानव इस संसार में आया है, उसे सभी चीजें सुलभ नहीं होतीं, दुर्लभ चीजें भी हैं। वीतराग वाणी का श्रवण दुर्लभ है। चार दुर्लभ अंगों में धर्म-श्रुति को दुर्लभ कहा है। भगवान ने कहा- सवणे णाणे य विन्नाणे। श्रवण किए बिना न ज्ञान होगा, न विज्ञान। हेय क्या?, ज्ञेय क्या? उपादेय क्या? उसकी जानकारी सुनने से हो सकती है।

नवतत्त्व के थोकड़े जानने वालों को मालूम है हेय क्या होता है? तीन तत्त्व जानने योग्य हैं। भगवान ने कहा-ज्ञान सब द्रव्यों का प्रकाशक है। **णाणस्स सव्वस्स पगासणाए**। हमें क्षुद्र पर राजी नहीं होना है। मानव को

इंजीनियर पद पाकर राजी नहीं होना, उसकी मंजिल तो परमेष्ठी पद प्राप्ति है। बड़ी के लिए छोटी चीज का त्याग करना पड़ता है। किसी को कोई बड़ा सौदा मिलता हो तो वह दस-पन्द्रह हजार के नुकसान को भुला देता है। भगवान कह रहे हैं- तुम्हें विराट् बनना है तो क्षुद्रता का त्याग करना होगा।

भगवान हर समय हर पल सन्देश दे रहे हैं- प्राणी! तू अपने-आपका बोध प्राप्त कर। भगवान ने बोध प्राप्त करने का सन्देश दिया, किन्तु हमें बोध प्राप्त नहीं होता, क्योंकि हमारे में क्रोध भरा पड़ा है। जहाँ क्रोध है वहाँ बोध नहीं है। या तो क्रोध रहेगा, या बोध। भगवान ने अनन्त करुणा करके हम-सबको प्रेरणा की है। भगवान ने प्रेरणा करने में कोई कमी नहीं रखी, संसार के प्राणी ग्रहण करें या न करें यह उनकी मर्जी पर निर्भर है। सूर्य सबको प्रकाश देता है, पर कोई अपने घर का दरवाजा बन्द कर दे तो सूरज का प्रकाश कैसे आयेगा? परमात्मा बनने के मार्ग पर बढ़ना है तो वीतराग-वाणी को धारण करना पड़ेगा।

वीतराग-वाणी पुरानी नहीं होती। भगवान की वाणी तो हर युग में समस्याओं का समाधान प्रदान करने वाली है। भगवान ने तीन प्रकार की दृष्टि बतलाई है। आप पच्चीस बोल में याद करते हैं- अठारहवें बोले दृष्टि तीन। किन्तु यहाँ भगवान ने आत्मा को परमात्मा बनने के लिए सम्यक्त्वी बनने की पहली दृष्टि बताई- **शास्त्र दृष्टि**। शास्त्र दृष्टि से मानव अपने जीवन को सत्पथ पर आगे बढ़ाता है। रथनेमि भटक गया था। राजीमती ने शास्त्र दृष्टि से समझाया तो वह पथ पर आ गया। संसार में जितने प्राणी सत्पथ पर आए हैं वे इसी शास्त्रदृष्टि से सत्पथगामी बने हैं।

आपने सुना होगा- आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने फरमाया कि दुनियाँ को शस्त्रधारी सेना के साथ शास्त्रधारी सेना भी चाहिये। शास्त्रदृष्टि मार्ग पर लाती है। इसके लिए एक-दो नहीं, अनेकानेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। भटका हुआ जीव मार्ग पर आ सकता है।

दूसरी दृष्टि है-**गुरु दृष्टि**। गुरु का काम होता है पथ पर चलाने का। गुरु प्राणवान होते हैं। गुरु जीवन्त सम्पर्क से शिष्य को आगे बढ़ाता है। आप कहते भी हैं ना-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।

बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय।।

भक्त भगवान को प्रणाम करने से पूर्व गुरु को प्रणाम करता है। गुरु ने मात्र रास्ता ही नहीं बताया, उस रास्ते पर चलने का सम्बल भी दिया है। गुरु के बताये मार्ग पर आगे बढ़कर आत्मा परमात्म-पद को प्राप्त कर सकता है। गुरु के माध्यम से जीवन शुरु होता है। अतः हम गुरुदृष्टि का अनुसरण करें।

तीसरी दृष्टि होती है- **अनुभव दृष्टि**। जहाँ अनुभव की दृष्टि है वहाँ कोई भी मंजिल पा सकता है, लक्ष्य साध सकता है। आप घर से निकले। आप रोड़ पर आ गये। गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी चलने लग गई। आपको कहाँ पहुँचना है, यह निश्चित नहीं तो....? क्या गाड़ी पर चलना सार्थक होगा? अनुभव दृष्टि मंजिल तक पहुँचाती है। अनुभव की दृष्टि भव-भवान्तर के बन्धनों को समाप्त करने वाली है। हमें हर काम करते हुए सजग-सावधान रहना है। साधक यदि सावधान है तो उसे समाधान मिल जायेगा। नहीं तो समाधान मिलने वाला नहीं है। जीवन में चाहे जितनी समस्याएँ क्यों न हों अनुभव दृष्टि है तो समाधान मिलेगा ही। हम संतों की समस्याएँ छोटी-छोटी हैं आपकी समस्याएँ ......? आपको घर-परिवार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन सबसे बड़ी समस्या है कर्मों की। उससे कौन बचा रह सकता है?

भगवान ने दुःखमुक्ति का उपाय बताया- बोधि को प्राप्त करो। **संबुज्झह किं न बुज्झह**। भगवान ऋषभदेव ने अपने 98 पुत्रों को सम्बोधित करते कहा कि मैं तुम्हें ऐसा राज्य दूँगा जो एक बार मिल गया, वह पुनः जायेगा नहीं। संसार के सारे पदों का नाश होता है, किन्तु सिद्ध पद का कभी नाश नहीं होता। हमें सभी कर्मों से मुक्त होने के लिये, संसार के कार्यों को करते हुए विचारधारा उज्ज्वल बनानी होगी। जहाँ विचारधारा उज्ज्वल होती है वहाँ का आचार भी उज्ज्वल बन जाता है।

आचार का मतलब है-'आ' यानी मर्यादा और 'चार' यानी पालन करना। मर्यादापूर्वक काम किया जाता है वह है आचार। हमें आचार की प्रेरणा देने वाले आचार्य भगवन्त सन्देश दे रहे हैं- "प्राणी! तू दो बातों को ध्यान में रख। पहली बात-समूह में रहे तो शब्दों को संभाल और दूसरी बात है एकान्त में रहे तो विचारों को संभाल।" तुम्हें शब्दों के प्रति पूर्ण विश्वास

होना चाहिये, क्योंकि जुबान से बाहर निकला शब्द लौटकर नहीं आता। हमारे पूज्य श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज ने तीन बातों की पुस्तक में संकलित किया है कि कमान से निकला तीर वापस नहीं आता। जुबान से निकला वचन लौटकर नहीं आता। तीसरी बात कही- शरीर से प्राण निकल जाय तो वे भी लौटकर नहीं आते। जुबान से निकला वचन लौटकर नहीं आने वाला है।

महापुरुष कहते हैं- समूह में रहे तो शब्दों को संभालो। यह सूत्र दिखता भले ही छोटा है, लेकिन इसमें बहुत गहरा सार भरा है। एक से ज्यादा दो भी कहीं है तो वह समूह है, उस जगह भी वचन का उपयोग सही रखना होगा। अगर वचन का उपयोग नहीं रखा गया तो फिर माथे पर जूते ही पड़ने हैं। हमारे संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी महाराज तो फरमाते ही हैं, श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी महाराज भी प्रायःकर फरमाते रहते हैं कि जुबान तो बहुत छोटी है, शरीर बड़ा है, जुबान तो बोलकर मुँह में चली जायेगी, उसका कुछ नहीं बिगड़ता, बिगड़ता है तो शरीर का। जुबान कहकर मुँह में चली जाती है किन्तु शब्द जो निकले वे यदि ठीक नहीं, तो मार किसे खानी पड़ती है? आपने सुन रखा है महाभारत क्यों हुआ? ''अंधे के अंधे पैदा होते हैं'' इन शब्दों ने महाभारत खड़ा कर दिया। जो भी शब्दों को संभाल कर बोलता है उसको नुकसान नहीं उठाना पड़ता। समूह में रहे तो शब्दों को संभाल और एकान्त में रहे तो विचारों को संभाल। आदमी एकान्त में बड़बड़ करता है तो उससे कुछ फर्क पड़ने नहीं वाला है। विचार बिगड़े तो आचार भी बिगड़ सकता है। घर-गृहस्थी को आराम से चलाना हो तो शब्दों को संभालना होगा। शब्द अपना बनाते हैं तो पराया भी बनाते हैं। भगवान ने तो जगह-जगह संदेश दिया- मानव! तू मृषावाद का त्याग कर दे। मृषावाद का मतलब मात्र झूठ बोलना ही नहीं है। दशवैकालिक सूत्र में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि चोर को चोर नहीं और काणे को काणा नहीं बोलना। काणा है उसे काणा कहना मृषावाद में नहीं आता, फिर भी ऐसे शब्द जिनसे सामने वाले को दुःख पहुँचे, नहीं कहने चाहिये। हमने शब्दों को संभाल लिया तो जीवन संभल जायेगा।

समूह में रहें तो शब्दों को संभालें और एकान्त में रहें तो विचारों को संभालें। एकान्त में विचारों की शृंखला बढ़ती ही जाती है। अकेलेपन में न जाने कहाँ-कहाँ से विचार आते रहते हैं। विचारों का तानाबाना मकड़ी के

जाले की तरह बनता जाता है। आपने वह कहावत तो सुनी ही होगी- "खाली दिमाग शैतान का घर।" खाली दिमाग शैतान का घर, खुला दिमाग भगवान का घर। अगर मानव खुले दिमाग से विचार करेगा, सोचेगा या चिन्तन करेगा तो वह सत्य का संचय करेगा।

भगवान ने कहा- "मानव! तू बोधि को प्राप्त कर।" बोधि प्राप्त करेंगे तो हम स्नेहपाश को तोड़ पायेंगे। इस स्नेहपाश को तिलांजलि देने के लिए मदनरेखा मुनिराज से कहती है- "मुझे संसार की इस जलती आग से नन्दनवन तक पहुँचा दो।" भगवान ने संसार को दावानल बताया है। दावानल चारों तरफ से जल रहा है। मुनिराज जो ध्यान में स्थित हैं, मदनरेखा निवेदन करती है- "भगवन्! मुझे संसार से संयम में स्थापित कीजिंये।" वह महासती बन गई। साधना में रत रहने लगी। एक देव आता है। देव पहले महासती मदनरेखा को वन्दन करता है फिर मुनिराज को। मदनरेखा को देव ने पहले वन्दन किया, यह देखकर तो सभा में बैठे लोगों को विचार आया कि देव भी रूप का पागल है, इसलिये मुनिराज को पहले वन्दन करने के बजाय रूपवती मदनरेखा को पहले वन्दन करता है। मनुष्य को रूप और रूपया भ्रमित करते हैं।

थोड़ी देर बाद मुनिराज ने ध्यान खोला, विचार किया कि मेरी सभा में बैठे लोगों के मन में भ्रम की स्थिति बनने के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पूर्वभव का युगबाहू उपकारी के उपकार के कारण महासती मदनरेखा को वन्दन कर रहा है। उपकारी के उपकार के कारण मुनिराज के पहले महासती को वन्दन किया गया है, न कि रूप के कारण। यह सुनकर लोगों की जिज्ञासा शान्त हुई। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी महाराज) ने एक दिन फरमाया था कि आज "रेखाएँ (नारियाँ) मदन (काम) के पीछे सारी रेखा (सीमा) तोड़ रही हैं, और मदन (भोग) ने सारी रेखाएँ (मर्यादा) लांघ दी हैं।"। भगवन्त की बात भले ही छोटी हो, किन्तु उसमें कितना सार भरा है। महासती के सत्य का, शील का, आचार का, शिष्टाचार का सार यदि हम पा सकें तो हम भी मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकेंगे। इन्हीं मंगल शब्दों के साथ........।

卐

प्रवचन

चातुर्मास की चमक

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. द्वारा 14 जुलाई 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में चातुर्मासिक पर्व पर फरमाये गए प्रवचन का आंशिक संकलन श्री सौभाग्यमल जैन, पूर्व व्याख्याता, अलीगढ़ (टोंक) ने किया है।

-सम्पादक

आज चातुर्मासिक पर्व है। यह पर्व हमें पदार्थ की ओर नहीं, परमार्थ की ओर ले जाता है। प्रमाद का परिहार करा, प्रमोद-भाव से साधना में आगे बढ़ाता है। यह पूर्व में हुई भूलों का शोधन करा, अपूर्व आराधना के लिए तत्पर कराता है। आज का यह चातुर्मासिक पर्व, पर्वत के समान अडोल, अकम्प एवं अविचल रहकर आचार्य भगवन्त के चरणों में चार माह की स्थिरता के साथ आराधना करके, आराधक बनने की प्रेरणा कर रहा है।

जोधपुरवासी अत्यन्त भाग्यशाली हैं, जिन्हें जिनशासन के जाज्वल्यमान नक्षत्र, पूज्य आचार्य भगवन्त की चातुर्मास के रूप में सन्निधि मिली है। इस सन्निधि का, इस चातुर्मास का उपयोग हम इस प्रकार करें- जिससे सोया हुआ भव्यत्व और देवत्व जग सके।

इस चातुर्मास की भव्यता, गुरु भगवन्तों के मुखारविन्द से जिनवाणी या वीतरागी वाणी को सुनकर भव्यत्व जगाने में है, न कि मात्र प्रवचन सुनकर भाव-विभोर हो भावुक बनने में। इस संसार-चक्र में यह जीव अनेक बार भावुक बना है, किन्तु अब भावुकता को ही नहीं, भव्यत्व को जगाना है।

चातुर्मास की दिव्यता देवता बनने में है न कि दीनतामय जीवन जीने में। चातुर्मास की चमक चौके की व्यवस्था से नहीं, कषायों के चौक को घटाने से है। जितना-जितना कषायों का चौक घटता जायेगा, उतना ही अध्यात्म क्षेत्र में आनन्द आयेगा तथा चातुर्मास की चमक में चार चाँद लगने लगेंगे। श्रावक का गुणस्थान पाँचवां होता है। उसमें अनन्तानुबंधी और अप्रत्याख्यान कषायों के चौक का उदय नहीं होता। परन्तु जिनमें

अनन्तानुबंधी एवं अप्रत्याख्यानावरण-क्रोध, मान, माया एवं लोभ अभी तक विद्यमान है उन्हें उनको तोड़ना है, जो प्रत्याख्यानावरण को तोड़ते हुए संज्वलन कषाय को भी क्षय कर सकें, उनका तो कहना ही क्या। छठे गुणस्थान में संज्वलन कषाय का ही उदय रहता है। छठा गुणस्थान अर्थात् साधु का गुणस्थान। चातुर्मास की सार्थकता इसी में है कि संतों के संस्कार श्रावकों में आने लगें, संतों का आचरण, संतों की क्रिया, श्रावक की क्रिया बनने लगे। इसीलिए कहा कि चातुर्मास की चमक चौके (भोजनशाला) से नहीं, कषायों के चौक को घटाने से है।

चातुर्मास की सुगन्ध, सौगन्ध (सौगन्द) से फैलने वाली है, न कि सुगंधित पदार्थों को खाने एवं खिलाने से। सामाजिक क्षेत्र में चातुर्मास का मूल्य भले ही वस्तुओं के मूल्य से मापा जाता हो, मगर धर्म के क्षेत्र में अध्यात्म के क्षेत्र में तो चातुर्मास का मूल्य, अपने मूल को पाने में है। चातुर्मास का लक्ष्य, लक्ष्मी एकत्रित करना नहीं, अपितु आत्म शुद्धि की ओर बढ़ना होता है। भक्तों की शुद्ध भावना पर ही चातुर्मास की प्रभावना निर्भर करती है। इसलिए कहा जाता है- **भीतर की शुद्ध भावना, यही है सबसे बड़ी प्रभावना।**

प्राप्त हुए चातुर्मास की महत्ता, महान् बनने में है, मान में रहने से नहीं। हम सभी का जीवन महान् बने, पावन बने, इसलिए यह पावन पर्व उपस्थित है, साथ ही पावन-पुरुषों का सान्निध्य भी उपलब्ध हो रहा है। इस अलभ्य अवसर को उपलब्ध कर आप सभी आगे बढ़ें-

भोग से योग की ओर	संसार से संयम की ओर
वासना से उपासना की ओर	कंकर से शंकर की ओर
बुद्धि से बुद्ध की ओर	शरीर से आत्मा की ओर
अनित्य से नित्य की ओर	कर्म से अकर्म की ओर
कषाय से समता की ओर	क्षुण्ण से अक्षुण्ण की ओर
विनाशी से अविनाशी की ओर	अशाश्वत से शाश्वत की ओर
राग से अनुराग की ओर	अनुराग से वैराग्य की ओर

वैराग्य से वीतराग की ओर आप आगे बढ़ें। वीतराग पथ पर बढ़ने वालों का, वीतराग पथिकों की ओर से स्वागत अर्थात् 'स्व' में आने का आमंत्रण।

वैज्ञानिक-लेख

जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा (4)

डॉ. जीवराज जैन

जैन लोक-स्वरूप के मानचित्र का रहस्य

(ब्रह्माण्ड का, पदार्थ अवस्था व जीव पर्याय के अनुसार वर्गीकरण)

1. कई जगह यह एक अप्रिय चर्चा का मुद्दा बना हुआ रहता है कि जैन आगमों में विश्व स्वरूप का जो नक्शा दिया हुआ है, वह आजकल स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले भूगोल, खगोल आदि विद्याओं से बिल्कुल मेल नहीं खाता है। हम पढ़ते आये हैं कि पृथ्वी नारंगी की तरह गोल है। अंतरिक्ष यात्रियों ने घूमती हुई पृथ्वी के चित्र भी खींच कर दिये। लेकिन हमें नहीं सूझता कि इससे उत्पन्न ब्रह्माण्ड के आकार की समस्या का निराकरण कैसे हो? आगमवाणी गलत तो हो नहीं सकती। तो फिर क्या तर्क या सफाई दी जाय। कई विद्वान व साधुओं ने, पंडितों ने नक्शे बनाये। मॉडल बनाकर शोध करने में करोड़ों रुपये खर्च किये गये। मध्यलोक, त्रिलोक, लोकाकाश जैसे कई शोध-संस्थाओं के जरिये साधु लोग अपना दिमाग लगा रहे हैं। आगमों में उनकी अटूट श्रद्धा तो है। लेकिन लोगों की दृष्टि में वे हठवादी दिखने लगे हैं। आज के जैन वैज्ञानिक तो इस पर चर्चा करना मुनासिब न समझकर, मुद्दों को टालना ही श्रेयस्कर समझते हैं।

2. लोक-स्वरूप पर एक नज़र- जब हम लोक के स्वरूप (चित्र-1) पर नज़र डालते हैं, तो समझ में आता है कि-

(अ) कितने अच्छे ढंग से विश्व को सजाया हुआ है। एक के बाद एक नरकों की कतारें हैं। आपसी दूरियाँ व उनके माप किस प्रकार व्यवस्थित करके रखे गये हैं, जैसे किसी मॉडल-विशेषज्ञ ने इसकी रचना की हो।

(ब) ऊर्ध्वलोक भी कितने अच्छे ढंग से व्यवस्थित है, जैसे कि किसी ने अपनी प्रदर्शन-मंजूषा में एक के ऊपर एक, स्वर्ग को भी सजा रखा हो।

(स) विश्व के सभी त्रस जीवों को एक नाली में इकट्ठा करके, इस प्रकार एक बाड़े में, बिना रस्सी के, बाँध दिया कि वे कहीं उसके बाहर जाकर भटक न जायें। निगरानी इतनी की देवता लोग भी, अपनी महती शक्ति के

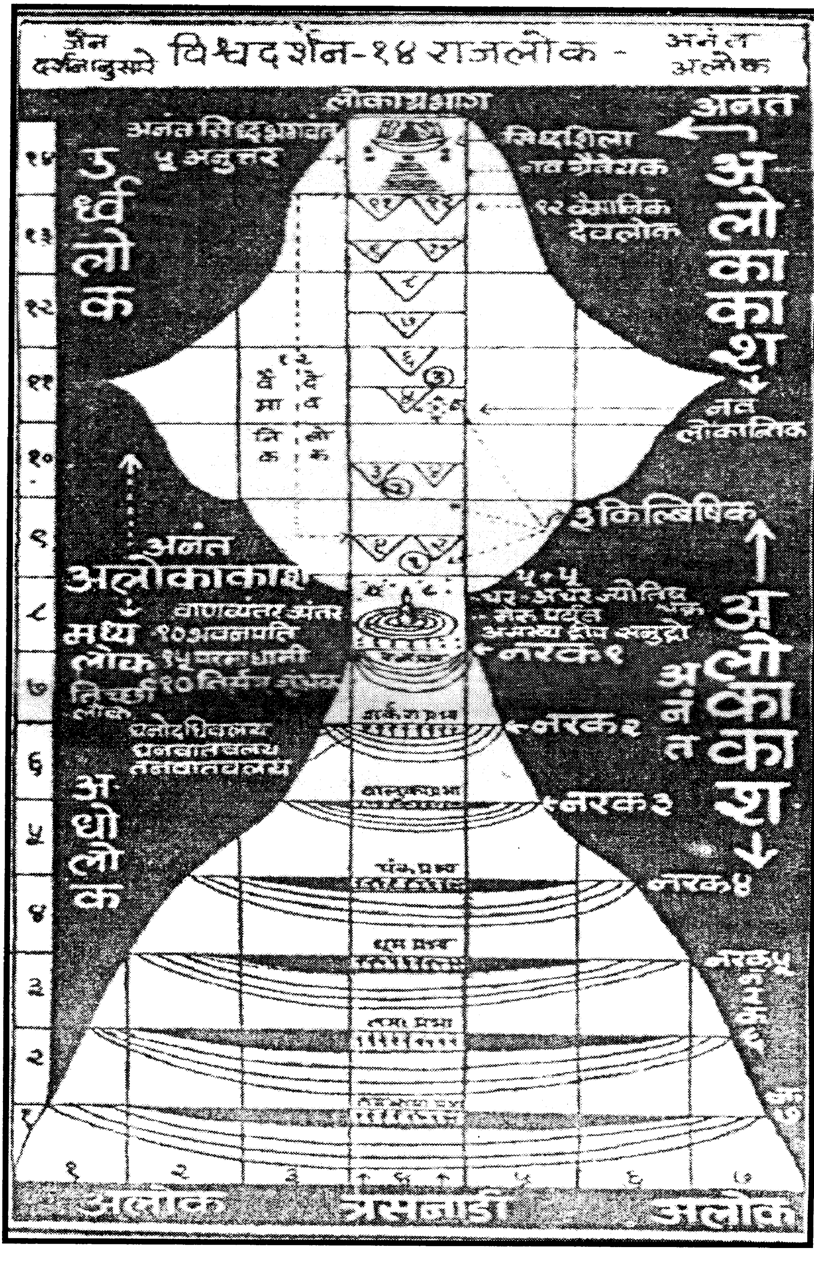

उपरांत भी छिटक कर बाहर नहीं जा सकते।

(द) मध्यलोक का तो कहना ही क्या? कैसे गोल-गोल वलयों में द्वीपों को एक के बाद एक व्यवस्थित करके रख दिया है। (अढ़ाई द्वीप, चित्र-2)।

मध्यलोक का चित्र

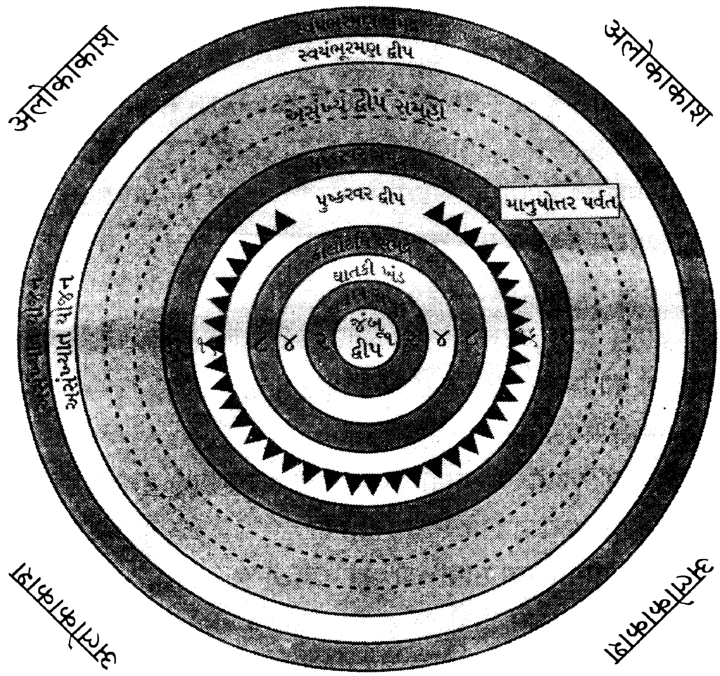

चित्र-2: वृताकार रूप में द्वीप-समुद्र के युग्म (मध्य लोक)

ऐसा कलाकार कौन हो सकता है।

(य) इन तीनों लोकों का एक के ऊपर एक अवस्थित होना भी समझ के बाहर है। धुरी पर घूमती हुई हमारी पृथ्वी, उसके नीचे नरक और ऊपर में स्वर्गलोक कैसे संभव हो सकते हैं। हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि पृथ्वी के ऊपर भी नीला आकाश और नीचे भी नीला आकाश नजर आता है। हमारे नीचे, दूसरी तरफ रहने वालों को रात को आकाश में तारा मंडल ही दिखाई देता है। कहीं नरकावास नजर नहीं आता है। इस प्रकार दृष्टिगत ब्रह्माण्ड, प्रदर्शन-मंजूषा वाले मॉडल से बिल्कुल मेल नहीं खाता है, तथा हर द्रष्टा की सहज बुद्धि को चुनौती देता है या उसकी बुद्धि की तौहीन करता दिखाई देता है। आखिर इस सबका राज़ क्या है? कोई भी साधु या विद्वान, इस विसंगति के बारे में संतोषजनक उत्तर क्यों नहीं दे पा रहा है? सबके दिमाग में समय-समय पर यह प्रश्न खटकता रहता है। सर्वज्ञों ने हमें समझाने के लिए कौनसी भाषा या शैली का प्रयोग किया है?

(र) यह ब्रह्माण्ड स्वरूप कितना आश्चर्यजनक लगता है। लेकिन इसके उपरांत जब हम हमारे आस-पास के भूगोल को, या जब हबल टेलीस्कोप से ब्रह्माण्ड की निहारिकाओं को आपस में निगलते या इधर-उधर बिखरे सुपर नोवा या नेबुला स्टार को देखते हैं, तो समझ में नहीं आता है कि ब्रह्माण्ड उस प्रदर्शन-मंजूषा में सजाये आगमिक मॉडल से इतना भिन्न क्यों है। यहाँ असंख्य निहारिकाएँ इधर-उधर बिना क्रम से बिखरी हुई हैं, तथा आकार एवं बनावट में एक दूसरे से कितनी भिन्न-भिन्न हैं। सबकी उम्र भी एक सी नहीं है। कोई मिट रही है तो कोई नया जन्म ले रही है।

3(अ) तब अहम् प्रश्न उठता है कि इतने सारे तारा पुंजों को, ब्रह्माण्डीय वस्तुओं को किस परिप्रेक्ष्य में और किस प्रकार समझा जाये? क्यों अभी तक हमारी समझ में कोई तरीका नहीं आया?

(ब) इसी प्रकार पृथ्वी के मानचित्र पर भी जिज्ञासाएँ उठती हैं। प्राचीन इतिहास पर नज़र डालने से यह धारणा बनती है कि ईसा पूर्व के लोगों को हमारे भौगोलिक मानचित्रों की अच्छी जानकारी थी। कम से कम पूर्वार्ध में अवस्थित द्वीपों और महाद्वीपों के टेढ़े-मेढ़े किनारों, तटीय प्रदेशों के विस्तार, लम्बाई, दूरी आदि के बारे में काफी सही ज्ञान था। वे एक देश से दूसरे देशों की लम्बी यात्राओं पर, समुद्री व जमीनी मार्गों से जाते रहते थे। ये विश्व के मानचित्र ग्रीक, रोम, चीन, भारत आदि देशों में उपलब्ध थे। भारत से लोग रोमक देश, लंकापुर, यमकोटी पुरा और सिद्धपुर तक गये, ऐसा प्रमाण मिलता है। आर्यभट्ट का ज्योतिष शास्त्र तो प्रसिद्ध था ही (तीसरी चौथी शताब्दी), लेकिन भास्कराचार्य द्वारा पृथ्वी के दूसरी ओर के प्रदेशों, जैसे रोमक पुर के आगे, दक्षिणार्ध में स्थित सिद्धपुर (दक्षिण अमेरिका) के दिन-रात का वर्णन, स्पष्टतः पृथ्वी के भूगोल का सही ज्ञान प्रमाणित करता है। (चित्र-3)। लेकिन तत्कालीन भौगोलिक नक्शों में, पृथ्वी का कोई भी प्रदेश या खण्ड, गणितीय वलय या गोल रूप में नहीं मिलता है। फिर जैन-मध्यलोक को, उस समय क्यों वलयाकर पिंडों के रूप में दर्शाया गया था। क्यों भरत क्षेत्र माने जाने वाले पिंड के तटीय प्रदेश प्राकृतिक रूप से कटे-छटे या लम्बाकार आदि रूप में, नहीं दर्शाये गये? एक कलाकार की तरह सजाकर रखने का क्या मकसद था? प्रश्न उठता है कि अधोलोक और ऊर्ध्वलोक भी

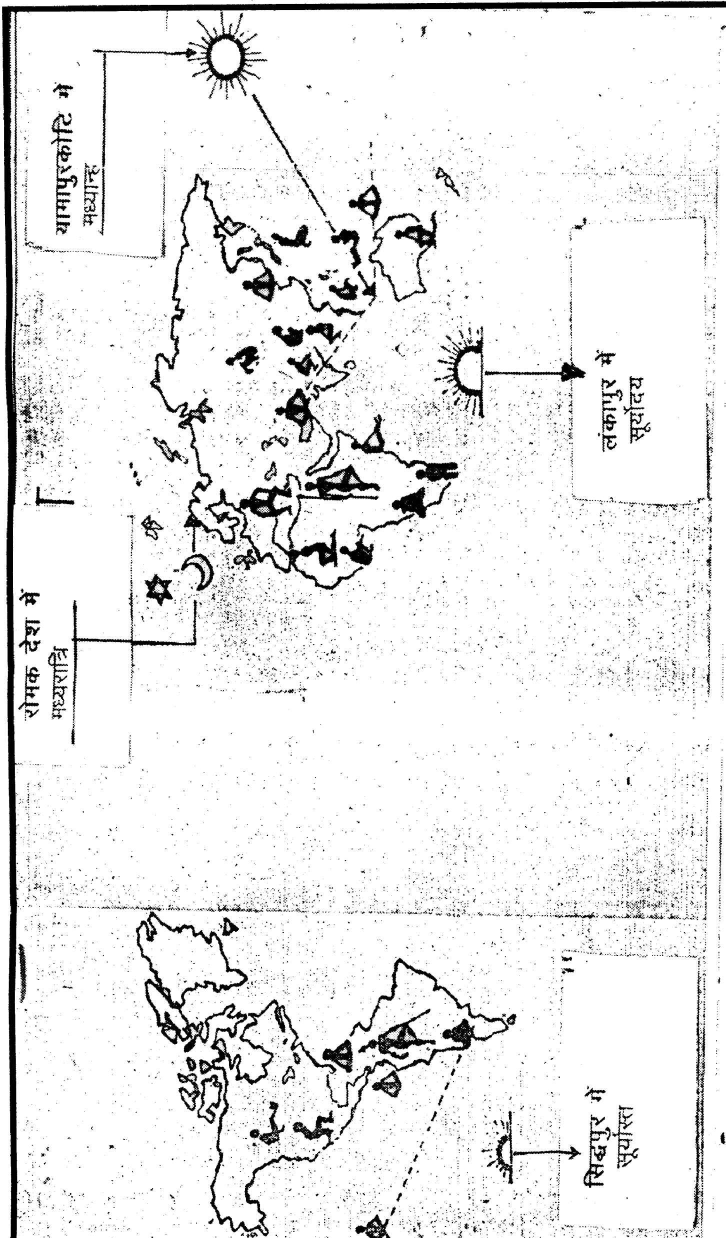

भास्कराचार्य (1134AD)द्वारा बताये गये विश्व के स्थान और समय मंडल
चित्र-3

क्या मध्यलोक की तरह सजाकर रखे गये हैं या वे वास्तव में ऊपर-नीचे इसी प्रकार बने हुए हैं।

(स) इन संभी प्रश्नों का सही उत्तर ढूंढने के पहले आइये, हम फिर से एक

अन्य परिकल्पना करने का प्रयास करते हैं।

हम जरा हटकर, एक मूलभूत प्रश्न पर गौर करते हैं। यदि हमसे पूछा जाय कि ब्रह्माण्ड कैसा है? क्या ब्रह्माण्ड में कोई सभ्यताएँ या जीव, पृथ्वी के अलावा भी, कहीं उपलब्ध हैं? यदि हैं तो ये किन-किन जगहों पर उपलब्ध हैं? तो हम क्या जवाब देगें? चूँकि हमारी जानकारी बहुत ही शिशु अवस्था में है, अतः एक सम्भावित उत्तर है कि ब्रह्माण्ड में असंख्य तारा पिंड आदि हैं। कई जगह त्रसकाय या मनुष्य हो सकते हैं। अनेक प्रकार के जीव, हमसे भिन्न प्रकार के भी हो सकते हैं। लेकिन यह सब केवल अंधेरी कोठरी में काली बिल्ली के समान, हमारी कल्पना मात्र रह जाती है। ये हमारे अंदाज पर निर्भर है, क्योंकि हम इस महाविशाल ब्रह्माण्ड के बारे में बहुत ही कम जानते हैं।

(द) यदि किसी सर्वज्ञ से यह प्रश्न पूछा जाता कि ब्रह्माण्ड में कौन-कौन सी जगह मनुष्य जैसे प्राणी विचरते हैं, तो उनका जवाब क्या होता? उत्तर महामुश्किल है। सब कुछ जानते और देखते हुए भी, वे अल्पज्ञों को कैसे समझायें? क्योंकि इस विशाल ब्रह्माण्ड में असंख्य तारे हैं तथा उन सबका नामकरण करके, अल्पज्ञों को बोधगम्य नहीं कराया जा सकता है। जरा सोचिये कि किस विध असंख्य तारों की भीड़ में, वैसे तारों की, नामकरण द्वारा पहचान कराई जाय (जिनके कि परिवार में मनुष्य जैसे जीव बसते हों) कि फलां तारे के फलां ग्रह पर वैसे प्राणी उपलब्ध हैं। ऐसे ग्रह उपग्रह आपस में भी एक दूसरे से कितने दूर हैं तथा सापेक्षतः कहाँ-कहाँ अवस्थित हैं, यह प्रचलित भौगोलिक मानचित्र की भाषा द्वारा समझाना असम्भव है। यहाँ तक कि आधुनिक संसाधनों से लैस वैज्ञानिकों द्वारा भी इस प्रचलित भाषा में संपूर्ण उत्तर नहीं दिया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, मान लीजिये कि 10,000 तारों के परिवार में मनुष्य निवास करते हों। लेकिन ये मानव ग्रह, पूरे ब्रह्माण्ड में यत्र-तत्र, प्रकीर्णक रूप में बिखरे हों तो इस तारा-पुंज की विशाल भीड़ में, कैसे उनके अवस्थान को तीन आयामी दूरियों से, तय रूप से निरूपित किया जाये? इस चुनौती का आज भी कोई समाधान नहीं है।

लेकिन सर्वज्ञों ने शायद एक अति आसान, अनूठा और गणितीय तरीका निकाल कर साधारण आदमी यानी अल्पज्ञों को जरूर समझा ही दिया

होगा।

हो सकता है वह तरीका कालांतर में विस्मृत हो गया हो या लुप्त हो गया हो? या वह शैली उपलब्ध हो, लेकिन आज हम उसे समझ नहीं पा रहे हैं। तब आवश्यकता है उस शैली के कूट (code) को खोलने की- decode करने की।

4. एक अनूठी व विशिष्ट लिपि द्वारा, उन्होंने हम जैसे अल्पज्ञों, अल्प शक्ति वालों को या अपात्रों को भी ब्रह्माण्ड के मानचित्र को इस प्रकार बोधगम्य कराया होगा कि हम सुगमता से जान सकें कि-

1. ब्रह्माण्ड का विस्तार कितना है?
2. कितनी जगह पर देवता और नारकीय लोग रहते हैं, वे किस प्रकार रहते हैं?
3. कितनी-कितनी जगह मनुष्य जैसे लोग रहते हैं? उनका आध्यात्मिक विकास कैसा है? कितनी -कितनी जगह पर मनुष्य कर्मभूमि पर और कितनी जगह पर भोगभूमि पर रहते हैं?
4. ब्रह्माण्ड के कितने क्षेत्र में अभी भी केवली या तीर्थंकर विचरते हैं?
5. हमारी जैसी और भी पृथ्वियाँ हैं, जहाँ अवसर्पिणी का दुःखम आरा चल रहा है?
6. कितने क्षेत्र में त्रसकाय के जीव पाये जाते हैं तथा
7. देवों और नारकियों की पृथ्वियाँ कितनी हैं तथा कैसी हैं?

जिस भाषा या लिपि में उन्होंने समझाया था, उस शैली को हम भूल गये हों। इतिहास बताता है कि गुरु-शिष्य की मौखिक ज्ञान-परम्परा में कई महत्त्वपूर्ण कड़ियाँ विस्मृत हो गई या कालांतर में लुप्त हो गई हैं। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड का जो मानचित्र उपलब्ध है उसकी विशिष्ट लिपि या भाषा हम विस्मृत कर चुके हैं। वलयाकार या धारी-पट्टी वाली पृथ्वियों का, इस मानचित्र में क्या मतलब है, या क्या राज है? क्यों वे आज के भौगोलिक मानचित्र से विसंगति लिये हुए हैं? क्यों इस ब्रह्माण्ड को सजाकर, एक अलंकार के रूप में प्रदर्शन-मंजूषा में रखने लायक, मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया है?

यह कौनसी शैली या लिपि में है, जिससे कि उपर्युक्त दिये सभी प्रश्नों का हल तो मिल जाता है, लेकिन भूगोल के मानचित्र से संगति नहीं बैठती है?

5. इस समस्या के समाधान का प्रयास करते हुए, हम ब्रह्माण्ड के वर्गीकरण की एक अन्य परिकल्पना करते हैं।

विज्ञान के अनुसार समूचे ब्रह्माण्ड में जो पदार्थ उपलब्ध हैं, वे अपनी निम्नांकित अवस्थाओं में मिलते हैं:-

1. **ठोस** अवस्था में, जैसे पृथ्वी या चन्द्रमा के धरातल का भूपृष्ठ।
2. **तरल** अवस्था में, जैसे पृथ्वी की पपड़ी के ऊपर या भीतर जल।
3. **गैस** अवस्था में, जैसे पृथ्वी के ऊपर का वायु मंडल।
4. **प्लाजमा** अवस्था में, जैसे सूर्य के धरातल पर या वायु मंडल के ऊपर आयनों का वलय।
5. **बोस**-आइन्स्टीन संघनित (condensate) अवस्था में। तारों की सतह में होने की सम्भावना।
6. **फरमियोन**-डेरेक संघनित अवस्था में।
7. सबसे उच्च पारदर्शी **'स्फटिक'** अवस्था में। विशिष्ट तारों की सतह पर।

ये सभी अवस्थाएँ दबाव, तापक्रम व विद्युत चुम्बकीय बल से प्रभावित होती हैं।

जैन विज्ञान इन अवस्थाओं को नकारता नहीं है। नाम अलग-अलग हो सकते हैं। इसके अलावा पदार्थ, परमाणु तथा ऊर्जा अवस्था में भी मिलता है। पदार्थ की अवस्था सूर्य के धरातल पर पाये जाने वाली प्लाज्मा या आण्विक की गहराई में ऐसी गैस व फिर नीचे ठोस अवस्था हो सकती है, जो प्लाजमा के ईंधन की आपूर्ति-शृंखला में भाग लेते हैं। उस अवस्था के नीचे, बहुत गहराई के बाद, अत्यधिक दबाव, व कम तापक्रम वाली अवस्था का होना भी सम्भव है। ये सब अवस्थाएँ अन्य तारा मंडलों में भी होंगी। इसके अलावा अन्य कुछ तारा मंडलों में 'संघनित' अवस्थाएँ भी उपलब्ध होंगी।

6. परिकल्पना:-

1. यदि ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण पदार्थ को उपर्युक्त 7 अवस्थाओं में अलग-अलग छांट करके, एक प्रदर्शन-मंजूषा में इस प्रकार रखें कि प्रथम 3 अवस्थाओं वाला पिंड एक जगह पर आ जायें। उसके ऊपर चौथी अवस्था वाला प्लाज्मा पिंड, फिर उसके बाद एक के ऊपर एक पाँचवी, छठी और सातवीं अवस्था वाला पिंड रखें, तो उससे एक प्रकार का पिंड-आकार बनेगा, जो पदार्थ की हर अवस्था के माप के अनुसार उस जगह आकार लेगा। अब सबसे नीचे पिंड (A) को भी इसके भिन्न-भिन्न उप-समूह में छांटते हैं। पहले ऐसे ब्रह्माण्डीय पिंड या उनके धरातल को लें, जो साधारण ताप और

दबाव (शायद 0-2 at(bar), -100^0 से 400^0 K) पर उपलबध हो। ये स्वयं ताप पैदा नहीं करते हैं। इनको वहाँ सबके नीचे छोड़कर, A के बाकी बचे पदार्थों को अलग-अलग करते हैं। इनमें वैसे पदार्थ हैं, जो पृथ्वी के धरातल पर नहीं पाये जाते हैं यानी ये जमीन के काफी भीतर गहराई में है। इनके ऊपर ठोस या तरल पदार्थों का काफी उच्च दबाव रहता है, तथा वे काफी उच्च तापक्रम पर भी हो सकते हैं। यहाँ तक कि कुछ पदार्थ तो अपने क्रान्तिक दबाव व तापक्रम के कारण अवस्था-परिवर्तन बिन्दु पर रहते हैं। इन सबका वर्गीकरण निम्न तालिका के रूप में दिखाया जा सकता है। ऐसे पदार्थ भी ब्रह्माण्ड में कई ग्रहों व तारा मंडलों में उपलब्ध होंगे।

ब्रह्माण्ड में उपलब्ध पदार्थों की विभिन्न अवस्थाएँ एवं जीवों की संभावनाएँ

(A) बाहरी धरातल-

(a) अवस्था का वर्गीकरण-

	उपलब्धता	जीवों की संभावना	पदार्थों की अवस्था (Phase)	पदार्थों पर दबाव	पदार्थों का तापक्रम	Remark
A1.	हवा और पानी मिलते हैं।	त्रस, मनुष्य या केवल त्रस (औदारिक शरीर वाले) तथा कुछ वैक्रिय शरीर वाले देवता	'पृथ्वी' ठोस, तरल, गैस	साधारण सा दबाव (हवा, पानी व ठोस का)	ताप का बाह्य स्रोत।-200^0 K to400^0 K तक तापक्रम	
A 2.	हवा पानी नहीं है	नहीं हैं।	-do-	-do-	-do-	
A 3.	हवा पानी मिलते हैं	नहीं हैं।	जमे हुए पानी के ऊपर जमी हुई गैस	साधारण कॉलम का दबाव	गहरा निम्न तापक्रम- 270^0K तक	
B 1.	**जमीन के भीतर का धरातल** या तो हवा, पानी नहीं है। या फिर अत्यधिक दबाव में हो सकते हैं।	वैक्रिय शरीर वाले (त्रसनाली के भीतर)	ठोस, तरल और गैस अवस्था ('पृथ्वी' कहलाती है।)	ठोस या तरल की कॉलम का उच्च दबाव/भार	उच्च या निम्न तापक्रम (एक क्रिटिकल मात्रा तक)	
B 2.	-do-	त्रसनाली के बाहर कुछ भी नहीं	-do-	-do-	-do-	
C 1.	**आण्विक पदार्थ** (धरातल पर), हवा पानी नहीं।	वैक्रिय शरीर (त्रसनाली के अन्दर)	प्लाज्मा की अवस्था (पदार्थ की चौथी अवस्था)	बहुत गहराई तक उच्च दबाव (विकिरण दबाव भी)	अति उच्च तापक्रम, (आंतरिक गर्मी के कारण)	आण्विक क्रियाओं के कारण ऊर्जा और कणों का विकिरण
C 2.	नहीं	-do-	5^{th}, 6^{th} & 7^{th} अवस्था (1) बोस-आइन्सटीन संघनित (Bose-Enstein condnt),	साधारण से उच्च	साधारण ठंडक से उच्च ठंडा	

	उपलब्धता	जीवों की संभावना	पदार्थों की अवस्था (Phase)	पदार्थों पर दबाव	पदार्थों का तापक्रम	Remark
A1.	हवा और पानी मिलते हैं।	त्रस, मनुष्य या केवल त्रस (औदारिक शरीर वाले) तथा कुछ वैक्रिय शरीर वाले देवता	'पृथ्वी' ठोस, तरल, गैस	साधारण सा दबाव (हवा, पानी व ठोस का)	ताप का बाह्य स्रोत।-200° K to400° K तक तापक्रम	

2. पदार्थ के मोटे तौर पर उपर्युक्त तीन प्रकार के वर्गों से-यानी धरातलीय ठोस पदार्थ (A), भूमिगत पदार्थ (B) और आकाश में अवस्थित चौथी से सातवीं अवस्था वाले पदार्थ (C) से, स्पष्टतः तीन लोक समझे जा सकते हैं। इन तीनों अवस्थाओं के पदार्थ में, जहाँ-जहाँ त्रस जीव (mobile living-beings) पाये जाते हैं, उनको एक जगह, एक ग्रुप बनाकर सजा सकते हैं।
3. इसमें यह ध्यान रखना है कि हमने सभी ठोस या तरल रूप में पाये जाने वाले पिंडों के धरातलों को एक ग्रुप में रखा है। ये धरातल कुछ किलोमीटर से लेकर कुछ हजार किलोमीटर मोटे या गहराई वाले हैं। (A)
4. इन्हीं पिंडों के अन्दर, जो पदार्थ ठोस या तरल अवस्था में अत्यधिक दबाव व तापक्रम पर पाये जाते हैं, उनको भूमिगत पदार्थों के लोक में रखा गया है। (B) ये पदार्थ ब्रह्माण्ड में किसी भी ग्रह, उपग्रह या तारे के भीतर अधिक गहराई में पाये जा सकते हैं। इनका अपना कोई प्रकाश या ताप उत्सर्जन नहीं होता है।
5. तीसरी श्रेणी के जो पदार्थ हैं (C), वे सूर्य और तारा मण्डल के धरातल पर उपलब्ध होते हैं। इन पदार्थों की अवस्था चौथी से लगाकर सातवीं तक हो सकती है। इनका भी अलग-अलग वर्गों के अनुसार ग्रुप बनाकर, एक के ऊपर एक रखकर उनको व्यवस्थित रूप से सजा दिया गया है।

इस प्रकार समस्त पदार्थों (रूपी अजीव पदार्थ) को, उनकी विभिन्न अवस्थाओं, श्रेणियों या वर्गों के अनुसार रखकर **प्रदर्शन-मंजूषा** में सजा दिया गया है।

ब्रह्माण्ड में उपलब्ध समस्त पदार्थों को उपर्युक्त श्रेणियों (A,B,C,) में विभक्त करने के पश्चात् हर श्रेणी वाले पदार्थ को एक साथ रखकर इकट्ठा कर दिया जाय तो हरेक श्रेणी का **आकार** उसके कुल आयतन तथा धरातल के अनुरूप ही होगा।

-40, कमानी सेण्टर, 2nd Floor, *बिस्टुपुर, जमशेदपुर*

English-Section

Ṛṣibhāṣita: A Prākṛta Work of Universal Values (2)

Prof. Sagarmal Jain

We are living all the times in tensions and deprived of even a sound sleep. The people and nations in scientific technology more advanced and materially more affluent, having all the amenities of life are more in the grip of mental tensions. Medical and psychological reports of advanced nations confirm this fact. Tendency to consume alcoholic and sedative drugs is increasing day by day in these nations, which shows that we have lost our mental peace at the cost of this material advancement. Not only this, we have also been deprived of our natural way of living, due to this scientific advancement. S. Bothara maintains ' What unfortunately happened is that the intoxication of ambition and success over nature has made us forget even the natural discipline which we inherited from animal Kingdom'. 'We have not only denied accepting social and religious check-post but we have also denied natural check-post. Now our life has only accelerator, no brake. Our ambitions and desires have no limits, they always remain unfulfilled and these unfulfilled desires create frustrations or resentments which are the cause of our mental tensions. Thus we are deprived of mental peace and happiness. In this regard Ṛṣibhāṣita says 'Be alert. Never muffle up religious practices. Else sin and desire shall deprive you of your benefic deeds and lead you to a tragic destiny. Be vigilant, O man. One inwardly alert is still conscious while asleep. Indolent is never happy while the vigilant is ever happy. Exploration of desire is painful. Its satiation is a day-dream. Its unfulfilment is again painful. True happiness indeed lies in desirelessness. Libidinous

mighty princes with immense resources at the command ultimately met a compulsive doom. The mighty beings that have mastered their senses and freed themselves of the demon of desire are salts of earth. Glory is to them. Such pious beings surmount the ordinarily insurmountable oceanic world in a jiffy. Indulgent beings have only one destiny-that of in terminally plodding on the odyssey of mundane sufferings.' (35/20 and 22 and 28/9, 10, 18, 19).

Secondly, owing to tremendous advancement in science and technology, we have light legged means of transportation; physical distances have no bars to meet the people of different nations, cultures and religions. Nowadays world is shrinking, but unfortunately distance of our hearts is increasing day by day unluckily and disdainfully. Instead of developing mutual love, faith and co-operation, we are spreading hatred and hostility, while Ṛṣibhāṣita always maintains that the advancement in our scientific knowledge has removed our religious superstitions and false dogmas, but unfortunately side by side it has also shakened our mutual faith and faith in higher values of life. The old social and spiritul values of life, acting as binding force on humanity and based on our religious beliefs has been made irrelevant by the scientific and logical out look. Today, we strongly rely on the atomic power as our true rescuer which is in no way our true rescuer but destroyer. We know much more about atom and atomic power than the values needed for a peaceful and meaningful life. Ṛṣibhāṣita maintains that it is the concept of non-violence, which can be a true rescuer of human race. In Ṛṣibhāṣita it is said that 'Living beings should offer food to other living beings to grant them a secure existence and freedom from misery. As we experience distress due to injury, burn, irritation and pain, so do other organisms. All beings dislike death and injury. They cherish kindness. keeping this in view, the aspirant should shun violence and

killing. Non-violence consoles and reassures every body. Non-violence is like the immanent God in all beings.' (45/ 17-20)

The advancement in all the walks of life and knowledge could not sublimate our animal nature, the animal instincts and passions lying with in us are still more dominating our individual and social behavior. Owing to scientific advancement our success has made us greedier. We remain all the time greedy and self-centered. Science and technology provided us atomic weapons for our safety, but remain unable to provide a sense of security. Though these arms and weapons are considered as means of security, yet instead of giving security they generate fear and thus a sense of insecurity in the opposite party which causes a mad race of nuclear weapons.

Among the most burning problems, the word is facing today, religious fundamentalism and intolerance is the most crucial. Instead of developing mutual love, co-operation and faith, we are spreading hatred and hostility and thus ignoring the values of harmonious living and co-existence. The blind and mad race of nuclear weapons is a clear indication that the human race is proceeding towards its formidable funeral procession. Rabindranath Tagore rightly observed 'For man to come near to one another and yet to ignore the claims of humanity is the sure process of suicide. In the present circumstances, the only way-out left for the survival of mankind to develop a firm belief in mutual co-operation and co-existence. Religious harmony and fellowship of faiths is the first and foremost need of our age and Ṛṣibhāṣita propounds this religious harmony and fellowship of faith.

Undoubtedly, we belong to different faiths, religions and cultures, Our modes of worship as well as way of living also differ to some extent. There is also no denying the fact that our philosophical approaches and viewpoints are divergent,

but among these diversties there is a common thread of unity which binds all of us, and it is nothing except humanity. We all belong to the same human race: Unfortunately, at present, humanity as such is largely shoved into the background and differences of caste, colour and creed have become more important for us. To day what is awfully needed is religious tolerance and fellowship of faiths.

Ṛṣibhāṣita propounds various concepts of universal values, such as non-violence, mental peace mutual faith and co-operation, non-possessiveness, religious harmony and fellowship of the faiths. In its first chapter Nārada propounds four basic vows of universal values. He said that the aspirant should abstain from violence, false-hood steeling and attachment. He should have control over his sense organs. He should be free from all vices and should stay tranquil and disinterested in the worldly enjoyments. These universal values are repeatedly propounded in Ṛṣibhāṣita in its chapters seven, thirty one, thirty three etc. Thus Ṛṣibhāṣita firmly propounds three universal values of non-violence, tolerance and non attachment; which can solve the various problems of our present world.

I would like to conclude that Ṛṣibhāṣita is a valuable work not only of Jain tradition but also of the Indian tradition as a whole. The religious tolerance of Indian thought is truly reflected in this work. It also has a historical importance because it provides valuable and authentic information about many known and some unknown Ṛṣis and their preaching. It also contains the basic principles of universal values. Jain Acharyas have done a valuable service to Indian literature and culture by preserving this work. In fact this work is an undeniable proof of historical existence of many Indian Ṛṣis of the period between 10th and 5th century B.C.

-Prachya vidyapeeth, Shajapur (M.P.)

अध्यात्म

प्रमाद से अप्रमाद की ओर

श्री चाँदमल बाबेल

आत्मा अनादिकाल से इस संसार में परिभ्रमण कर रहा है। अनन्तकाल तक अव्यवहार राशि या निगोद में रहा। इसके बाद व्यवहार राशि या इतर निगोद में आया। अकाम निर्जरा करते-करते मनुष्य भव भी प्राप्त कर लिया, फिर भी परिभ्रमण निरन्तर चल रहा है। मनुष्यभव, उच्चकुल, पूर्ण इन्द्रियाँ, आर्य क्षेत्र, जैनधर्म, शास्त्र-श्रवण आदि का संयोग मिलने पर भी पूर्ण स्थिति को प्राप्त नहीं कर सका है।

संसार में परिभ्रमण के कारण की खोज की जाय तो आश्रव ही मुख्य कारण कहा जा सकता है। कषाय के कारण यह जीव के साथ कर्मों का बन्ध कराने वाला है। इसके द्वारा कार्मण वर्गणा के पुद्गल आत्मा के साथ चिपकते हैं। जिससे कर्मों का उपार्जन होता है वह आश्रव है। अतः जब तक कर्मों का आना नहीं रुकता तब तक आत्मा परिभ्रमण करता रहेगा।

आश्रव के इन्द्रिय, कषाय, अव्रत, क्रिया और योग- ये पाँच मूल भेद हैं। इनके क्रमशः पाँच, चार, पाँच, पच्चीस और तीन भेद होने से कुल संख्या बयालीस हो जाती है। दूसरी विवक्षा के अनुसार बीस भेद माने गये हैं। इनमें मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग - ये आश्रव के मुख्य द्वार हैं। इन पाँच द्वारों में से प्रमाद महाद्वार है, क्योंकि शेष आश्रव प्रमाद के कारण प्रकट रूप में आते हैं। वैसे प्रमाद का अर्थ आलस्य से लिया जाता है, किन्तु जैन-दर्शन में प्रमाद शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है-''**प्रकर्षेण माद्यन्त्यनेनेति प्रमादः**'' जिसके कारण जीव विशेष रूप से बेभान हो जाता है, हिताहित के विचार से शून्य बन जाता है तथा आत्म-स्वरूप में शिथिल हो जाता है, उसे प्रमाद कहते हैं। समय पर उचित कार्य न करना भी प्रमाद है, विषयों में निमग्न रहना भी प्रमाद है, धर्म कार्यों में आलस्य करना भी प्रमाद है। '**अलं कुसलस्स पमाएणं**' (आचारांग) अतः प्रमाद नहीं करने का संकेत किया गया है। अप्रमाद से मोक्ष और प्रमाद से भव-भ्रमण होता है। जीव का विष-भक्षण करना या अग्नि में प्रवेश करना ठीक हो सकता है, किन्तु प्रमाद करना किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। विष या अग्नि तो एक जन्म के प्राणों का नाश करती है,

किन्तु प्रमाद के आचरण से, अनेक जन्मों तक जन्म-मरण का दुःख उठाना पड़ता है।

प्रमाद के पाँच भेद इस प्रकार हैं- 1 मद्य, 2. विषय, 3. कषाय, 4. निद्रा और 5. विकथा। **एए पंच पमाया जीवं पाडेन्ति संसारे**- जीव को संसार-समुद्र में गिराने वाले, संसार में परिभ्रमण कराने वाले ये पाँच प्रमाद ही हैं।

1.मद्य प्रमाद- मदिरा आदि नशा उत्पन्न करने वाले पदार्थों का सेवन करना मद्यप्रमाद है। सात दुर्व्यसनों में मदिरापान को प्रमुख दुर्व्यसन गिनाया है। इससे अशुभ परिणामों की उत्पत्ति एवं शुभ परिणामों का नाश होता है। मदिरा पान से तेजस्विता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्मरण-शक्ति आदि का विनाश होता है। उच्च जाति के लोग भी चोरी-छिपे इसका सेवन करते हैं। यह भयंकर शोचनीय स्थिति है। अनर्थकारी स्थिति है।

विवेकी पुरुषों को मदिरा का तथा अन्य मादक पदार्थों का- गांजा, भांग, चरस आदि का सर्वथा त्याग करना चाहिये। उससे अनेक दोषों का पोषण होता है। उभयलोक विरुद्ध होने से वर्जनीय है। द्वारिका-नाश का कारण मदिरा पान ही बना था।

2. विषय प्रमाद- रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द रूप इन्द्रिय विषयों के सेवन को विषय प्रमाद कहते हैं। ये भाव प्राणों के नाशक हैं। एक इन्द्रिय के विषय में आसक्त हाथी, हिरण, मछली, पतंगा और भौंरा अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। जो पांचों इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्त हैं उनकी दुर्दशा का पार नहीं। जीव भोगों को भोगकर अभिलाषा की तृप्ति करना चाहता है, किन्तु भोगों से लालसा बढ़ती जाती है। **'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः'**।भोगी जीव भोगों को नहीं भोगता है, अपितु भोग ही उसे भोगते हैं। अतः विवेकशील प्राणी को भोगों से निवृत्ति लेनी चाहिये। ये विषय किंपाक फल की तरह रमणीय एवं लुभावने लगते हैं, परन्तु इनका परिणाम महाभय रूप है। जो विचारशील व्यक्ति विषयों की लालसा को अपनी मनोभूमि से उखाड़ फेंकता है वह निराकुल होकर सच्चे सुख का अनुभव करता है। वही अपूर्व तृप्ति का आस्वादन करता है। वही लोक-परलोक में आनन्द का पात्र बनता है।

3. कषाय प्रमाद- क्रोध, मान, माया व लोभ के वशीभूत होकर विवेक न रहना कषाय प्रमाद है। यह संसार रूपी वृक्ष के मूल का सिंचन करता है। क्रोध की भयंकरता, दर्प (मान) का सर्प, माया की कुटिलता और लोभ का विस्तार

कर्म-बंधन के प्रधान कारण हैं जैसे दीपक बत्ती के द्वारा तेल को ग्रहण कर उसे ज्वाला के रूप में परिणत करता है। योग के निमित्त से कर्म-पुद्गलों का खिंचाव मात्र होता है। उनमें फल देने की शक्ति कषाय पर अवलम्बित है। अतः कषाय को ही कर्मों का मूल अथवा संसार का मूल कहा जाता है। **'कषायमुक्ति किल मुक्तिरेव'** कषायों से छुटकारा पाना ही मुक्ति है, मोक्ष है, निर्वाण है। क्रोध को क्षमा से, मान को मृदुता से, माया को सरलता से और लोभ को सन्तोष से जीतना चाहिए। कषाय आश्रव का महाद्वार है। इस महाद्वार को बन्द करना नितान्त आवश्यक है।

4. निद्रा प्रमाद– सोने की वह क्रिया जिसमें चेतना अव्यक्त हो जाती है- निद्रा कहलाती है। शरीर के लिये आवश्यक निद्रा के अतिरिक्त अनावश्यक रूप से निद्रा लेने से स्वाध्याय-साधना में रुकावट आती है। अतः जो साधक गफलत के कारण सोता रहता है वह संयम में पुरुषार्थ नहीं कर सकता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना को सम्पन्न करने हेतु निद्रा को त्यागना अनिवार्य है। यह आलस्य का रूप है। मुमुक्षुओं के लिए निद्रा-प्रमाद त्यागकर सजग, सतर्क एवं जागृत होकर ज्ञान, ध्यान, सामायिक-संवर, स्वाध्याय तथा आध्यात्मिक अनुष्ठानों में संलग्न होना हितकर है।

5. विकथा प्रमाद– अनावश्यक बातें करना विकथा प्रमाद है। जो बातें धार्मिक अनुष्ठानों में रुकावट करती हैं, उनका त्याग करना चाहिये। विकथा के चार भेद हैं-

1. **स्त्री-कथा**– स्त्री कथा राग, मोह एवं विषय की उत्पत्ति का कारण बनती है।
2. **भात कथा**– भोजन संबंधी चर्चा से जिह्वा की लोलुपता बढ़ती है। पुद्गलों का स्वभाव मानकर समत्व भाव आना चाहिये।
3. **देश कथा**– विविध देशों में प्रचलित रीति-रिवाजों की चर्चा करने या राजनैतिक बातें कहने से ज्ञान-ध्यान में, स्वाध्याय में बाधा आती है, जीवन में दोषों की अभिवृद्धि की संभावना बनती है।
4. **राजकथा**– राज्य या राजा संबंधी चर्चा करने से अनेक प्रकार के अनर्थ हो सकते हैं। इससे समय बर्बाद होता है, गुप्तचरों द्वारा गलत विवरण पहुँचता है और कभी-कभी विवाद भी उत्पन्न हो जाता है।

अतः चारों प्रकार की कथा साधना एवं जीवन पद्धति के प्रतिकूल है।

इनसे हिंसा, असत्य, विकार, विकृतियों में अभिवृद्धि होती है, अतः धर्म के क्षेत्र में इनको त्याज्य माना गया है, क्योंकि यहां तो आत्म-शांति, आत्म-शुद्धि का लक्ष्य होता है।

उपर्युक्त प्रमादों के त्याग से ही मोक्ष प्राप्ति होती है। अप्रमत्तता से मोक्ष-मार्ग के पुरुषार्थ में शिथिलता नहीं आती है। प्रवचन सारोद्धार की टीका में प्रमाद के कुछ कारण बताये हैं-

1. **अज्ञान-** मूढ़ता या ज्ञान से अनभिज्ञता।
2. **संशय-** शंकाशीलता।
3. **मिथ्याज्ञान-** सम्यक्त्व का अभाव।
4. **राग-** आसक्ति, मोह आदि।
5. **द्वेष-** प्रतिकूल होना या इच्छानुकूल न होना।
6. **मतिभ्रंश-** विस्मरणशीलता या स्मृति न रहना।
7. **धर्म में अनादर-** धर्मानुष्ठानों को बेगार रूप से करना, अर्हन्त धर्म को उचित रूप से न पालना आदि।
8. **योगों का दुष्प्रणिधान-** मन, वचन, काया को अशुभ की ओर लगाना। ये सभी कर्मबन्ध के कारण हैं, अतः इनका सावधानीपूर्वक परिहार करना चाहिए।

निम्नांकित उपायों से प्रमाद से बचा जा सकता है अतः इन्हें अपनाना चाहिए-

1. अपनी प्रतिज्ञा ध्यान में रखें, उसके प्रति सजग रहें।
2. गुणों के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखें तथा उनको आत्मसात् करें।
3. प्रतिपक्ष के प्रति उपेक्षा भाव रखें- जैसे अहिंसा का प्रतिपक्ष हिंसा है तो उससे घृणा या उपेक्षा-भाव रखें।
4. अपनी परिणति की सम्यक् आलोचना करें।
5. तीर्थंकर भगवान की भक्ति करें अर्थात् उनके गुणों का स्मरण करें तथा उनकी आज्ञा का पालन करें।
6. उत्तम साधुओं की सेवा (सत्संग) करें।
7. गुणों के प्रति उत्साह रखें व उत्तर गुणों में विशेषता लायें।

भगवान महावीर ने प्रमाद को त्याज्य बताकर अप्रमत्त जीवन जीने

का निर्देश दिया। प्रज्ञावान, पण्डित, संयमी, प्रबुद्ध कभी प्रमाद में विश्वास नहीं करता है। **'भारण्डपक्खीव चरेऽपमत्ते'** भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त होकर विचरे। उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को संबोधित करते हुए छत्तीस बार **'समयं गोयम मा पमायए'** वाक्य द्वारा क्षणमात्र का भी प्रमाद नहीं करने का संदेश दिया है। तन-धन-यौवन स्थिर नहीं है अतः मानव मात्र को सदैव जाग्रत रहने का संदेश दिया। इस स्वल्प जीवन में बुद्धिमान पुरुष को धर्मानुष्ठान करने में किंचित् मात्र भी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

मानव प्रमादवश असावधान होकर दुष्प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाता है जिससे कर्मों का बंध निरन्तर होता रहता है। दुष्प्रवृत्तियों का परिहार प्रायश्चित्त या प्रतिक्रमण से हो सकता है। इससे मानसिक तनाव कम हो जाता है। ऐसा करने से-

1. कालोकाल धर्माचरण करने में अभिवृद्धि होती है।
2. व्यक्ति हिंसा आदि पापों से दूर होता चला जाता है।
3. ज्ञान-ध्यान का विकास होता है।
4. आश्रव द्वार बंद हो जाते हैं तथा पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होती है।
5. प्रमाद में निरन्तर कमी आकर जीवन अप्रमत्त बन जाता है जो मोक्ष का मार्ग है।

मानव जीवन में ही मोक्ष-प्राप्ति संभव है तथा मानव का लक्ष्य भी मोक्ष प्राप्त करना है, अष्ट कर्मों का क्षय करना है, शाश्वत सुख प्राप्त करना है, किन्तु प्रमाद के कारण लक्ष्य प्राप्ति में बहुत बड़ी बाधा है, अतः लक्ष्य को विस्मृत नहीं करना चाहिए।

लक्ष्य से ओझल मत हो, कदम बढ़ाता चल।
मंजिल तेरी पद चूमेगी, आज नहीं तो कल।।

मानव यदि अप्रमत्त जीवन जीकर सम्यक् पुरुषार्थ में संलग्न हो जाता है तो मोक्ष की मंजिल देर-सवेर अवश्य प्राप्त कर सकता है। संकल्प की दृढ़ता, सम्यक् श्रद्धा, संवेग, ज्ञान, चारित्र की आराधना मोक्ष की प्राप्ति में सहायक है। ये सभी सहायक हैं जब प्रमाद का विसर्जन हो- अप्रमत्त जीवन हो।

-22 ए 3, कम्युनिटी हॉल के सामने, बापूनगर, भीलवाड़ा (राज.)

चिन्तन

चित्त की निर्मलता से तनाव-मुक्ति

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

भगवान महावीर से गौतम ने पूछा-"भगवन्! जीवन में जागरण की क्या महत्ता है? प्रमत्तावस्था जीवन के लिए क्यों हानिकारक है? आप बार-बार मुझसे प्रमाद मुक्त रहने के लिए क्यों कहते हैं?"

प्रभु महावीर बोले-"हे गौतम! तू क्षण मात्र भी प्रमाद मत कर, क्योंकि कालावधि बीत जाने पर जिस प्रकार वृक्ष का पका हुआ पान गिरकर मिट्टी में मिल जाता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन एक न एक दिन अवश्य समाप्त हो जाता है। कुश की नोंक पर स्थित ओस बिन्दु की अवधि जैसे थोड़ी होती है वैसे ही मनुष्य-जीवन की गति है। तेरा शरीर जीर्ण हो रहा है, केश श्वेत हो रहे हैं और पूर्ववर्ती बल भी क्षीण हो रहा है। तू महान् संसार-सागर को तैर गया है। अब तट के निकट पहुँचकर क्यों खड़ा है? उस पार जाने के लिए जल्दी कर।"

वास्तव में जो प्रज्ञावान और समताधारक होते हैं, वे अपनी साधना में किञ्चित् भी प्रमाद नहीं करते हैं। उनका हर क्षण जागरण के साथ बीतता है। जागरण ही व्यक्ति को समस्त दुःखों से दूर करता हुआ तनावों से मुक्ति दिला सकता है।

जागरूकता होने पर ही अनासक्ति दृढ़ होती है एवं अनासक्ति की भावना समता को जन्म देती है। समता जीवन को सन्तुलित बनाती हुई वीतरागता का मार्ग खोलती है। वीतरागता का मार्ग मोह-मूर्च्छा के तन्तुओं को काटकर व्यक्ति में सुख उत्पन्न करता है। बिना जागे तनावों से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। इसलिए अनासक्ति से अनुस्यूत समता यदि जीवन में प्रतिष्ठापित न हो पायी तो जीवन तनावों से कभी भी मुक्त नहीं हो सकेगा।

व्यक्ति की बाह्य और आंतरिक दृष्टि जब तक समता धारण नहीं करती तब तक चित्त निर्मल कैसे हो सकता है? निर्मल चित्त के अभाव में कोई भी प्राणी किसी भी प्रकार के बंधन से मुक्त नहीं हो सकता। बंधन जब

तक निर्बन्ध नहीं होंगे तब तक स्थायी सुख की प्रतीति असम्भव है। चित्त की निर्मलता के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य मूर्च्छा में न बहे। उसका प्रत्येक चरण प्रमाद से रहित, ज्ञान एवं विवेक के साथ हो। वह वीतराग की कल्पना को अपने मन में संजोए हुए अपनी जीवनचर्या को स्थिर करे। द्वादश अनुप्रेक्षाओं-भावनाओं के नित्य चिंतन से चित्त को निर्मल बनाया जा सकता है। ये अनुप्रेक्षाएँ व्यक्ति के भीतर समायी कुत्सित वृत्तियों का रेचन कराती हैं जिससे आंतरिक शक्तियाँ प्रबलतम रूप में प्रकट होती हैं। इन आंतरिक शक्तियों के एक बार प्रकट हो जाने पर जीवन में आच्छादित निराशाएँ आशाओं में परिणत हो जाती हैं। व्यक्ति में सहिष्णुता एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने का साहस पैदा हो जाता है। वह भय से अभय की ओर दृढ़तापूर्वक अपना कदम रखता है। समता उसी के जीवन में प्रवेश कर पाती है, जो सर्व प्रकार के भय से अपने को मुक्त रखता है। जैसा कि सूत्रकृतांग में कहा गया है-''सामाइयमाहु तस्स जं, जो अप्पाण भए ण दंसए।''

भय-मुक्ति के लिए मोह-ममता से निवृत्ति लेनी होती है। मोह-ममता के वशीभूत प्राणी प्रमादी होता है। प्रमादी सदा भयभीत रहता है। आचारांगसूत्र में यह स्पष्ट उल्लेख है कि प्रमत्त आत्मा को सभी ओर से भय रहता है जबकि अप्रमत्त को किसी का भी भय नहीं रहता है-

सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अपमत्तस्स नत्थि भयं।

ममता और भय ये दोनों ही तनावों को पैदा करते हैं। अतः तनावों से मुक्ति के लिए ममता और भय से मुक्त होकर समत्वपूर्ण जीवन जीना ही श्रेयस्कर है। आज के सन्दर्भ में गांधी जी की धारणा है कि ''अभय मोहरहित स्थिति की पराकाष्ठा है।''

काश! आज प्रत्येक मानव में यह स्थिति पैदा हो जाए तो जो आकुलताएँ, समस्याएँ मुँहबाए खड़ी हैं, वे समाप्त हो सकती हैं। तनावों के जंजालों से मुक्ति मिल सकती है।

卐 अहिंसा धर्म का वह व्यक्ति पालन नहीं कर सकता जो क्षमा नहीं रखता।

卐 जो विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोध को भी जीत लेते हैं।

-आचार्य श्री हस्ती

प्रासंगिक

मैत्री : जीवन का अमृत

डॉ. धर्मचन्द जैन

क्रोध जीवन का घातक है,
मान उन्माद का सूचक है।
माया मैत्री में बाधक है,
लोभ का दंश भयानक है।
मित्रों! मैत्री जीवन का अमृत है।।1।।

मैत्री में क्रोध का निकन्दन है,
मान पर सम्यक् नियन्त्रण हे।
माया की न कोई जकड़न है,
लोभ का पूर्ण पलायन है।
मित्रों! मैत्री जीवन का अमृत है।।2।।

जहाँ मैत्री है वहाँ क्षमाभाव है,
विनय आर्जव का पूर्ण प्रभाव है।
संतोष और उदारता का भाव है,
करुणा और दया का सद्भाव है।
मित्रों! मैत्री जीवन का अमृत है।।3।।

मैत्री आत्मीयता का विस्तार है,
ईर्ष्या-द्वेष का समूल विनाश है।
दानव का मानव में संविकास है,
शान्ति एवं प्रेम का सुखद अहसास है।
मित्रों! मैत्री जीवन का अमृत है।।4।।

मैत्री में कोई पराया नहीं,
कलह और वैर की छाया नहीं।
तानों और व्यंग्यों की भाषा नहीं,
भय, उद्वेग का साया नहीं।
मित्रों! मैत्री जीवन का अमृत है।।5।।

-3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर

जीवन-व्यवहार

करुणा और अनुकम्पा

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

तिसिदं बुभुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठूण जो दु दुहिदमणो।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अनुकम्पा।।

-पंचास्तिकाय, 137

प्यासे, भूखे अथवा दुःखी को देखकर जो मनुष्य स्वयं व्यथित होता हुआ उसके प्रति दया का व्यवहार करता है, वह उसकी अनुकम्पा है।

अनुकम्पा वहाँ होती है जहाँ करुणा होती है। करुणा और अनुकम्पा सहचारी हैं। दूसरों का दुःख दूर हो यह भाव करुणाभाव है। करुणा के साथ संवेदनशीलता का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

संवदेन गुण ही चेतना का प्रतीक है। प्राणी का जितना-जितना विकास होता जाता है, संवेदनशक्ति उतनी ही बढ़ती जाती है। इस संवेदनशक्ति का अधिक विकास होने पर प्राणी अपने से भिन्न व्यक्तियों में होने वाली संवेदना या वेदना का भी स्वयं संवेदन करने लगता है। जिससे दूसरों को होने वाले दुःख से वह करुणित व अनुकम्पित होने लगता है। उनकी वेदना को वह स्वयं संवेदन के रूप में अनुभव करता है और उस वेदना या दुःख को मिटाने का प्रयास करता है। पर-पीड़ा का संवेदन 'करुणा' या 'अनुकम्पा' है। पर-पीड़ा से करुणित व्यक्ति अपने दुःख से ऊपर उठ जाता है और अपनी सामर्थ्य का उपयोग दूसरों की सेवा में करता है। करुणा जितने ऊँचे स्तर की होगी, जितनी गहरी होगी, उतनी ही विभु होगी तथा चेतना उतनी ही ऊँचे स्तर की होगी, गहरी होगी व विभु होगी।

जो साधक पर-पीड़ा से संवेदनशील होते हैं,वे सहज ही अपनी सामर्थ्य व शक्ति का उपयोग प्राणिमात्र का दुःख दूर करने में करते हैं। करुणार्द्र व्यक्ति को संसार के सारे प्राणी भले लगते हैं, बड़े सुन्दर लगते हैं, बड़े प्यारे लगते हैं, जिससे उसका हृदय सौन्दर्य से भर जाता है। उसके लिए अपना दुःख कुछ भी शेष नहीं रहता। करुणावान् व्यक्ति को सभी अपने

लगते हैं, वह व्यक्ति भी सभी को अपना लगता है। यह आत्मीयभाव माधुर्य को प्रकट करता है। उसका माधुर्य, आत्मीयभाव सब प्राणियों के प्रति सदैव बना रहता है।

करुणा या अनुकम्पा का उद्गम-स्थल अन्तःकरण है। दूसरे के अन्तःकरण के अनुभव को अपनी अनुभूति बना लेना सहानुभूति है। जिस समय सहानुभूति या करुणाभाव होता है उस समय राग की, काम-वासना की लहरें उठना कम हो जाती हैं, मस्तिष्क का तनाव घट जाता है, अन्तःप्रवेश होता है, वृत्ति अन्तर्मुखी हो जाती है।

करुणा का प्रारम्भ निकटवर्ती एवं पंचेद्रिय आदि विकसित प्राणियों के प्रति उत्पन्न सहानुभूति से होता है। हम अपने निकटस्थ व परिचित व्यक्तियों के अन्तःकरण (हृदय) की दशा से परिचित होते हैं, अतः उन पर करुणा आ जाती है। जिससे हमारा सम्बन्ध व परिचय नहीं है, उनके हृदय की दशा से हम अपरिचित होते हैं, अतः उन पर करुणा नहीं आती है। जैसे-जैसे आत्मीयता का विकास होता जाता है, करुणा का क्षेत्र बढ़ता जाता है। फिर क्रमशः मनुष्य मात्र से, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि हिलते-चलते जीवों पर, वनस्पति आदि स्थावर जीवों पर भी करुणा आने लगती है और अन्त में प्राणिमात्र के प्रति करुणा का भाव जागृत हो जाता है।

करुणा और मोह में रात-दिन का अन्तर है। मोह में दूसरों से सुख पाने की इच्छा होती है। करुणा में दूसरों के दुःख से द्रवित होकर निजी सुख-सामग्री को समर्पित करने की भावना होती है। करुणा सब दुःखियों के प्रति समान होती है। उसमें जाति-पाँति, धनी-निर्धन, छोटा-बड़ा, स्वजन-परजन, अपनापन-परायापन का भेद नहीं होता है।

करुणा आत्म-विकास की ही प्रतीक है। करुणावान् दूसरों के लिए अपनी वस्तुओं का, तन-मन के सुखों का त्याग करता है, भोगी दूसरों से वस्तुओं व तन-मन के सुखों को पाने के लिए लालायित रहता है। वह रात-दिन इनकी भिक्षा माँगता रहता है। अतः भिखारी होता है। सेवक दाता है, वह सतत प्रसन्नता विकीर्ण करता रहता है।

जहाँ करुणा है वहाँ अनुकम्पा है। दुःखियों, पीड़ितों को देखकर जिसका हृदय प्रकम्पित नहीं होता, वह सहृदय न होकर निर्दय है। उसका

हृदय पत्थर-हृदय है। उसमें जड़ता है, संवेदनशीलता का अभाव है। संवेदनशीलता ही जीव का लक्षण है। जिसमें जितनी संवेदनशीलता की कमी है, उसमें उतनी ही जड़ता है। वह उतना ही अधिक अविकसित एवं निम्न स्तर का प्राणी है। संवेदनशीलता का विकास ही चेतना का विकास है। जिस प्राणी के हृदय में जितनी अधिक संवेदनशीलता है, उसके हृदय में उतनी ही अधिक अनुकम्पा होती है।

जैन धर्म का प्राचीन ग्रन्थ 'तत्त्वार्थ सूत्र' श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में स्वीकार्य एवं आदरणीय है। तत्त्वार्थ सूत्र में पहला ही सूत्र है:-

"सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।"

अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ये तीनों मिलकर मोक्ष के साधन हैं। सम्यग्दर्शन के पाँच लक्षण हैं, यथा-

उवसम संवेगो वि अ, निव्वेओ तह य होइ।
अणुकंपा अत्थिक्कं च एए, सम्मत्ते लक्खणा पंच।।

-प्रवचनसारोद्धार,द्वार 149 गाथा 940-955

उपशम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य (आस्था) ये सम्यक्त्व के पाँच लक्षण हैं।

तदेवं प्रशमसंवेगनिर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।। - सभाष्यतत्त्वार्थाधिगमसूत्र, 1.2

इस प्रकार प्रशम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य की अभिव्यक्ति के लक्षण वाला तथा तत्त्वार्थ श्रद्धानस्वरूप सम्यग्दर्शन होता है।

प्रशमसंवेगानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं सम्यक्त्वं। -धवला 1/1.1.4

प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य की अभिव्यक्ति ही जिसका लक्षण है उसको सम्यक्त्व कहते हैं।

सम्यक्त्वं कीदृशं भवति? पंचेति, पंचभिः शमसंवेगानिर्वेदानुकम्पास्तिक्यरूपैर्लक्षणैः लिंगैर्लक्षितमुपलक्षितं भवति। -धर्मसंग्रह, अधिकार-2

सम्यक्त्व कैसा होता है? वह पाँच प्रकार का होता है तथा शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य स्वरूप पाँच लक्षणों या लिंगों से पहचाना जाता है।

संवेगो चिअ उवसम निव्वेओ तह य होइ अणुकंपा अत्थिक्कं चिअ एए सम्मत्ते लक्खणा पंच।-बृहत्कल्पवृत्ति उ. 1, प्रकरण 2

संवेग, शम, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य इन पाँच लक्षणों से युक्त सम्यक्त्व होता है।

संवेगः प्रशमः स्थैर्यम् असंमूढत्वमस्मयः आस्तिक्यमनु-कम्पेति ज्ञेया सम्यक्त्वभावना। -महापुराण 29/97

संवेग, प्रशम, स्थिरता, अमूढ़ता, गर्व न करना, आस्तिक्य और अनुकम्पा ये सम्यक्त्व की सात भावनाएँ हैं।

टिप्पण– अनुकम्पा सम्यग्दर्शन के पाँच लक्षणों (शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा एवं आस्था) में से एक लक्षण है। सम्यग्दर्शन मुक्ति का मार्ग होने से धर्म है, अतः अनुकम्पा भी धर्म है।

सम्मत्तस्स पहाणो अणुकंपा वण्णिओ गुणो जम्हा।
पारद्धिरमणसीलो सम्मत्तविराहओ तम्हा ।।

-वसुनन्दि श्रावकाचार, 94

सम्यग्दर्शन का प्रधान गुण अनुकम्पा है।

अनुकम्पा दुःखितेषु कारुण्यम्–तत्त्वार्थभाष्य, सिद्धसेनगणिवृत्ति 6.13

दुःखी प्राणियों पर करुणा करना अनुकम्पा है।

अनुग्रहबुद्ध्यार्द्रीकृतचेतसः परपीडामात्मसंस्थामिव कुर्वतोऽ-नुकम्पनमनुकम्पा– तत्त्वार्थभाष्य, सिद्धसेनगणिवृत्ति, 6.13

उपकार बुद्धि से दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर दयालु व्यक्ति का अनुकम्पित होना अनुकम्पा है।

सर्वप्राणिषु मैत्री अनुकम्पा– तत्त्वार्थवार्तिक 1.2.30

समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव अनुकम्पा है।

अनुकम्पा दुःखितेषु अपक्षपातेन दुःखप्रहाणेच्छा।

-योगशास्त्र, स्वोपज्ञविवरण 2.15

बिना पक्षपात के दुःखियों का दुःख दूर करने की इच्छा अनुकम्पा है।

धर्मस्य परमं मूलमनुकंपां प्रचक्षते – उपासकाध्ययन 2.30

धर्म का परम मूल अनुकम्पा है।

सर्वेषु प्राणिषु चित्तस्य दयार्द्रत्वमनुकम्पा – तत्त्वार्थवृत्ति, श्रुतसागरसूरि 1.2

समस्त प्राणियों पर चित्त की दयालुता अनुकम्पा है।

-82/127, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (6)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

यश,

विचार तो ऐसा था कि मेरे पूर्वपत्र का जब तुम्हारी ओर से
प्रत्युत्तर आएगा तब उसे पढ़कर ही मैं तुम्हें लिखूँगा, पर
गत पत्र भेजने के बाद वर्षों पूर्व मैंने स्वयं अपने जीवन में
जो एक प्रसंग देखा और जाना है वह याद आ जाने पर
तुम्हारे प्रत्युत्तर का इन्तजार किए बिना वह प्रसंग तुम्हें
लिखने के लिए अभी मैंने कलम उठाई है।

उन दिनों में हम 'मुलुंड (बम्बई)' में थे।

केवल पुरुषों के लिए आयोजित रात्रि प्रवचनों में
प्रवचन देने की जिम्मेदारी अनंतोपकारी गुरुदेव
श्रीमद्विजयभुवनभानुसूरीश्वरजी महाराज ने मुझे सौंपी थी।

एक दिन प्रवचन में 'वैराग्य' का विषय केन्द्रस्थान पर था।

और उसमें बात यह चल रही थी कि,

"सच्चा मालिक वह है कि जो छोड़ सकता है।"

वरन्, जो अपने दुराग्रह, हठाग्रह अथवा पूर्वाग्रह को
पकड़े रखता है वह अपने विचार, वस्तु अथवा
मान्यता का गुलाम हो सकता है, मालिक तो हर्गिज नहीं।"

रात्रि के उस प्रवचन के बाद दूसरे अथवा तीसरे दिन दोपहर में
एक युवक मुझसे मिलने आया और उसने मुझे जो बात कही वह उसी के शब्दों में-

'महाराज साहब,

हम दो भाई हैं। मैं छोटा हूँ।
हम दोनों का विवाह हो चुका है।
कई वर्षों पूर्व माँ का स्वर्गवास हो चुका है।
पिताजी तीन साल पूर्व परलोक सिधार गए हैं।
मौत के बिछौने पर मेरी उपस्थिति में
पिताजी ने बड़े भैया को बुलाकर कहा था–''अभी हम जिस मकान में रहते हैं वह मकान मेरे नाम पर है, पर
मेरी बिदाई के बाद यह मकान तुम दोनों का है।
अर्थात् इस मकान के मालिक तुम अकेले नहीं,
तुम दोनों भाई हो।'
पिताजी के इस आदेश को बड़े भैया ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था।
कुछ समय बाद पिताजी चल बसे।
और करीब चार महीने बाद एक दिन
बड़े भैया ने मुझे बुलाकर स्पष्ट शब्दों में कह दिया–
''इस मकान पर मेरे सिवाय और किसी का कोई अधिकार नहीं है।''
''पर पिताजी ने...''
''मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। मेरी इच्छा होगी तब तक ही
तुम इस मकान में रह सकोगे।''
मैं भी किसी से कम नहीं था।
हार स्वीकार करने को तैयार नहीं था।
सत्य मेरे पक्ष में था, इसलिए मुझे किसी का डर नहीं था।
मैंने मित्रों की सलाह ली।
वकील की सलाह ली और बड़े भैया के विरुद्ध अदालत में मुकदमा दायर कर दिया।
बड़े भैया भी पीछे हटने के लिए तैयार नहीं थे।
उन्होंने अपनी तरफ से काबिल वकील नियुक्त किया।
पिछले तीन सालों से हम दोनों भाई कोर्ट में
एक–दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे थे।''

''लड़ रहे थे मतलब ?'' मैंने उससे बीच में पूछा।
''मैं उसी बात पर आ रहा हूँ।
समय की बर्बादी।
संपत्ति का दुर्व्यय और सबसे बड़ा नुकसान तो
बड़े भैया के साथ कातिल दुश्मनी!''
ऐसी स्थिति में दो दिन पूर्व रात में मैंने आपका प्रवचन सुना।
प्रवचन में कही गई मुख्य बात
''जो छोड़ सकता है वही मालिक है।'' मेरे दिलो-दिमाग पर छा गई।
प्रवचन पूर्ण होने के बाद घर जाते समय रास्ते में मैंने उस पर बहुत चिंतन किया।

''क्यों न मैं मकान पर मेरा अधिकार छोड़ दूँ?
वैसे भी अधिकार जमाने के प्रयासों में मैंने पाया ही क्या है?
पाया कुछ नहीं और गँवाया है बहुत कुछ।
क्यों न उस रास्ते से मैं वापस लौट आऊँ?''
यश,
''फिर?'' मेरे इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने कहा,
''फिर कुछ नहीं।''
मन में जाग्रत हुए इस विचार को आचरण में लाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया।
घर पहुँचा तब रात के ग्यारह बज चुके थे।
बड़े भैया अन्दर के कमरे में सो गए थे।
मेरी पत्नी जाग रही थी।
मैंने उसे अपने मन की बात कही।
''इस विचार को इसी क्षण अमल में ला दीजिए।'' उसने मुझे सलाह दी।
''पर बड़े भैया तो अभी सो गए हैं।''
''उन्हें जगाइए।''
''इसके बजाय हम कल सुबह बात करें तो?''
''नहीं! अभी कर लीजिए।''
''लेकिन क्यों?''

''कल सुबह आपका विचार बदल गया तो ?''
मुझे उसकी बात सही लगी।
बड़े भैया के कमरे के बंद दरवाजे पर मैंने दस्तक दी।
''कौन ?''
''वह तो मैं हूँ।''
''अभी क्या है ?''
''बड़े भैया, मुझे आपसे एक महत्त्वपूर्ण बात करनी है।''
''नालायक! तुम्हें रेल की पटरियाँ नहीं दिखती ?''
बड़े भैया के ऐसे हृदयभेदी शब्द सुनने के बावजूद भी मैंने स्वस्थता बनाए रखी।
''बड़े भैया, मुझे केवल पाँच ही मिनट का समय चाहिए।
एक बार दरवाजा खोलिए।
इसके बाद मैं कभी आपका समय नहीं बिगाड़ूँगा।''
और महाराज साहब,
मेरी मिन्नतभरी याचना सुनकर बड़े भैया ने दरवाजा खोला।
मैंने जैसे ही उनको देखा
मैं दौड़कर उनके गले लगकर रोने लगा।
''बड़े भैया! मुझे माफ कर दीजिए।
मुझे इस मकान में कोई हिस्सा नहीं चाहिए।
मुझे तो आपके हृदय में स्थान चाहिए।''
मेरे इन शब्दों को सुनकर बड़े भैया दंग रह गए।
आखिर तो हम दोनों भाई ही थे ना ?
खून के रिश्ते से बंधे हुए ही थे ना ?
मुझे रोता हुए देखकर वे भी रोने लगे।
उन्होंने मुझे प्रेम से गले लगा लिया।
मेरे सिर पर वात्सल्य से हाथ फेरते हुए बोले-
''मैंने तो पिताजी को दिये वचन के साथ विश्वासघात किया है।
यह पूरा मकान मैं तेरे नाम पर कर देना चाहता हूँ।''
महाराज साहब,

सुखद आश्चर्य तो तब हुआ जब
मैं एक तरफ बड़े भैया को गले लगाकर रो रहा था
यह देखकर दूसरी ओर मेरी पत्नी भी दौड़कर भाभी के गले लगकर रोने लगी।
"भाभी, हम दोनों नादान हैं।
आप हमें माफ कर दीजिए।"
क्या बताऊँ आपको?
एक ओर हम दोनों भाई रो रहे थे और
दूसरी ओर देवरानी-जेठानी दोनों रो रही थीं।
मेरी भाभी ने मेरी पत्नी को वात्सल्य से भीगो देने में कोई कमी न रखी।
समय रात के बारह बजे के अंधकार का था,
पर हम चारों की आँखों में से बह रहे पश्चात्ताप और प्रसन्नता के अश्रुओं को देखकर
कदाचित् कमरे की दीवार का प्रत्येक कण भी प्रसन्नता से रो पड़ा होगा।
महाराज साहब,
"छोड़ देने की ताकत" ऐसे भव्यतम वातावरण का सृजन कर सकती है
इसकी मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी, पर इतना तो अवश्य कहूँगा कि
दो सगे भाइयों के बीच निर्मित हो चुकी दुश्मनी की कातिल दीवार को
टूटते हुए देखने का सौभाग्य यदि आपको मिला होता तो
आप स्वयं भी हर्षावेश में रो पड़े होते।"

प्रेरक-निर्णय

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व मंत्री डॉ. पी.एम. कुम्भट एवं श्रीमती कुसुम कुम्भट के दाम्पत्य जीवन के 50 वर्ष पूर्ण हुए। इस अवसर पर कुम्भट परिवार ने कोई बड़ा आयोजन नहीं कर विभिन्न सेवा संस्थाओं को एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि भेज कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। डॉ. कुम्भट रत्नसंघ के अलावा स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर की अनेक सेवा-संस्थाओं में गत तीस वर्षों से अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

कविता

'शत-शत वन्दन, शत-शत नमन'

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

हे ज्ञानदीप आचार्यप्रवर!
हे ज्योतिरूप उपाध्यायप्रवर!
शत-शत वन्दन, शत-शत नमन।

प्रविष्ट हों मम मन-प्रांगण के ध्यान द्वार
किरण हार से नष्ट करो यह तिमिर जाल।

हे ज्ञानदीप आचार्यप्रवर!
हे ज्योतिरूप उपाध्यायप्रवर!
शत-शत वन्दन, शत-शत नमन।

भव-भव की पीड़ा लेकर
आया है यह मन द्वार तुम्हारे।
तुम ही हो सर्वदर्शी करुणानिधान
हर लो मन की पीड़ा का गहन भार।

हे ज्ञानदीप आचार्यप्रवर!
हे ज्योतिरूप उपाध्यायप्रवर!
शत-शत वन्दन, शत-शत नमन।

मम हृदयस्थल सूना है गुरुदेव
इक बार पदार्पण करो स्वयमेव।
जन्म-जन्म की प्यास बुझे तब
आत्मरूप परमात्म बने जब।

हे ज्ञानदीप आचार्यप्रवर!
हे ज्योतिरूप उपाध्यायप्रवर!
शत-शत वन्दन, शत-शत नमन।

-'हुकम', 5-ए/1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

प्रश्न मंच कार्यक्रम

संगठन

श्री पी.एम. चोरडिया

प्रश्न– संगठन का सामान्य अर्थ क्या है?

उत्तर– आपस में हिलमिल कर रहना, एकता बनाये रखना, आपस में हिम्मत एवं उत्साह बनाये रखना, एक दूसरे की रक्षा करना, प्राप्त साधनों का मिलकर उपभोग करना।

प्रश्न– संगठन की शक्ति क्या है?

उत्तर– संगठन परस्पर सौहार्द की भावना को मजबूत करता है। संगठन ही अस्तित्व है। हिमकणों का संगठन हिमालय, जलबूंदों का संगठन सागर, अनगिनत नक्षत्रों का संगठन ब्रह्माण्ड है। संगठन की शक्ति स्तुत्य है, अबाध है, अतुलनीय है।

प्रश्न– संगठन के विकास के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर– नेतृत्व पथदर्शन, आज्ञा, निर्देश– इन सबका समन्वय।

प्रश्न– एकता एवं संगठन के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर– एकता एवं संगठन के धरातल पर खड़े रहने हेतु यह आवश्यक है कि हम समानताओं को, अनेकता में एकता को सामने लाएँ, उनकी विवेचना एवं व्याख्या करें। जब हम समानताओं की चर्चा करते हैं तो हमारे दिलों में आत्मीयता का भाव जगता है और सहज ही हम निकटता की मधुर अनुभूति करने लगते हैं। हमारी एकता की कड़िया जुड़ने लगती हैं।

प्रश्न– सामाजिक जीवन में अपनी पहचान एवं अस्तित्व को बनाये रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर– व्यक्तिगत जीवन में धर्म उतारें और सामाजिक जीवन में हम संगठित हों। ये दो बातें पृथक्-पृथक् न होकर एक ही हैं; क्योंकि जो विघटनवादी होगा वह धर्मात्मा नहीं होगा और धर्मात्मा विघटनवादी नहीं हो सकता।

प्रश्न– संगठन का मूल्य कब है?

उत्तर– संगठन का मूल्य तभी है, जब व्यक्तिगत स्वार्थों का विसर्जन हो। समाज में व्यापक दृष्टिकोण का विकास होने पर ही संगठन सम्भव है।

प्रश्न– **"सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।**
तेजस्वि नाऽवधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥"–वेद
इसका भावार्थ कीजिए।

उत्तर– हम एक दूसरे की रक्षा करें। हम प्राप्त साधनों का साथ–साथ उपभोग करें। हम साथ–साथ पराक्रम करें, हमारा अध्ययन तेजस्वी हो, हम परस्पर द्वेष न करें।

प्रश्न– 'बिखरे हजारों तिनकों को हाथी रौंद डालता है। वहीं हजारों तिनके मिलकर रस्सी बन कर हाथी को अपने वश में कर लेते हैं।" उपर्युक्त उद्गार किसने प्रकट किए?

उत्तर– चाणक्य ने।

प्रश्न– 'अगर हममें शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जाएँ जैसे समुद्र में नदी या सिंधु में बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने पर बिन्दु स्वयं ही सिन्धु हो जाता है, बिन्दु नहीं रह पाता।' उपर्युक्त भाव किसने प्रकट किए?

उत्तर– आचार्य विनोबा भावे ने।

प्रश्न– **बूंद से नहीं जलधार से पर्वत कटते हैं।**
धागे से नहीं, रस्सी से वजन उठते हैं।
देश वही, गुलामी के गर्त में जा गिरा।
संगठन को तोड़कर लोग जहाँ बँटते हैं॥
उपर्युक्त काव्य की पंक्तियाँ किस जैन संत की हैं?

उत्तर– श्री गणेश मुनि जी 'शास्त्री'।

प्रश्न– हमारे शरीर के विभिन्न अंग किस प्रकार संगठित होकर कार्य करते हैं?

उत्तर– हमारे शरीर के सारे अंग स्वयं का नियत किया हुआ कार्य करते हैं। आँख देखने का कार्य करती है, नाक सूंघने का कार्य, पैर चलने का कार्य करते हैं, लेकिन शरीर के किसी अंग में पीड़ा होने पर सारी शक्ति उस ओर केन्द्रित हो जाती है और सभी अंग संगठित होकर उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रश्न– समाज में एकता की भावना सबल कब होगी?

उत्तर– समाज में जब व्यक्तिपूजा के स्थान पर गुणपूजा प्रतिष्ठित होगी, तभी समाज में एकता की भावना सबल होगी। व्यक्ति पूजा, पूजक और पूज्य दोनों के अहंकार का सिंचन करती है और उनकी चारित्रिक स्खलनाओं का कारण बनती है। अतः हम व्यक्तिपूजक नहीं गुणपूजक बनें।

प्रश्न– सरिता का पानी किस प्रकार अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है?

उत्तर– एक पर्वत से निकलने वाली भिन्न धाराओं का कोई उपयोग नहीं होता है, लेकिन वे धाराएँ जब मिलकर एक दिशा की तरफ बहने लगती हैं और नदी का रूप धारण कर लेती हैं तब सैकड़ों मील पृथ्वी को अपने जल से सींचकर फलप्रद बना देती हैं। अन्त में सागर में मिलकर एक होने का अपना ध्येय भी पूरा कर लेती हैं, जबकि धाराएँ तो थोड़ी दूर बहकर ही सूख जाती हैं।

प्रश्न– रस्सी के तार किस प्रकार संगठन के द्योतक हैं?

उत्तर– संगठन एक रस्सी के समान है जो कुए से जल खींचने की भांति किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता प्रदान करता है, लेकिन वही अगर छिन्न-भिन्न हो गया हो तो कोई भी कार्य सच्ची सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। रस्सी के तार अगर बिखर गए तो कोई भी सीढ़ी चढ़ने में असमर्थता होती है, वैसे ही अगर समाज एक सूत्र में नहीं बंधा तो छिन्न-भिन्न होकर समाज विनाश की ओर बढ़ जाता है।

प्रश्न– संघ में संगठन से किस प्रकार मंजिल प्राप्त की जा सकती है?

उत्तर– संघ एवं संगठन की शक्ति विचार और व्यवहार की एक धारा में है। परस्पर विरोधी विभिन्न विचारधाराओं की खींचतान के कारण प्रगति का कर्मरथ ठीक तरह गति नहीं कर सकता। जब गति नहीं तो प्रगति नहीं, तो फिर मंजिल कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

प्रश्न– वर्तमान में जैन समाज की एकता किन कारणों से आवश्यक है?

(1) पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष एवं प्रतिस्पर्धा में समाज के श्रम, शक्ति और धन का जो अपव्यय हो रहा है उसे रोका जा सके।

(2) जैन धर्म की धार्मिक एवं सामाजिक एकता के साथ हमारे

अस्तित्व का प्रश्न जुड़ा हुआ है। प्रजातन्त्र में किसी वर्ग की आवाज इसी आधार पर सुनी और मानी जाती है कि उसकी संगठित मत-शक्ति (Voting Power)एवं सामाजिक प्रभावशीलता कितनी है।

प्रश्न– किसी भी सामाजिक अथवा धार्मिक संगठन के विकास के लिए क्या अपेक्षा है?

उत्तर– सामाजिक अथवा धार्मिक हर संगठन के लिए विकासोन्मुख गतिशीलता, स्पष्ट दिशा दर्शन एवं स्वस्थ चिन्तन की अपेक्षा होती है। इसके अभाव में जड़ता, निष्क्रियता और अन्ततः हताशा घेर लेती है, जिससे संघ-संगठन से सम्बन्धित कार्यकर्त्ता एवं जनता अछूती नहीं रह सकती।

प्रश्न– संगठन के सम्बन्ध में दो अलग-अलग प्रेरणामय विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– (1) अकेले स्थान में उगे हुए मजबूत बड़े और गहरी जड़ों वाले वृक्ष को आंधी उखाड़ फैंकती है, परन्तु जो पेड़ इकट्ठे समूह रूप मजबूती से खड़े होते हैं, वे तेज आंधियों को भी एक दूसरे की सहायता से सहन कर लेते हैं।

(2) जब बिजली कड़कती है तो साँप और मोर एक ही डाल पर बैठे रहते हैं।

प्रश्न– सामुदायिक चेतना के विकास का सूत्र 'समन्वय' है, क्यों?

उत्तर– संगठन में समन्वय का बड़ा मूल्य है। जहाँ संगठन होता है, वहाँ संघ होता है। वहाँ एक ही प्रकृति के लोग नहीं होते। संगठन में विभिन्न क्षेत्रों से कार्यकर्त्ता आते हैं, अतः उनमें आपस में तालमेल व समन्वय होने से ही वह संगठन मजबूत बनता है।

प्रश्न– एकता का महत्त्व बताइए।

उत्तर– जिस प्रकार पैर में कांटा लगने पर नयन आंसू निकालते हैं, सारा शरीर उसे निकालने के लिए तत्पर हो जाता है तथा आँख की चूक से कांटा लगने पर भी पैर को आँखों पर भरोसा रहता है, इसी प्रकार जहाँ एकता है वहाँ परस्पर सहयोग एवं विश्वास होता है।

-89, Audiappa Naicken Street, Ch.-600079

नारी-स्तम्भ

विश्वास और अंधविश्वास

श्री के.एस. गलुण्डिया (सेवानिवृत्त, आई.ए.एस.)

मनुष्य अपनी मान्यताओं के आधार पर ही जीता है। कुछ मान्यताएँ उसके अनुभव पर आधारित हैं तो कुछ अंधविश्वास पर। अंधी मान्यता, मूढ़ परम्परा और अनचाहे पूर्वाग्रह व संस्कारों से ग्रसित मानव गलतियों का शिकार बनता रहता है। झाड़-फूंक, जादू-टोना, भाव आना, बीमारियों को दूर करने के लिए देवी देवताओं को प्रसाद चढ़ाना व भोपों और ढ़ोंगी साधुओं की शरण में जाना, प्रतिदिन की घटनाएँ हैं। कुछ दुर्घटनाएँ अथवा घटनाएँ अखबारों में छपती हैं, लेकिन अधिकतर से हम अनभिज्ञ रहते हैं।

"झाड़-फूंक के नाम पर बीमार महिला को आग के बीच काफी देर तक बैठाने और जगह-जगह चिमटे से दागने की वजह से हालत बिगड़ गई। अस्पताल में डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया"। (भास्कर न्यूज, बुधवार 13 अप्रेल 2011)

"क्या आप जानते हैं राजस्थान में एक ऐसा मंदिर भी है जहाँ सुरक्षित यात्रा के लिए मोटर साइकिल देवता की पूजा की जाती है। यह मंदिर पाली जिले के चोटिला गांव में स्थित है। यह बुलेट बाबा के नाम से मशहूर है। यहाँ विधिवत् पूजा अर्चना की जाती है और लिखकर मन्नत मांगते हैं।" (लोकदशा, जयपुर, 1 जून, 2011)

इसी प्रकार हिमाचल प्रदेश में कमरूनाथ झील सोना-चांदी मांगती है। सदियों से लोग झील को देवता का असली रूप मानते हैं।

इस प्रकार की सैकड़ों मान्यताएँ हमारे देश और विदेशों में प्रचलित हैं। देवी-देवताओं को खुश करने के लिए कई लोग नरबलि तक चढ़ाते हैं। गाँवों में आये दिन किसी महिला को डायन घोषित कर उसके बाल काट कर मुंह काला करके गांव के बाहर निकाल दिया जाता है तथा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है।

अंधविश्वास कहें या विश्वास

आज भी शिक्षित वर्ग के कई लोग मानते हैं कि यदि काली बिल्ली

रास्ता काट दे या छींक आ जाये तो रुक जाना चाहिये तथा कुछ समय बाद अथवा रास्ता बदलकर जाना चाहिये। भारत में ही नहीं पश्चिम के देशों में भी कई प्रकार के अंधविश्वास प्रचलित हैं। वे 13 तारीख को अशुभ मानते हैं, होटल में 13 नम्बर का फ्लोर व 13 नम्बर का कमरा नहीं मिलेगा, ना ही 13 नम्बर की स्ट्रीट मिलेगी। इसी प्रकार शुक्रवार को अशुभ माना जाता है। हमारे यहाँ 13 को शुभ माना गया है। कहते हैं "बिना पूछा मोहरत भला के तेरस के तीज"। अमेरिका के कुछ वैज्ञानिकों ने 13 की अशुभ अवधारणा को गलत साबित करने के लिए अपोलो (Appolo) 13 अंतरिक्षयान 13 तारीख को 13 बजे अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। दुर्भाग्यवश उसमें तकनीकी खराबी हो जाने के कारण उसे उड़ान भरने के कुछ ही समय बाद समुद्र में उतारना पड़ा। अभियान असफल रहा। अमेरिकी समाज की मान्यता यथावत् रही।

विश्वास एवं अंध-विश्वास

विश्वास और अंध-विश्वास में बहुत ही बारीक सीमा रेखा है। विश्वास किसी कार्य को योग्यतापूर्वक कुशलता से करने में सहायक होता है। वहाँ हम अपनी बुद्धि, अनुभव एवं योग्यता के अनुरूप कार्य करते हैं। विश्वास जागरूक अवस्था में विवेकपूर्ण आस्था का नाम है, लेकिन जब जागरूक नहीं रह कर बिना विवेक के कोई कार्य अथवा आस्था भेड चाल की तरह की जाए तो वह अंध-विश्वास की परिभाषा में आयेगा। परिस्थितियाँ वहीं हैं, संसाधन वहीं हैं, कुशलता वही है, लेकिन जो ज्ञान का प्रकाश है वह विश्वास शक्ति देता है, जबकि अंध-विश्वास हमें कमजोर बनाता है एवं हम सहमे हुए, भयाक्रांत होकर अपना आत्म-विश्वास खो देते हैं।

भूत-प्रेत व प्रेतात्माएँ

हमारे समाज में बचपन से ही माता-पिता व परिवारजन बच्चों को डराने के लिए कहते हैं- जल्दी से दूध पी लो वरना भूत आ जायेगा। भूत-प्रेत की कहानियाँ भी काफी प्रचलित हैं। जो बातें बार-बार हमें बचपन से सुनाई जाती हैं वे हमारे अचेतन मन में हमेशा के लिए घर कर लेती हैं। देवी, देवता, प्रेतात्मा आदि के बारे में भी हमारी संस्कृति व जीवन-प्रणाली में कई मान्यताएँ हैं और हम अपने अचेतन मन की धारणाओं के अनुसार उनमें विश्वास करते हैं।

कतिपय अनुभूत सत्य घटनाएँ

हमारे ही परिवार में श्री भूरेलाल जी बया जो राजस्थान में मंत्री पद पर

भी रहे, उनके द्वितीय पुत्र श्री विरेन्द्र की सर्पदंश से अल्प आयु में मृत्यु हो गई। श्री महेन्द्र प्रताप बया उनके बड़े भाई का मानना है कि रात्रि को सोने से पहले अपने शयनकक्ष में जाने के पूर्व श्री विरेन्द्र का रास्ता काली बिल्ली ने काट दिया। घर वालों ने मना किया कि वह उस कमरे में नहीं जाए। लेकिन उनकी बात नहीं मानते हुए विरेन्द्र अपने कमरे में ही जाकर सो गये। रात्रि के तीसरे प्रहर में एक बहुत जहरीला सांप उड़कर खिड़की से दाखिल हुआ एवं विरेन्द्र को डस लिया। परिवार में यह मान्यता और भी दृढ़ हो गई कि काली बिल्ली के रास्ता काटने पर अशुभ की आशंका है।

मैं भूत, प्रेतात्मा, डाकन आदि में विश्वास नहीं करता। मेरे विद्यार्थी जीवन की घटना है। मैं मेरे ननिहाल की जमींदारी खजरी (जिला-दमोह) गया हुआ था। दिन के समय मैं अकेला वहाँ हमारे कोठे में दरवाजे के सामने पलंग पर लेटा था। दिन के लगभग 12 बजे का समय था, मैं अर्धनिद्रा अवस्था में अखबार पढ़ रहा था। अचानक चौक का दरवाजा खुलने की आहट आई और किसी महिला के पायल की आवाज आई। मन में एक भय का सा एहसास हुआ और मैं झटके के साथ उठ बैठा। फिर क्या, पायल की आवाज दौड़ती हुई बरामदे तक पहुँच गई। मैंने बाहर जाकर देखा तो कुछ भी नहीं था। मैंने इसे अपना भ्रम समझा, लेकिन बाद में मुझे बताया गया कि ऐसी आवाज कई लोगों को आ चुकी है और नींद में सोते लोगों को गला घोटने का एहसास भी हो चुका है। जब मैंने अपना अनुभव हमारे कारिंदो को बताया तो उन्होंने कहा कि कई साल पहले.वहाँ पर मुनीम जी की जवान बेटी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी और उसकी प्रेतात्मा वहाँ भटकती है।

नौकरी में आने के बाद ट्रेनिंग के दौरान कुछ साथियों के साथ प्लेन्चेट पर घूमती हुई आत्माएँ (moving spirits) व अन्य आत्माओं को बुलाने का प्रयास हम लोगों ने किया। कुछ आत्माएँ आई, जवाब भी दिये व अधिकतर उत्तर जो उनके जीवनकाल से सम्बन्धित थे सही दिये। इनमें सुभाष चन्द्र बोस व मैरेलिन मुनरो (होलीवुड एक्ट्रेस) की आत्माएँ भी शामिल थीं। उत्तर भी सही थे।

कितनी सत्यता ?

इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः सुनने को मिलती हैं। यह भी सही है कि

कभी-कभी हमें किसी अशुभ का पूर्वाभास हो जाता है, साथ ही हमारे प्रियजनों के बारे में भी आभास होता है। यह बात तो माननी पड़ेगी कि मनुष्य का मस्तिष्क इतना विकसित है कि कभी-कभी यह पूर्वाभास, पूर्वानुमान व अन्य सूचनाएँ देता रहता है। नोस्ट्रेडेमिस एवं कई भविष्य वेत्ताओं ने जिनमें यह ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता थी, कई सही भविष्यवाणियाँ की हैं। इसी प्रकार जब हम एकाग्र होकर किसी की आत्मा को प्लेन्चेट पर बुलाते हैं तो वह हमारे माध्यम से ही आती है एवं हमारे चेतन व अचेतन मन में सुप्त ज्ञान के आधार पर ही उत्तर देती है।

इसे हम अपना विश्वास कहें या अंधविश्वास अथवा दिमागी कमजोरी, लेकिन यह निर्विवाद है कि हमारी धारणाएँ हमारे ही चेतन एवं अचेतन मन की उपज है। हम ही इन्हें बनाते हैं जो मूढ परम्परा और अंधी मान्यता का रूप ले लेती है।

प्रश्न उठता है, क्या काली बिल्ली के रास्ता काटे बिना अथवा 13 तारीख के अलावा अन्य तारीखों को दुर्घटनाएँ एवं हादसे नहीं होते हैं?

हर रोज, हर क्षण अच्छी और बुरी घटनाएँ घटित होती रहती हैं, जो कर्म प्रधान हैं, लेकिन अंधविश्वासी लोग इसका दोषारोपण अंधी मान्यताओं अथवा देवी-देवताओं व ग्रहों के दुष्परिणामों अथवा काली बिल्ली या अशुभ तारीख पर मंडते रहते हैं। अतः हर मान्यता, परम्परा व अवधारणा को उसके गुणदोष के आधार पर परखना ही उचित होगा।

किसी ने सत्य ही कहा है कि "हम मृत्यु के बीच में जी रहे हैं और जीवन के बीच में मृत्यु का तांडव चल रहा है" (We are living in the midst of death and dying in the midst of Life)

अंधविश्वास के नाम पर शोषण

अंधविश्वास के नाम पर समाज के कमजोर और अशिक्षित वर्ग का खुलकर शोषण हो रहा है। ऊपरी हवा लगना, भाव आना, झाड फूंक, चौंतरे, चबूतरे व देवी-देवताओं की पूजा ये सब हमें कमजोर बनाते हैं तथा हमारी निर्बलता व नकारात्मक सोच के द्योतक हैं। डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने अपने सम्पादकीय सद्गुणों की पूजा (जिनवाणी, मई 2011) में बहुत ही अच्छा विवेचन किया है। "दोषों का छूटना और सद्गुणों का आना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए सद्गुणों की पूजा ही अधिक महत्त्व रखती है बाहरी

चौंतरे, पगलिए, मूर्ति आदि की पूजामात्र से वास्तविक भला होने वाला नहीं है।"

सकारात्मक सोच

सब कुछ हमारी सोच पर निर्भर करता है। यदि हमारी सोच सही है और सकारात्मक है तो हम गुण ही गुण ग्रहण करते जायेंगे। यदि बीज अच्छे व स्वस्थ्य होंगे तो फसल भी उतनी ही अच्छी होगी। विवेकपूर्ण सकारात्मक सोच हमारे आत्मविश्वास व शक्ति के स्रोत हैं एवं रूढिवादी नकारात्मक सोच हमारी शक्ति को क्षीण करती है।

-53, लेन नं.2, गोपालबाडी, जयपुर-302001 (राज.)

यह कैसा विज्ञान है मन का

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मन के भाव, बदलते पल-पल,
रह-रह, मन यह भटकता है।
इत उत दौड़, लगाता है यह,
संभले नहीं संभलता है।।1।।

यह कैसा विज्ञान है मन का,
दूर-दूर तक जाता है।
उड़ जाता; क्षण भर में ऊँचा,
देवलोक, जा आता है।।2।।

नहीं लेना-देना है, फिर भी,
मन निशदिन, दौड़ लगाता है।
बिना पंख का, है यह पंछी,
विचित्र ही खेल, रचाता है।।3।।

मन के मारे, सभी परेशां,
हमें होती, बड़ी हैरानी है।
कोई बचा न, मन पीड़ा से,
इसकी गज़ब कहानी है।।4।।

कभी बन जाता, मित्र किसी का,
कभी शत्रु, बन जाता है।
व्यर्थ सोच कर, मन में बातें,
कर्म बंध, कर जाता है।।5।।

कैसी करनी, है इस मन की,
नहीं समझ में, आता है।
पोट बांध कर, पाप कर्म की,
भव-भव में, भटकाता है।।6।।

मन के साधे, सब सध जाता,
यह कला, धर्म से मिलती है।
जिसने साधा, अपने मन को,
जीवन क्यारी खिलती है।।7।।

धर्म-साधना, करो सदा ही,
मन शांति, समाधि पाओगे।
बच जाओगे, भव भटकन से,
मोक्ष धाम में, जाओगे।।8।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ)

युवा-स्तम्भ

भगवान् से हमारी माँग

श्री रणजीतसिंह कूमट

महाभारत में एक रोचक एवं प्रेरणास्पद प्रसंग आता है जब दुर्योधन एवं अर्जुन अपने-अपने पक्ष के समर्थन के लिए श्रीकृष्ण के पास जाते हैं। दैवयोग से दोनों एक ही दिन व एक ही समय पहुँचते हैं। दुर्योधन थोड़ा पहले पहुँचता है और उस वक्त श्रीकृष्ण सोये होते हैं तो उनके पास ही सिर की ओर बैठ जाता है, अर्जुन बाद में आता है परन्तु उस वक्त भी श्रीकृष्ण को सोया देख उनके पैर के समीप बैठ जाता है, दोनों श्रीकृष्ण के जागने का इंतजार करते हैं। थोड़ी देर में जब श्रीकृष्ण की आँख खुलती है तो स्वतः ही सामने बैठे अर्जुन पर नज़र पड़ती है तो पूछते हैं- "कहो अर्जुन, कैसे आना हुआ?" इसी बीच दुर्योधन बोल पड़ा- "मैं पहले आया, मुझे तो पूछा नहीं।" श्रीकृष्ण बोले-"पहले अर्जुन को देखा तो अर्जुन को पूछा। तुम पहले आये तो तुम भी बोलो, कहो कैसे आना हुआ? दोनों ने एक ही बात कही कि उन्हें युद्ध में श्रीकृष्ण का सहयोग चाहिए। श्रीकृष्ण बोले- "मैं एक साथ दोनों तरफ नहीं हो सकता, तुम्हें चुनाव करना होगा। एक तरफ मैं स्वयं हूँ, परन्तु मैं युद्ध में हथियार नहीं उठाऊँगा और दूसरी ओर मेरी फौज है जो अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित है, तुम्हें दोनों में से एक का चुनाव करना होगा।" दुर्योधन पहले आया तो उसे पहले चुनाव का अवसर दिया। दुर्योधन ने सोचा कि यदि श्रीकृष्ण हथियार नहीं उठाएँगे तो उनका युद्ध में क्या लाभ? अतः उसने श्रीकृष्ण की विशाल फौज को चुना। अर्जुन के पास चुनने को कुछ बचा न था, परन्तु वह श्रीकृष्ण को बिना हथियार के पाकर भी बहुत प्रसन्न था। अर्जुन को तो श्रीकृष्ण ही चाहिए थे और वे उसके सारथी (रथ के संचालक) बने। महाभारत का नतीजा हम सब जानते हैं कि श्रीकृष्ण सारथी के साथ-साथ अर्जुन व पांडवों के सलाहकार भी बने और उनकी सलाह से ही पांडव युद्ध में विजयी हो पाए।

हम जब भगवान् के पास मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर या गुरुद्वारा जाते हैं तो भगवान् से क्या माँगते हैं? भगवान् को माँगते हैं कि भगवान् की

फौज को? क्या हम कहते हैं कि "भगवान् आओ मेरे घट या आत्मा में बिराजो" या माँग करते हैं कि हमारी अमुक-अमुक इच्छा पूरी करो? कौरवों की फौज हमारी इच्छाओं की प्रतीक है। हम इस फौज को ही अधिक से अधिक बलवती बनाने का प्रयास करते हैं। इच्छाओं की लम्बी सूची लेकर जाते हैं। एक सूची समाप्त हुई कि दूसरी उससे भी बड़ी सूची लेकर पहुँच जाते हैं। सूची समाप्त ही नहीं होती। इसके विपरीत भगवान् को अपने सारथी के रूप में माँगें तो हमारा काम कितना सरल हो जाएगा? भगवान् जिसका सारथी है उसे और किस मदद की आवश्यकता है? भगवान् जिसके घट में हों उसे और चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, उसे अलग-अलग इच्छा जताने की भी जरूरत नहीं है। भगवान् अन्तर्यामी हैं तो वे हमारे मन की बात जानकर स्वयं ही पूरी कर देंगे। परन्तु हमें भगवान् पर विश्वास कहाँ है? हम इच्छाओं की पूर्ति का काम भगवान् पर छोड़ना नहीं चाहते हैं। इसीलिए भगवान् को न मांगकर इच्छाओं की सूची लेकर जाते हैं, कभी नहीं कहते कि जो आपकी इच्छा हो वह करो। भगवान् पर भरोसा न कर कामना पूर्ति की माँग करते हैं। जब तक इच्छापूर्ति के जाल में फँसे हैं, दुःख से मुक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता, अक्षय सुख चाहते हैं तो हमारी माँग भगवान् की होनी चाहिए न कि इच्छापूर्ति की।

जब हम ऊपर महाभारत की कथा पढ़ रहे थे तो मन ही मन सोच रहे थे कि दुर्योधन कितना नासमझ था कि उसने श्रीकृष्ण को न माँग कर उनकी फौज माँगी और अर्जुन कितना समझदार था। परन्तु जब हम अपने व्यवहार पर नज़र डालते हैं तो अपने आपको दुर्योधन की तरह ही व्यवहार करते हुए पाते हैं। अपना काम भगवान् पर न छोड़ कर अपनी माँग की सूची प्रस्तुत करते हैं। अर्जुन की तरह भगवान् को सारथी बना कर निश्चिन्त होना नहीं चाहते। अर्जुन की तरह व्यवहार न कर, जो है उसे स्वीकार न कर हम उलझन में पड़ते हैं, दुःखी महसूस करते हैं और इच्छा पूर्ति न होने पर भगवान् को दोष भी देते हैं।

भगवान् को अपने जीवन का सारथी बनाकर हम वृक्ष के मूल को सींच रहे हैं, परन्तु इच्छाओं की सूची प्रस्तुत कर पेड़ के पत्तों को सींचते हैं। जड़ को न पकड़ कर पत्तों को पकड़ने में समझदारी कहाँ है। भगवान् को सारथी बनाने से हम कर्ता भाव से मुक्त होते हैं और जो प्राप्त होता है उसे

स्वीकार करना सीखते हैं। कर्तृत्व भाव से मुक्त हो द्रष्टाभाव में स्थित हों तो दुःखी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। जो है उसे स्वीकार करने और उसमें प्रसन्नता अनुभव करने से दुःख का आगमन स्वतः रुक जाता है।

इच्छाओं की पूर्ति (कौरव सेना) को बढ़ावा दे कर हम भगवान् से स्वतः ही दूर हो जाते हैं। भगवान् के सारथी रूप को अस्वीकार भी करते हैं और इच्छापूर्ति न होने पर स्वयं को दोष न देकर भगवान् को ही दोष देते हैं और दुःखी महसूस करते हैं। स्वयं ने अपने रथ की डोर सम्हाली तो जिस मुकाम पर पहुँचे वह स्वयं की करनी का फल है, फिर भगवान् को दोष क्यों देना? स्वयं को स्वयं के प्रति जिम्मेदार समझो और जो फल मिला है उसे सहर्ष स्वीकार करो। आगे का मार्ग स्वतः मिलेगा।

भगवान् को सारथी रूप में स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं है कि स्वयं निष्क्रिय हो जाओ और सब कुछ उसके भरोसे छोड़ दो। श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने, परन्तु युद्ध तो अर्जुन ने ही लड़ा और पराक्रम उसी का था। मेहनत हमें ही करनी है, पराक्रम हमारा ही होगा, निर्देशन व संरक्षण भगवान् का होगा। काम न करें और सफलता की कामना करें यह अर्थ कभी न लें। भगवान् का निर्देशन लो, उसे अपना मार्गदर्शक मानो न कि इच्छापूर्ति करने वाला देवता। इच्छापूर्ति के जाल से ऊपर उठ कर लक्ष्य पूर्ति के भागीरथ प्रयत्न में लगो।

-सी 1703, लेक कॉसल, हीरानन्दानी गार्डन,
पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

क्षमा और उसके लाभ

श्री दुलीचन्द जैन, चेन्नई

- जैन धर्म का कहना हैं कि अपने विरोधी के प्रति भी उदार, सहृदय और शांत बनो। किसी की भूल को गाँठ बांधकर हृदय में रखना, वैर विरोध बढ़ाते जाना सही मनोवृत्ति नहीं हैं।
- भगवान् महावीर से पूछा गया कि क्षमा करने से जीव को क्या लाभ प्राप्त होता है? महावीर ने उत्तर दिया कि क्षमा करने से चार लाभ मिलते हैं- 1. चित्त की प्रसन्नता (मानसिक), 2. सभी जीवों से मैत्री भाव, 3. भावनाओं की विशुद्धि और 4. निर्भयता।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 68)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(कषाय कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु किसे कहते हैं?

समाधान–जो साधु महाव्रतादि मूल गुणों तथा प्रत्याख्यान आदि उत्तरगुणों में जानबूझ कर किंचित् भी दोष नहीं लगाता है, किन्तु संज्वलन कषाय का उदय होने से जिसका चारित्र दूषित कहलाता है, ऐसे साधु को कषाय कुशील कहते हैं।

जिज्ञासा– संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?

समाधान–जो कषाय आत्मा को यथाख्यात चारित्र प्राप्त न होने दे अर्थात् जिसके उदय रहते जीव वीतरागता को प्राप्त न कर सके, उस कषाय को संज्वलन कषाय कहते हैं।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु के प्रमुख भेद कौन-कौनसे होते हैं?

समाधान–कषाय कुशील साधु के प्रमुख पाँच भेद इस प्रकार हैं–

1. ज्ञानकुशील-संज्वलन कषाय वश ज्ञान की विराधना करने वाले।
2. दर्शन कुशील-संज्वलन कषाय के कारण दर्शन (श्रद्धा गुण) की विराधना करने वाले।
3. चारित्र कुशील-संज्वलन कषाय के उदय के कारण चारित्र (महाव्रतादि) की विराधना करने वाले।
4. लिंग कुशील-संज्वलन कषाय से द्रव्य एवं भाव लिंग की विराधना करने वाले। इनका दूसरा नाम तप कुशील भी है।
5. यथासूक्ष्म कुशील-मन से संज्वलन कषाय करने वाले।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु में कितने गुणस्थान होते हैं?

समाधान–कषाय कुशील साधु में छठे से लेकर दसवें गुणस्थान तक पाँच गुणस्थान होते हैं। यद्यपि सर्वविरति अवस्था छठे से

चौदहवें गुणस्थान तक रहती है, किन्तु इस अवस्था में कषायों का उदय दसवें गुणस्थान तक ही रहता है,अतः छठे से लेकर दसवें गुणस्थान तक कषाय कुशीलपना माना जाता है।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु कैसे बनते हैं?

समाधान– जब कोई साधु-साध्वी संयम अंगीकार करके महाव्रत-समिति-गुप्ति-उत्तम धर्म आदि का पूर्ण सजगता के साथ निरतिचार रूप से पालन करते हैं तथा जानबूझ कर किसी भी प्रकार के अतिचारों, दोषों का सेवन नहीं करते हैं, स्वाध्याय-ध्यान-चिन्तन में निरत रहते हैं तो वे सच्चे साधु कहलाते हैं। किन्तु इनके संज्वलन कषाय का उदय रहने से संयम में जो मलिनता अथवा अपूर्णता रह जाती है, उस कारण से इन्हें कषाय कुशील साधु के नाम से कहा जाता है।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु कौनसे कल्प में होते हैं?

समाधान– तीन प्रकार के कल्प हैं-जिनकल्प, स्थविर कल्प और कल्पातीत। कषाय कुशील साधु तीनों प्रकार के कल्पों में होते हैं, क्योंकि छद्मस्थ तीर्थंकर सकषायी होने से कल्पातीत होते हुए भी कषाय कुशील होते हैं।

दूसरी अपेक्षा से विचार करें तो कल्प के दो भेद भी हैं-स्थितकल्प और अस्थित कल्प। जिसमें दसों कल्पों का पालन अनिवार्य हो वह स्थित कल्प तथा जिसमें चार कल्पों का पालन अनिवार्य हो तथा शेष छह कल्पों के पालन में ऐच्छिकता हो, उसे अस्थित कल्प कहते हैं। कषाय कुशील साधु स्थित तथा अस्थित इन दोनों ही कल्पों में होते हैं।

जिसासा– दस कल्प कौन-कौन से होते हैं?

समाधान– दस कल्पों के नाम इस प्रकार हैं-

1. अचेल कल्प-अल्प मूल्य वाले श्वेत वस्त्र मर्यादा में रखना।
2. औद्देशिक कल्प-साधु-साध्वियों के लिये बनाये गये आहारादि का त्याग करना।
3. शय्यातर पिण्ड-जिसके मकान में रहे, उसके यहाँ से

अगले दिन से आहार-पानी ग्रहण नहीं करना।

4. राजपिण्ड-राजाओं के लिए बना हुआ आहारादि ग्रहण नहीं करना।
5. कृतिकर्म-संयम पर्याय में अपने से बड़ों का वन्दन करना।
6. व्रत कल्प-अहिंसादि महाव्रतों का पालन करना।
7. पुरुष ज्येष्ठ कल्प-संयमवान साधुओं को बड़ा मानना।
8. प्रतिक्रमण कल्प-दोषों की शुद्धि हेतु प्रतिक्रमण करना।
9. मास कल्प-वर्षावास तथा रोगादि अन्य कारण के बिना एक स्थान पर एक मास से अधिक नहीं ठहरना।
10. पर्युषण कल्प-आषाढ़ की पूर्णिमा से लगाकर कार्तिक की पूर्णिमा तक एक स्थान पर रहना।

इन दस कल्पों में से मध्य के बाईस तीर्थंकरों के साधु-साध्वियों के लिए तथा महाविदेह क्षेत्र के साधु-साध्वियों के लिये निम्नलिखित चार कल्प अवश्य पालनीय होते हैं- 1 शय्यातर पिण्ड, 2.कृतिकर्म, 3. व्रत कल्प, 4. ज्येष्ठ कल्प।

जिज्ञासा- क्या कषाय कुशील साधुओं में संज्वलन की चारों कषाय अनिवार्यतः होती हैं?

समाधान- जो साधु-साध्वी छठे से आठवें गुणस्थान वाले होते हैं, उनमें नियम से संज्वलन चौक की चारों कषाय उदय में रहती है। जो साधु-साध्वी नवें गुणस्थान में होते हैं, उनमें किसी के चार, किसी के तीन, किसी के दो कषाय उदय में रहती है। अर्थात् जो संज्वलन क्रोध, मान, माया का क्रमशः क्षय या उपशम कर देते हैं तो उनके एक-एक कषाय कम होती जाती है। दसवें गुणस्थानवर्ती साधु-साध्वियों के मात्र संज्वलन लोभ नामक एक ही कषाय उदय में रहती है।

जिज्ञासा- कषाय कुशील साधु-साध्वियों में कौन-कौन से चारित्र पाये जाते हैं?

समाधान- कषाय कुशील साधुओं में सामायिक चारित्र से लेकर सूक्ष्मसम्पराय चारित्र तक चार चारित्र पाये जाते हैं। यथाख्यात चारित्र नहीं पाया जाता।

यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के शासनवर्ती साधु-साध्वियों में उक्त चारों चारित्र कषाय कुशील में मिल जाते हैं, किन्तु मध्य के 22 तीर्थंकर एवं महाविदेह क्षेत्र के साधु-साध्वियों में छेदोपस्थापनीय तथा परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं पाये जाते हैं।

प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर की शासनवर्ती कषाय कुशील साध्वियों में परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं पाया जाता है। क्योंकि यह चारित्र पूर्वज्ञान पर आधारित है तथा पूर्वों का ज्ञान साध्वियों को नहीं हो पाता है। **(क्रमशः)**

हीरा गणिवर का क्या कहना...

श्री धर्मचन्द जैन

(आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 के पावटा, जोधपुर चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य में प्रस्तुत।)

शासन सौरभ, प्रवचन गौरव, हीरा गणिवर का क्या कहना।
जोधाणा में ठाट लगाया है, हस्ती पट्टधर का क्या कहना।।
माँ मोहिनी के जो नन्दा हैं, मोती कुल के जो चन्दा हैं।
जो रत्न संघ के वन्दा हैं, हीरा गणिवर का क्या कहना।।
फैशन और व्यसन निवारक हैं, संयम गुण के वर्धापक हैं।
जो ज्ञान क्रिया के पालक हैं, हीरा गणिवर का क्या कहना।।
श्री महेन्द्र मुनि जी साधक हैं, सेवा गुण के आराधक हैं।
शुभ परिणामों के धारक हैं, ऐसे गुरुवर का क्या कहना।।
नन्दीषेण की सेवा निराली है, मुनि प्रमोद बहुश्रुत धारी हैं।
योगेश की माधुरी वाणी हैं, ऐसे मुनिवर का क्या कहना।।
मुनि मनीष की आकर्षक शैली, मुनि यश की साधना है पैनी।
देवेन्द्र की सेवा है गहरी, ऐसे मुनिवर का क्या कहना।।
मुनि मोहन वय सम्पन्न हैं, सुभाष सजग गंभीरा हैं।
आशीष ज्ञान के रसिया हैं, ऐसे मुनिवर का क्या कहना।।
जो रत्नसंघ की प्रमुखा हैं, शासन की महाप्रभाविका हैं।
मैना सुन्दरी, रत्ना चन्द्रा, महासती मण्डल का क्या कहना।।

-रजिस्ट्रार,
अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली(3)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

19. **शिवाम्बु सेवन से लाभ-** दुनिया में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाइयां उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम, उपचार एवं परहेज के रूप में सेवन किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अंगों पर अलग-अलग सुप्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आंख के रोगों की दवा कान में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने योग्य दवा मुंह में नहीं ली जा सकती। परन्तु शिवाम्बु स्वयं के द्वारा स्वयं के शरीर से निर्मित ऐसी दवा है, जिसका प्रयोग चाहे कान हो या आंख, नाक हो या मुंह, त्वचा के रोग हों अथवा शरीर की आन्तरिक शुद्धि के लिए दिया जाने वाला एनिमा ही क्यों न हों, सभी अवस्थाओं में स्वस्थ रहने एवं रोग मुक्ति हेतु बेहिचक प्रयोग किया जा सकता है।

शिवाम्बु के सेवन से शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ती है, जिससे वायरस एवं मौसम परिवर्तन संबंधी रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। शिवाम्बु क्षारीय प्रकृति का होने से इसके सेवन से आंतों एवं रक्त की सफाई होने में मदद मिलती है। अतः साधक को प्रातःकाल मल-त्याग के पूर्व शिवाम्बु सेवन करना चाहिए। उसके 15-20 मिनट पश्चात् उषापान कर मल-त्याग हेतु जाने से कब्जी, गैस आदि रोग होने की संभावनाएँ कम रहती हैं। भोजन के पश्चात् शिवाम्बु का सेवन करने से पाचन अच्छा होता है। हिलते हुए दांतों को पुनः मजबूत करने के लिये तथा दांतों संबंधी अन्य रोगों में ताजे शिवाम्बु को मुंह में भरकर दिन में तीन-चार बार पंद्रह बीस मिनट घुमाने से हिलते हुए दांत ठीक हो जाते हैं। सांप-बिच्छु अथवा शरीर में अन्य जहर फैलने पर शिवाम्बु पीने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। आंखों के सभी रोगों में, नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए, चश्मे के नम्बर कम करने के लिए, रोजाना तीन-चार बार आंखों में ताजे शिवाम्बु को तीन चार मिनट ठंडा होने के पश्चात् डालने से काफी लाभ होता है। यदि किसी साधक का पेशाब बंद हो तो, अन्य स्वस्थ साधक का शिवाम्बु पिलाने से मूत्र में आया अवरोध दूर हो जाता है। उसके पश्चात् रोग ग्रस्त साधक अपने

स्वयं के शिवाम्बु का सेवन कर सकता है।

20. **मौन हंसी द्वारा रोगोपचार–** हँसी से शरीर में वेग के साथ आक्सीजन का अधिक संचार होने से मांसपेशियाँ सशक्त होती हैं। जमे हुए विजातीय अनुपयोगी, अनावश्यक तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं, जिससे विशेष रूप से फेंफड़े और हृदय की कार्य क्षमता बढ़ती है। अवरोध समाप्त होने से रक्त का प्रवाह संतुलित होने लगता है। फलतः हृदय और श्वसन संबंधी रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं और यदि इनसे संबंधित कोई रोग हो तो तुरन्त राहत मिलने लगती है। प्रातःकाल चंद मिनटों तक एकान्त में, स्वच्छ वातावरण में बैठ साधक मौन हंसी द्वारा हास्य योग द्वारा स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं।

21. **एकाग्रता से रोगोपचार–** प्रातःकाल जितना जल्दी उंठ सकें, निद्रा त्यागकर शांत एकान्त खुले स्वच्छ वातावरण में आंखें एवं मुंह बंद कर, दर्द अथवा शरीर के कमजोर भाग पर दबाव देने अथवा उस स्थान पर हथेली से मसाज करने, अगर यह भी संभव न हो तो उस स्थान पर हथेली से स्पर्श कर मौन हंसी –हंसने से शरीर के उस भाग में चेतना का प्रवाह अधिक होने लगता है। जिससे शरीर का वह भाग सक्रिय होने लगता है। चन्द दिनों तक नियमित इस प्रयोग से चमत्कारी परिणाम आते हैं तथा संबंधित अंग सक्रिय हो बराबर कार्य करने लग जाता है। पेन्क्रियाज पर दबाव देने से चन्द दिनों में ही मधुमेह का रोग भी नियन्त्रित हो जाता है। हृदय पर मसाज करने से हृदय बराबर कार्य करने लगता है।

22. **मेथी–स्पर्श से रोग निवारण–** मेथी वात और कफ का शमन करती है। अतः जिस स्थान पर मेथी का स्पर्श किया जाता है, वहाँ वात और कफ विरोधी कोशिकाओं का सृजन होने लगता है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। दर्द वाले अथवा कमजोर भाग में विजातीय तत्त्वों की अधिकता के कारण शरीर के उस भाग का आभा मंडल विकृत हो जाता है। मेथी अपने गुणों वाली तरंगें शरीर के उस भाग के माध्यम से अन्दर भेजती है, जिसके कारण शरीर में उपस्थित विजातीय तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं, प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है। फलतः रोगी स्वस्थ होने लगता है। जैन श्रमण के लिए सचित्त मेथी का उपयोग वर्जित होने से वे अचित्त मेथी स्पर्श कर उपर्युक्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

23. **रक्त शुद्धि का सरल उपाय–तेल गंडूस–** लगभग एक चम्मच सूर्यमुखी तेल को 15 से 20 मिनट मुंह में अन्दर ही अन्दर घुमाकर थूकने से रक्त की शुद्धि होती है। जिससे रक्त विकार से संबंधित, उच्च एवं निम्न रक्तचाप, हृदय, गुर्दे, त्वचा आदि सभी प्रकार के रोग चन्द दिनों में ही दूर होने लगते हैं। हड्डियां और दांत भी मजबूत होने लगते हैं।

24. **शारीरिक संतुलन क्यों आवश्यक ?–** हमारा शरीर दाहिने एवं बायें भाग में बाह्य दृष्टि से एक जैसा लगता है। परन्तु उठने-बैठने-खड़े रहने, सोने अथवा चलते-फिरते समय प्रायः हम अपने बायें और दाहिने भाग पर बराबर वजन नहीं देते। जैसे खड़े रहते समय किसी एक तरफ थोड़ा झुक जाते हैं। बैठते समय सीधे नहीं बैठते। सोते समय हमारे पैर सीधे और बराबर नहीं रहते। स्वतः किसी एक पैर को दूसरे पैर की सहायता और सहयोग लेना पड़ता है। फलतः पैर के ऊपर दूसरा पैर चला जाता है। ऐसा क्यों होता है? दोनों पैरों के बराबर न होने अर्थात् एक पैर बड़ा और दूसरा पैर छोटा होने से प्रायः ऐसा होता है। अतः प्रत्येक साधक को पैरों, मेरुदण्ड एवं गर्दन को संतुलित करने का ढंग, जो बहुत ही सरल है अवश्य सीख लेना चाहिए। जिससे एडी से लगाकर गर्दन तक सकायु संबंधित रोगों में तुरन्त राहत मिलती है।

25. **नाभि संतुलन का महत्त्व–** यदि नाभि अपने स्थान से अन्दर की तरफ हो जाए, उस व्यक्ति का वजन दिन प्रतिदिन घटता चला जाता है और यदि किसी कारण नाभि अपने स्थान से बाहर की तरफ हो जाती है तो शरीर का वजन न चाहते हुए भी अनावश्यक बढ़ने लगता है। किसी कारण नाभि यदि अपने स्थान से ऊपर की तरफ चढ़ जाती है तो खट्टी डकारें, अपच आदि की शिकायत रहने लगती है। कब्जी हो सकती है। परन्तु यदि नाभि अपने स्थान से नीचे की तरफ चली जाती है तो दस्तों की शिकायत हो जाती है। इसी प्रकार नाभि कभी दायें, बायें अथवा तिरछी दिशाओं में भी हट जाती है, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग होने लगते हैं। सारे परीक्षण एवं पेथालोजिकल टेस्ट करने के पश्चात् भी यदि रोग पकड़ में नहीं आता हो, ऐसे में नाभि केन्द्र को अपने केन्द्र में लाने से तुरन्त राहत मिलने लग जाती है।

–चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621554, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.com

कविता

चातुर्मास : करे आत्म-विकास

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'

बाह्य जगत से अन्तर्जगत का, जो करवा दे प्रवास।
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।
विशेष साधना हेतु जब, उद्यत होते हैं अणगार,
चार माह तक वर्जन करते, विचरण और विहार।
एक स्थान पर संत-सतियाँ, जिस अवधि में करे निवास,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।1।।
श्रावक-श्राविका इस अवधि में, प्रमाद को करते दूर हैं,
त्याग-तपस्या के बल से, कर्मों को करते चूर हैं।
स्थिर होने का आत्मभाव में, जब करते हैं प्रयास,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।2।।
सामायिक-संवर करते हैं, प्राप्ति हेतु समभाव की,
प्रतिक्रमण कर दूर हटाते, मन से रज दुर्भाव की।
आलोचना द्वारा करता जो, दुर्गुणों का नाश,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।3।।
वर्षावास में ज्ञानार्जनरत, रहता है चतुर्विध-संघ,
ज्ञान का शस्त्र उठा करके, अज्ञान से करता जंग।
चीरता जो अज्ञानतम, फैलाकर ज्ञान प्रकाश,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।4।।
परपदार्थ और व्यक्तियों में, आत्मा जो आसक्त है,
स्वयं को ही विस्मृत करके, मोह-माया में व्याप्त है।
आत्मा को स्व में स्थिर करे, जो करवा कर स्व-आभास,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।5।।
धर्म-प्रेम जागृत हो ऐसा, बस! लगे धर्म ही प्यारा,
होवे सफलतम अब की बार, यह चातुर्मास हमारा।
'प्रेक्षक' मोक्ष प्रदान करेगा, समता का अभ्यास,
आत्मोत्थान का हेतु वह, कहलाता चातुर्मास।।6।।

-'समर्थ भवन' खींचन-342008, जिला-जोधपुर (राज.)

जीवन–व्यवहार

जैन समाज की अच्छाइयाँ

संकलन : नेहा चोरडिया

1. जैन समाज के पर्व भोगप्रधान नहीं, त्यागप्रधान हैं, जैसे – पक्खी पर्व, चातुर्मासिक पर्व, पर्युषण, संवत्सरी आदि पर्व त्यागपूर्वक मनाकर आत्मसाधना की जाती है।
2. जैन समाज में त्यागियों का महत्त्व बहुत अधिक है। त्याग की वजह से साधु–साध्वियों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। उनके त्याग के कारण उन्हें कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं के रूप में देखा जाता है।
3. जैन समाज की नींव सप्त कुव्यसनों के त्याग पर टिकी हुई है। जैन कुल में जन्म लेने वाला सहज ही इन पापों से छूट जाता है।
4. जैन समाज में बालक के समान ही बालिका का महत्त्व है। उसे दो कुलों को रोशन करने वाली जानकर शिक्षित किया जाता है।
5. जैन समाज में दहेज प्रथा अति–अल्प है। इसी कारण जैन समाज में नारी–उत्पीड़न की स्थितियाँ नहींवत् हैं।
6. जैन समाज में सुसंस्कार देने के प्रति विशेष जागृति है। पाठशाला आदि के माध्यम से बच्चों को संस्कारित किया जाता है।
7. जैन समाज दान–पुण्य में सबसे आगे रहने वाला समाज है। दान संग्रह/परिग्रह का प्रायश्चित मात्र है, इस तरह की भावनाओं से अपनी सम्पत्ति का कुछ अंश सेवा में लगाया जाता है।
8. घर में बड़ों का सम्मान जैन समाज में सर्वाधिक है; इसलिए वृद्धाश्रमों में जैनों की संख्या नहींवत् है।
9. अहिंसाप्रधान मानसिकता वाला समाज है। क्रूर परिणामों के साथ किसी भी जीव को मारने की भावना जन्म से ही नहीं होती है।
10. जैन समाज में करुणाप्रधान जीवन शैली है। यहाँ जीवदया के लिए कई तरह के कार्य किये जाते हैं।

11. स्वधर्मि-वात्सल्य की भावना जीवित होने से कोई भी जैनी भीख मांगता नज़र नहीं आता है।
12. धर्म-परिवर्तन का यहाँ कोई प्रयास नहीं होता है।
13. जैन समाज में वाणी-संयम का पर्याप्त ध्यान रखा जाता है। गरिमामय, आदरयुक्त और शिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाता है।
14. नाम के आगे गोत्र के स्थान पर धर्म लगाने वाला एकमात्र यही समाज है।
15. जैन समाज में गुणप्रधान जीवन शैली है। यहाँ व्यक्ति की नहीं, गुणों की पूजा की जाती है।
16. जैन समाज में आध्यात्मिकता का बहुत अधिक महत्त्व है।
17. आध्यात्मिक शिक्षण में जैन समाज आगे है। यहाँ परीक्षा, स्वाध्याय आदि से आध्यात्मिक शिक्षण करवाया जाता है।
18. जैन समाज की जीवन शैली क्षमाप्रधान है।
19. जैन समाज अपने आप में प्रतिष्ठित समाज है।
20. जहाँ कहीं भी जाओ, 'जैन फूड' मिलता है। 'जैन' नाम से भोजन की उपलब्धता इस समाज के आहार-विवेक का परिचायक है।
21. जैन समाज में सुशिक्षित वर्ग अधिक है। जनसांख्यिकीय आँकड़ों के अनुसार सर्वाधिक साक्षरता दर जैन समाज की है।
22. जिन्होंने जैन धर्म को अपनाया, जैन समाज ने उनको अपनाने में ढील नहीं दी। यह धर्म क्षेत्रवाद, वर्णवाद आदि से ऊपर उठा हुआ है।
23. जैन समाज शान्तिप्रिय समाज है। जैन समाज के नाम पर आज तक कोई युद्ध नहीं हुआ।
24. जैन समाज परोपकारी समाज है। हर स्थान पर सेवा, सहयोग देने में तत्पर रहता है।
25. जैन समाज में चतुर्विध संघ - साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका को पूजनीय माना जाता है।
26. जैन समाज अपने धर्म में स्थिर रहता है। वह धर्म के प्रति सदैव श्रद्धान्वित रहता है।
27. जैन समाज में देशभक्ति की भावना विशेष रहती है। देश के विरुद्ध जैन

समाज कोई बात नहीं करता है।

28. जैन समाज में अपव्यय करने की आदत कम रहती है। जितना कमाते हैं, उतना खर्च नहीं किया जाता है।

29. जैन समाज में संयुक्त परिवार अधिक हैं।

30. अट्ठानवें प्रतिशत शादियाँ जैन समाज में सफल रहती हैं।

31. जैन समाज में सामूहिक निर्णयों का विशेष सम्मान किया जाता है।

32. जैन समाज लेने में संकोच, किन्तु देने में उदारवृत्ति से युक्त समाज है।

33. 'अतिथि देवो भव:' की भावना रखते हुए अतिथि का सम्मान जैन समाज में किया जाता है।

34. कत्लखाने आदि घोर हिंसात्मक प्रवृत्तियों में जैन समाज की ओर से कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है।

35. जैन समाज आनुपातिक रूप से सबसे अधिक कर (टैक्स) भरता है।

(आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म. सा. की सुशिष्या व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म. सा. के चेन्नई, वैपेरी स्थित मरलेचा गार्डन में चातुर्मास के दौरान 28-7-11 को सुबह 8 से 9 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा में 'जैन समाज की अच्छाइयाँ' विषय पर समूह-चर्चा में अभिव्यक्त विचारों से संकलित)

कहानी प्रतियोगिता

हम चाहते हैं कि हमारी प्यारी नई पीढ़ी रचनाधर्मी बने एवं उसका सोच सकारात्मक तथा व्यापक हो, एतदर्थ एक कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कहानी नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा से युक्त हो तथा पूर्णतः मौलिक हो। मौलिकता का प्रमाण-पत्र आवश्यक है। संकलित कहानी को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। श्रेष्ठ कहानियों को 1500 रु., 1100 रु. एवं 800 रु. से पुरस्कृत किया जायेगा। सान्त्वना पुरस्कार पर भी विचार किया जा सकता है। प्रतियोगिता में 25 वर्ष तक के किशोर एवं युवा भाग ले सकते हैं, अतः आयु का प्रमाण-पत्र साथ प्रेषित करें। 30 सितम्बर, 2011 के पूर्व कहानी हमें मिल जानी चाहिए-**सम्पादक**

विचार

साधु-साध्वियों की चर्या है आश्चर्यकारी

श्री महेश नाहटा

जैन साधु-साध्वी भागवती दीक्षा अंगीकार करने के पश्चात् जीवनभर जिन सिद्धान्तों या नियमों का पालन करते हैं, वे हैं-

1. जीवनभर नंगे पैर चलते हैं। कभी भी वाहन का उपयोग नहीं करते, एक गाँव से दूसरे गाँव पैदल विहार करते हैं।
2. अपना सामान स्वयं उठाते हैं, किसी गृहस्थ से नहीं उठवाते हैं।
3. जीवन पर्यन्त कच्चा पानी एवं कच्ची वनस्पति नहीं ग्रहण करते हैं। धोवन पानी या गर्म पानी का उपयोग करते हैं। कैसी भी परिस्थिति आ जाये कच्चे पानी का एवं कच्ची वनस्पति का सेवन नहीं करते।
4. जैन साधु मोह ममता से रहित होते हैं और वे पास में पैसे नहीं रखते, रखे तो साधु नहीं समझना।
5. जीवन भर भौतिक सुख-सुविधाओं का एवं किसी भी प्रकार के विद्युत् उपकरण तथा बैटरी से चलने वाले उपकरणों का उपयोग नहीं करते। इसके साथ ही उन्हें स्पर्श भी नहीं करते हैं। वर्तमान में विद्युत् उपकरण के बिना जीना आश्चर्य की बात है।
6. जिन गृहस्थों के यहाँ चौके में शाकाहारी खाना पकता है उन्हीं चौकों से भिक्षा-ग्रहण कर अपनी भूख शांत करते हैं।
7. अहिंसा व्रत का पालन करते हुए, छोटे से छोटे जीवों को भी कष्ट न हो, ऐसी साधना में निरन्तर रत रहते हैं, और संसार के समस्त जीवों को आत्मतुल्य मानते हैं।
8. सत्य व्रत को पालते हुए जीवन पर्यन्त सत्य बोलते हैं, असत्य का सेवन नहीं करते हैं।
9. अचौर्य व्रत का पालन करते हुए किसी भी वस्तु की आवश्यकता होने पर गृहस्थ से याचना करके ही लेते हैं, बिना अनुमति के ग्रहण नहीं करते ।
10. जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं।
11. अपरिग्रह व्रत का पालन करते हुए साधु बहत्तर हाथ से ज्यादा एवं साध्वियाँ छियानवें हाथ से अधिक कपड़े नहीं रख सकते।

ऐसे संयमी साधु, साध्वी, मुनि भगवंतों के त्याग को हम सांसारिक प्राणी ही नहीं वरन् देवता भी वंदन करते हैं।

-नगरी (छत्तीसगढ़)

बाल-स्तम्भ

जय जिनेन्द्र हम बोलें

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित गीत को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 सितम्बर 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

विनय धर्म को धारण करके, गाँठ अहम् की खोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।ध्रुव।।
हाथ जोड़कर, मान जोड़कर, प्रेम से हौले-हौले।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।। ध्रुव।।

बन् गए जो इन्द्रिय-विजेता, दुष्कर काम किया।
कहलाए प्रभुवर जिनेन्द्र वे, हमने नाम लिया।
उनके पावन नाम स्मरण से, पाप-पंक सब धो लें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।1।।

अर्थपूर्ण है, भावपूर्ण है, अभिवादन यह न्यारा।
जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं, उनकी जय का नारा।
उनकी जय में अपनी जय है, सबकी जय है, बोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।2।।

सत्य अहिंसा की जय इनमें, मानवता की प्रतिष्ठा।
संस्कृति के संस्कार झलकते, शिष्टाचार की निष्ठा।

निष्ठा की अन्तर्शक्ति से, सारे फर्ज निभा लें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।3।।

छोटों से हो स्नेहभरा, हमउम्र से मैत्री भरा हो।
सभी बड़ों से आदरपूर्वक, ऐसा नमन खरा हो।
देने वाला पाता है सत्कार जगत में भोले।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।4।।

दीर्घ साधना का सुफल है यह वाणी की सत्ता।
बोंल-बोल करते रहते समझी नहीं मौन महत्ता।
बोलें पर उससे पहले हम, एक बार फिर तोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।5।।

यह ऐसा है, वह वैसा है, सबको कहते रहते।
यहाँ-वहाँ इससे-उससे बिन बात उलझते रहते।
पर-दर्शन से ध्यान हटाकर, अपना हृदय टटोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।6।।

मतभेदों के कारण से मनभेद न होने पाएँ।
भेद के भीतर जो अभेद है, वह समझें-समझाएँ।
बिना समन्वय सद्‌भावों के, जिनशासन यह डोले।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।7।।

स्वधर्मी वात्सल्य बढ़ाएँ, पंथवाद हम छोड़ें।
वैर विरोध की दीवारों को अनेकान्त से तोड़ें।
जोड़ें सबको, जुड़ें सभी से, चिर स्नेहामृत घोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।8।।

जय विजय का भाव हृदय में अभिवर्द्धित है होता।
बढ़ता है विश्वास परस्पर, मन खुशियों से भरता।

जिनको खुशियाँ कम नसीब हैं, उनके भर दें झोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।9।।

पूछें हाल-चाल, कैसे हो? सेवा-कार्य बताओ।
घर के, दिल के द्वार खुले हैं, चाहो जब तुम आओ।
वक्त-जरूरत नहीं मुकरें हम, सच्चे मन के हो लें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।10।।

चेहरे पर मुस्कान हृदय में हर्ष हिलोरे खाएँ।
आँखों में हो चमक अनूठी, ऐसे मिलते जाएँ।
सहयोग-सहकार बढ़ाकर, पट प्रगति के खोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।11।।

इसमें सरिताओं की कलकल, विहगों का मृदु कलरव।
पुलकित मन-उपवन में जैसे फूल खिले हों अभिनव।
कोयल जैसा मीठा-मीठा, सच्चा अच्छा बोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।12।।

ऋषभ पुत्र भरत का भारत, भारत का यह गौरव।
इतिहासों से परे पर खरे, ऋषि-मुनियों के अनुभव।
उनके कालजयी सन्देशों को क्योंकर हम टालें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।13।।

परम्परा की श्रेष्ठताओं का करें सहज अनुपालन।
भाषा समिति वचन गुप्ति से हो जीवन संचालन।
कर्कश मर्मभेदी वचनों से नहीं भड़काएँ शोले।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।14।।

आत्म-विस्मृति, आत्म-वंचना खूब हुई अब त्यागें।
उमर जा रही सोते-सोते, भाव-नींद से जागें।

कुछ कहने लायक करने का, सत्संकल्प संजो लें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।15।।

'दिलीप धींग' की दिली गुजारिश, बनें विराट् हृदय के।
तब हम पात्र बनेंगे सचमुच, श्री जिनेन्द्र की जय के।
जैन मात्र ही नहीं इसे अब, जन-जन मिलकर बोलें।
जय जिनेन्द्र हम बोलें।।16।।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रश्नः-

1. कविता में दिए गए कोई पाँच संदेश लिखिए।
2. 'जय जिनेन्द्र' क्यों बोलना चाहिए?
3. प्रगति के पट किस प्रकार खुल सकते हैं?
4. 'जोड़ें सबको, जुड़ें सभी से' कैसे सम्भव है?
5. देश का नाम 'भारत' कैसे पड़ा?
6. अर्थ बताइये- कालजयी, विहग, आत्म-वंचना, सत्संकल्प, कर्कश, मुकरें

बाल-स्तम्भ [जून-2011] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'शान्ति का रहस्य' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 19 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	रत्नेश बोहरा-जोधपुर	18.75
द्वितीय पुरस्कार-200/-	गजेन्द्रकुमार जैन-जयपुर	18.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	ऋषभ जैन-हिण्डौन सिटी	18.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	गरिमा जैन-कोटा	18
	चेतन कुमार जैन-अलीगढ	18
	अरूण गेलड़ा-भदेसर	18
	हिमांशी कांकरिया -नागौर	17
	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	17

प्रेरक-प्रसंग

हमें पत्थर मत मारो, हमें शांति से जीने दो

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

एक गाँव में एक तालाब के किनारे वर्षों से बरगद का पेड़ खड़ा था, उसके पत्ते झड़ गए थे। वह अब बूढ़ा हो गया है। एक जमाना था, अपनी जवानी में हरे-भरे पत्तों से इतना लदा-लदा सा रहता था कि सूर्य किरणें भी छेद नहीं पाती थीं। हजारों यात्री ठंडी छाया में विश्राम पाते थे। पंछी आशियाना बनाते थे, आश्रय पाते थे। कोयल की मीठी कूक व चिड़ियों की चुलबुल से वातावरण गुंजित रहता था।

पता नहीं कब बरगद का पेड़ बूढ़ा हो गया, बचे हुए सिर्फ 8-10 पत्ते हिल-डुल रहे थे। पुरानी यादों की संपदा साथ में लिए वह जर्जर अवस्था में खड़ा था। इतने में गाँव के कुछ शरारती लड़के खेलते-खेलते पेड़ की तरफ आ गए। न जाने उन्हें क्या सूझी कि हाथों में पत्थर उठा लिए और पेड़ के उन बचे हुए 8-10 पत्तों को गिराने के लिए निशाना साधने लगे। पेड़ ने देखा तो कांपने लगा, जीवन के आखिरी वर्षों में पत्थरों की मार सहने की शक्ति भी नहीं बची थी। अपनी दुर्दशा की कल्पना करते-करते वह सिहर उठा और हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाते हुए कहने लगा-प्यारे बच्चों! अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जिन्दगी के सिर्फ 8-10 वर्ष बचे हैं। मैं शांति से जीना चाहता हूँ। मुझ पर रहम करो, पत्थर मत मारो। बच्चों के हाथ जहाँ के तहाँ रुक गए। वे पेड़ की बातें ध्यान से सुनने लगे।

पेड़ ने कहना शुरू किया- मेरे प्यारे बच्चों! आपके घर में भी आपके बूढ़े माता-पिता रहते हैं वे भी अपने जीवन के आखिरी दिनों में सुख-शांति से जीने की तमन्ना रखते हैं। उम्र की छोटी होती जा रही डोर ने उनकी जरूरतें कम कर दी हैं। उनकी इच्छा का खयाल रखना। तुम्हें याद है, तुम्हारे माता-पिता तुम्हें बचपन में घोड़ा बनकर अपनी पीठ पर बैठाकर खिलाते थे। अपने कंधों पर बिठा कर मेले में घुमाते थे। इस तरह वे तुम्हारी हर हसरत/ हर जिद्द पूरी करते थे। क्योंकि वे तुम्हें हमेशा खुश देखना चाहते थे। उन्हें तुम्हारी खुशी में अपनी खुशी नजर आती थी। अब तुम्हारी बारी है उन्हें खुश रखना, आदर देना, उनसे मीठा बोलना। अपनी कड़वी बोली के पत्थरों से उनके हृदय को छलनी मत करना। घायल मत करना, यह बात घर के हर सदस्य को बताना। उनके उपकार को याद करते रहना।

-52, कालाथी पिल्लई स्ट्रीट, चेन्नई-79

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

प्राचीनाचार्य विरचित आराधनापताका में समाधिमरण की अवधारणा (समालोचनात्मक अध्ययन)- साध्वी डॉ. प्रतिभा जी, ***सम्पादक***- डॉ. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- (1) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर-465001 (म.प्र.) (2) गुरु पुष्कर साधना केन्द्र, सेक्टर-3, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.), ***पृष्ठ***- 8+225, ***मूल्य***-300 रुपये, सन् 2010

समाधिमरण का प्रतिपादन जैन धर्म की एक प्रमुख विशेषता है। इसकी चर्चा आचारांग, स्थानांग, समवायांग, उत्तराध्ययन आदि श्वेताम्बर आगमों में, मूलाचार, भगवती आराधना, रत्नकरण्डक श्रावकाचार आदि दिगम्बर ग्रन्थों में तथा आतुर प्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, संस्तारक प्रकीर्णक, मरण-विभक्ति, चतुःशरण प्रकीर्णक, वीरभद्रकृत आराधना-पताका आदि प्रकीर्णक साहित्य में हुई है। प्रकीर्णक-साहित्य में समाधिमरण का विवेचन प्रमुख विषय है। इन्हीं में प्राचीनाचार्य रचित आराधना-पताका का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिनचन्द्रसूरिकृत संवेगरंगशाला, हेमचन्द्र विरचित योगशास्त्र आदि ग्रन्थों में भी समाधिमरण अथवा पण्डितमरण की चर्चा है। साध्वी प्रतिभाजी ने "प्राचीनाचार्य विरचित आराधनापताका में समाधिमरण की अवधारणा का समालोचनात्मक अध्ययन" विषय पर डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में पी-एच्.डी उपाधि प्राप्त की है। यह ग्रन्थ उसी का प्रकाशित रूप है। सात अध्यायों में विभक्त इस ग्रन्थ में आराधना पताका की गाथाओं की श्वेताम्बर एवं दिगम्बर ग्रन्थों से तुलना की गई है। आराधनापताका के अन्तर्गत उपलब्ध समाधिमरण की अवधारणा एवं प्रक्रिया का विवेचन किया गया है। समाधिमरण की अन्य धार्मिक परम्पराओं से तुलना प्रस्तुत की गई है तथा आराधकों की कथाओं का भी तुलनात्मक विवरण दिया गया है। सप्तम अध्याय में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाधिमरण की अवधारणा की उपादेयता पर विचार करते हुए उसे आत्महत्या, सतीप्रथा, करुणा, मृत्यु आदि से भिन्न प्रतिपादित किया गया है। इस ग्रन्थ से आराधना पताका का महत्त्व भी

उद्घाटित हुआ है।

रत्नप्रभसूरिकृत रत्नाकरावतारिका के सन्दर्भ में बौद्धदर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन- साध्वी ज्योत्स्ना जी, ***सम्पादक***- डॉ. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- (1) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर-465001 (म.प्र.) (2) श्वे. स्थानकवासी जैन संघ, शुजालपुर (म.प्र.), ***पृष्ठ***- 408, ***मूल्य***-350 रुपये, सन् 2010

भारतीयदर्शन में जैन दार्शनिक ग्रन्थों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इनमें विभिन्न दर्शनों की मान्यताओं को प्रस्तुत कर उनका खण्डन किया गया है। इस दृष्टि से सिद्धसेन, समन्तभद्र, जिनभद्रगणी, भट्ट अकलंक, हरिभद्र सूरि, अभयदेवसूरि, प्रभाचन्द्र, वादिदेवसूरि, हेमचन्द्र, यशोविजय आदि दार्शनिकों की कृतियाँ महत्त्वपूर्ण हैं।

रत्नप्रभसूरि (12 वीं शती) की रत्नाकरावतारिका भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कृति है जो वादिदेवसूरि के प्रमाणनयतत्त्वालोक पर विशिष्ट टीकाग्रन्थ है तथा प्रतिपादन की दृष्टि से स्वतन्त्र मौलिकग्रन्थ की भांति प्रतीत होता है। यह मूलतः जैनन्याय का ग्रन्थ होकर भी चार्वाक, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा, वेदान्त आदि दर्शनों की समीक्षा करता है। साध्वी ज्योत्स्नाजी ने जैन मूर्धन्य मनीषी विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में 'रत्नाकरावतारिका में बौद्धदर्शन के विविध मन्तव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर जैन विश्वभारती, लाँडनू से पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की, उसी का यह संशोधित एवं प्रकाशित स्वरूप है। ग्रन्थ में कुल 16 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में जैन न्यायशास्त्र की विकासयात्रा के साथ विभिन्न आचार्यों द्वारा विहित बौद्धदर्शन की समीक्षा को प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय रत्नप्रभूसूरि का परिचय प्रदान करता है। तृतीय से सप्तम अध्यायों में क्रमशः क्षणिकवाद, अनात्मवाद, शब्द एवं अर्थ सम्बन्धी मत, अपोहवाद एवं निर्विकल्पकप्रत्यक्ष की समीक्षा की गई है। अष्टम अध्याय में प्रत्यभिज्ञा, तर्क एवं स्मृति का प्रामाण्य सिद्ध किया गया है। 9 से 16 अध्यायों तक प्राप्यकारिता, सामान्य, त्रिलक्षण हेतु, पक्ष की आवश्यकता, शून्यवाद, नित्यानित्यता, पक्षाभास, हेत्वाभास, बाह्यार्थ-निषेध, प्रमाणफल आदि की चर्चा है। जैन न्याय एवं भारतीय दर्शन के समीक्षात्मक अध्ययन की दृष्टि से ग्रन्थ की उपयोगिता असंदिग्ध है।

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (17)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह पाँचवी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 सितम्बर 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 191 से 240 तक से प्रश्न)

(अ) ये वाक्य किसने किसको कहे ?

1. क्या आर्जव राष्टकूट और उनकी पत्नी रेवती जीवित है ?
2. मुझसे अवस्वापिनी और तालोद्घाटिनी विद्याएँ प्राप्त कर लीजिए।
3. क्या मेरा आपके साथ कोई पूर्व भव का सम्बन्ध है।
4. यह वही भवदेव का जीव विद्युन्माली देव है।
5. तुम्हारें पैरों नीचे रहने वाला यह पादपीठ दे दिया जाय।
6. अब मैं परलोक के लिए प्रयाण करने वाला हूँ।
7. हमें अब केवल आपकी अनुमति की ही आवश्यकता है।
8. पुण्य के प्रताप से तुम्हारे घर पुत्र का जन्म हुआ है।
9. जसमित्र के कथनानुसार मैंने स्वप्न में केसरीसिंह को देखा है।
10. आपके शिष्य श्रमण समूह में यह महान् तेजस्वी युवा-श्रमण कौन है ?

(आ) 'क' अक्षर से रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए, इसका उत्तर कमल

का फूल बना है उसमें लिखिए।

11. विद्युन्माली देव का शरीर अत्यन्त तेजस्वितापूर्ण......प्रतीत हो रहा है।
12. नागिला........साधना-पथ पर चलती हुई आपकी तरह भूल नहीं कर सकती।
13. उससे आपको मेरे........पर और अपनी कार्य-सिद्धि पर विश्वास हो जाएगा।
14. .... धुनों के साथ जम्बूकुमार की अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई।
15. नवजात शिशु का वर्ण........ कुसुम-केसर के समान कमनीय था।
16. राजन्! मैं यथा शक्ति पूरा प्रयास........।
17. मुझे मेरे....... का और सत्पथ का बोध हो गया।
18. .... के बन्धनों को काटकर श्रमणधर्म में दीक्षित हो, जो वीरता का परिचय दिया है।
19. आप तो मुझे छोड़ कर जा रहे हैं, लेकिन मैं........नहीं हूँ।
20. गर्भवास के घोर दुःख की.....तक नहीं की जा सकती।
21. तालोद्घाटिनी विद्या के प्रयोग से सभी......... के ताले खोल डाले।
22. उसे अनेक प्रकार की वानर..........सिखाकर प्रदर्शन करने लगा।
23. उसकी तृष्णा एवं तपन किंचित्मात्र भी .... नहीं हुई।
24. उत्कृष्ट कोटि के सुंगधित द्रव्यों की महक से........चमक रहा था।
25. पुत्र मैं इस आशा को संजोये बैठी हूँ कि एक बार वर-वेश में तुम्हारा मुख........ देखूँ।

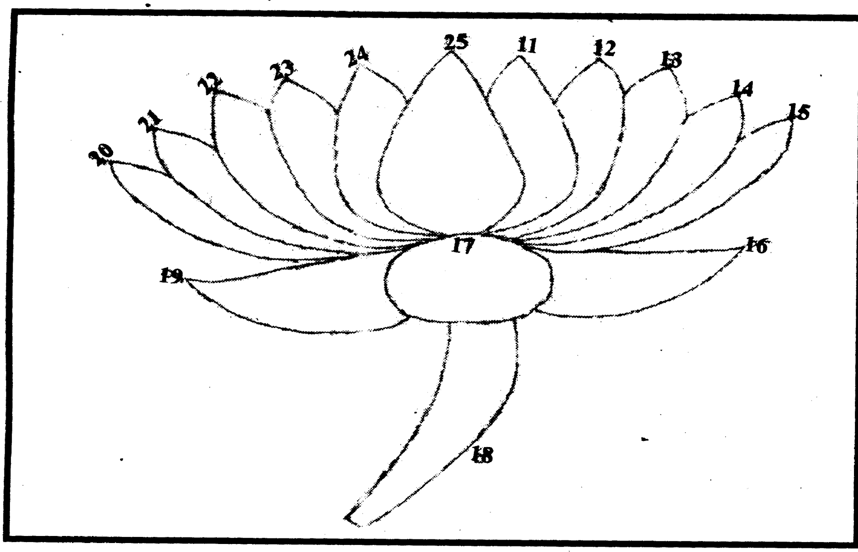

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (15) का परिणाम

जिनवाणी जून, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 266 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती किरण कुम्भट-जोधपुर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- सुनीता कांकरिया-अहमदाबाद (गुजरात)

तृतीय पुरस्कार-श्री नथमल कोठारी-बालोद, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. मोनिका जैन-कपूरथला (पंजाब)
2. किरण प्रमोद तातेड़-देवास (मध्यप्रदेश)
3. डॉ. पदमचन्द मुणोत-जयपुर (राज.)
4. आर. चन्द्रा बोथरा-चेन्नई (तमिलनाडू)
5. नीता कांकरिया-दौड़बालापुर (कर्नाटक)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati (M.H), Abha Jain-Alwar, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Akhilesh-Jodhpur, Anil kumar Jain-Kota, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anita Jain-Sawai Madhopur, Anjana Rajendraji Jain-Dewas (M.P), Anu Jain-Hoshiarpur, Anurag Surana-Ajmer, Aruna Jain-Hosiarpur Punjab, Ashish Jain-Sawai Madhopur, Babulal Jain-Mansarovar Jaipur, Basanti Champalal Bhatewar-Dhulia (M.H), Bhagwan Raj Singhvi-Pali Marwar, Bharat Surana-Bikaner, Bhavika Shah-Belgaum, Chandan Mal Gugalia-Pali Marwar, Chandan Mal Parlecha-Jodhpur, Chandra Pokharna-Ajmer, Chetana B Bothra-Mumbai, Deepa Abhinandanji kothari-Ahemadnagar, Deepali Singhvi-Pali Marwar, Deepika Bagmar-Chennai, Dhani Devi Ranka-Vapi, Valsad, Dharmesh Punamiya-Pali Marwar, Divya Daga-Jaipur, G.C.Kothari-Ajmer, Garv Lunkad-Kota, Heera Rameshji karnawat-Ahamadnagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Hemlata Kherada-Bhilwara, Indira Jain-Kawardha (C.G), Indu Kamleshji jain-Mumbai, Jaimala Jain-Sawai Madhopur, Janesh Surana-Pali Marwar, Javerr Narendra Shah-Belgaum, Jaya Mohanlalji Bhandari-Pune, Jayamala kankariya-Pali Marwar, Johari Mal Chajjer-Jodhpur, Jyoti Lodha -Nagpur, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamala Devi Satia-Ajmer, Kamala Modi-Jodhpur, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Surana-Jodhpur, Kamla Surana-Pali Marwar, Kanak Bader-Delhi, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kapil Kothari-Jaipur, Kavita Dani-Chittorgarh, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Jain Choradiya-Raynandgaon C.G, Kiran Kothari-Jaipur, Kishor Munisa-Bikaner, Komal Ankur Kothari-Baroda, Kumkum Jain-Jaipur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalitha Gadiya-Hyderabad, Leelabai Prakashchandji Munot-Ichalkaranji, Madhu Parmodji Bora-Ichalkaranji, Mamta Bhandari-Nagaur, Manila Parakh-Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Devi Surana-Bikaner, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Jain-Karauli, Manju Kanstiya-Kolkata, Manju Palrecha-Jodhpur, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, Manjula vasantkumarji Jain-Mumbai, Manoj Kothari-Udaipur, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Chordia-Chennai, Meena Jain-Sawai Madhopur, Meena Vijay Bora-Mumbai, Meenabai Rajkumari Nahar-Ichalkaranji, Meenu Jain-Chennai, Milap Parasmal Lunawat-Ahmedabad, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Naman Jain-Ajmer, Narendra Gopichand Bamb-Bhayandar, Neelam Jain-Ajmer, Neera Bhandari-Beawar, Neeti Sanghvi-Badnawar, Neetu Gulecha-Hyderabad, Neha Jain-Sawai Madhopur, Nenchand Bafna-Jodhpur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Chopra-Jabalpur M.P, Nirmala Hamirmal Surana-Bikaner, Nirmala Hirawat-Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Kolhapur, Nisha Jain-

Aligarh, Tonk, Nisha Lunkad-Kota, Nutan Ajit Bhandari-Ichalkaranji, Padam Chand Agarwal-Jaipur, Padma R Bohra-Raichur, Pista Golecha-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Poonam Jain-Faridkot, Punjab, Prabha Gulecha-Bangalore, Prabha Kishan Kataria-Mumbai, Prabha P Sancheti-Amravati (M.H), Prakash Chand Jain-Kawardha (C.G), Pramila Babulalji Pokarna-Dhulia (M.H), Pramila Bohra-Jaitaran, Pramila kankariya-Jodhpur, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Prasan Kothari-Jodhpur, Preeti khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Priyanka mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pukhraj Sethiya-Ajmer, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Ajmer, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Jain-Pali Marwar, Pushpa Lalith Bohra-Secundrabad, Pushpa M Golecha-Ajmer, Pushpa Navlakha-Jaipur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Rajani Jain-Sawai Madhopur, Rajendra Kumar Chopra-Jabalpur M.P, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rajkumari Narendraji Navlakha, Rajul Rameshji Kothari-Dhulia (M.H), Rakesh Kankariya-Jodhpur, Rakhi Jain -Dooni (Tonk) Rajasthan, Rashi Navlakha-Jaipur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Ratan Karnawat-Jaipur, Reema Jain-Ludhiana, Punjab, Rekha Kankariya-Pali Marwar, Rekha Kothari-Ajmer, Rekha Surana -Nagaur, Rikab Raj Bohra-Delhi, Rishabh Jain-Bundi, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sagarmalji Indermalji Jain-Dhule, Sangeetha P Baid-Chennai, Sapna R Jain-Amravati (M.H), Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Sarla Golecha-Beawar, Sarla Kankariya-Jalgaon, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmalji Runwal-Dhulia (M.H), Seema Dhing-Udaipur, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Shashank Choudhary-Jaipur, Sheela Surana-Jaipur, Shobha D Kothari-Dhule, Shobha N Gugale-Ichalkaranji, Shobha Nahar-Secundrabad, Shobha Sagarmalji Kothari-Dhule, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Sonam Golecha-Beawar Ajmer, Subhash M Dhadiwal-Mumbai, Sudarshan Surana-Bikaner, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Suman Daga-Bhopal, Sunayana Gelra-Borawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Navlakha-Kota, Sunita Oswal-Jaipur, Sunitha Y Singhvi-Chennai, Surekha Nemichandji Nahar-Jaipur, Suresh Chand Jain-Alwar, Suresh Kumar Sand-Pali Marwar, Surya Kala Bagmar-Chennai, Sushila Tater-Bhilwara, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Sweety Golecha-Beawar Ajmer, Tara Bafna-Chennai, Trupti P Bora-Ichalkaranji, Ugma Devi Duggar-Bangalore, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila kankariya-Jodhpur, Usha Praveenji Bardia-Dhulia (M.H), Usha Surana-Jaipur, Vandana Punamiya-Pali Marwar, Veena Tarun kumar Kimati-Neemuch M.P, Vibha Jain-Jodhpur, Vidhya Sanghvi-Badnawar, Vijaimal Mehta-Jodhpur, Vijay Laxmi-Ajmer, Vikas Bamb-Mumbai, Vimalabai Kankariya-Jalgaon, Vimla Bohra-Jaipur, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad.

24 अंक प्राप्तकर्ता– Ankit Chipad-Jaipur, Asha Dosi-Jaipur, Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Chandni Jain-Indore, Chandralata mehta-Dudu, Jaipur, Chinmay Jain-Durg (C.G), Jaya Bhandari-Beawar, kanchan Lodha-Nasik, Kumkum Jain-Sawai Madhopur, Lata Narendrakumar Jain-Jalgaon, Lata Satishji Aanchaliya-Dhulia (M.H), Leena Mahendra Jain-Chiplun, Ratnagiri, Manju Jain-Jaipur, Neelam Chipad-Dudu, Jaipur, Parasmal D Baghmar-Barmer, Pinky jain, Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Pramila Mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Mehta-Ajmer, Prasan Gang-Mumbai, Pratibha Pradeepji Gandhi-Pune, Prem kanta kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Priyanka Betala-Nagaur, Priyanka Jain-Jaipur, Renu Heerawat-Jaipur, Renumal Jain-Jodhpur, Sangita A Singavi-Nasik, Shanta Chumnji Pitaliya-Amravati (M.H), Shashikala Sakhlecha-Bangalore, Sheelu Hirawat-Jaipur, Shilpa Priteshji Surana-Jalgaon, Shilpa Surana-Ajmer, Sunita Doshi-Beawar, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Sushila Ranka-Jalgaon, Vivek Mehta-Dudu, Jaipur.

23 या इससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia (M.H), Gunmala Jain-Chittorgarh, Hajarimal jain-Durg (C.G), Hemlata Jain-Beawar, Naurat Mal Changailiya-Ajmer, Neelam Kankaria-Nagaur, Neelu Jain-Ludhiana, Punjab, Premlata Sand-Pali Marwar, Shakuntala Khushalchand Khivasara-Jalgaon, Shashikala P Lunawat-Nasik, Sugan Chand Chajjer-Jodhpur, Vijaya devi Bagmar, Indu Bohra-Ajmer, Jyoti Bhansali-Bangalore, Buddhi Prakash Jain-Bhesodamandi Mandsor, Abhay kumar Jain Patiala, Chandrakala Mehta-Bangalore, Sangita Ravindra Chhajed-Jalgaon, Madan Lal Jain, Sangeeta Darda-Jodhpur, Sushila Begani-Bikaner, Aruna katariya-Pali Marwar, Chukki Devi Darda-Jodhpur, Pushpa Lunawat-Nagaur, Shobha kawad-Pali Marwar, Sushila Gang-Jodhpur, Pratima Jain-Jodhpur, Ranulal Kocchar-Nasik.

अखिल भारतीय उत्तराध्ययन सूत्र स्मरण प्रोत्साहन योजना

श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगाँव द्वारा अखिल भारतीय उत्तराध्ययन स्मरण प्रोत्साहन योजना संचालित की जा रही है। इसमें उत्तराध्ययन सूत्र को कण्ठस्थ करने वालों के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार निम्नानुसार है-

क्र.स.	उत्तराध्ययन सूत्र	प्रोत्साहन राशि	समयावधि
1.	1 से 10 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कंठस्थ	1000 रु.	1 वर्ष
2.	1 से 22 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कंठस्थ	5000 रु.	1 वर्ष
3.	1 से 36 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कंठस्थ	10,000 रु.	1 वर्ष

(कण्ठस्थ करते समय गाथा के भावार्थ को ध्यान में रखेंगे तो गाथा शीघ्र याद होगी और लम्बे समय तक याद रहेगी, जिससे भावविशुद्धि बढ़कर विशेष निर्जरा होगी, अतः भावार्थ ध्यान में लें।)

परीक्षा मौखिक ली जाएगी, जिसमें उच्चारण शुद्धि पर विशेष ध्यान रखा जायेगा। परीक्षा अक्टूबर 2012 में संभावित है। परीक्षा के निश्चित समय और स्थान की सूचना समय पर प्रेषित की जायेगी। यह योजना नया कंठस्थ करने वालों के लिए है, जो भी इसमें भाग लेना चाहे, निम्न प्रारूप में अपना आवेदन पत्र 31 अक्टूबर 2011 तक सम्पर्क सूत्र के पते पर भिजवाएँ।

आवेदन का प्रारूप

1. पूरा नाम.........................पिता/पति का नाम...................उम्र........
2. पत्र व्यवहार का पूरा पता ....
   ....पिन कोड नं.............................
3. फोन नं. .... मोबाईल नं. ....
4. जिनके पास आप सूत्र की गाथाएँ ले रहे हैं उनका नाम व विवरण ....
   ....
5. उस कार्यकर्त्ता का नाम, पता व फोन नं. जो यह जानते हैं कि आपने नये सिरे से पहली बार गाथाएँ कंठस्थ करना चालू किया है:...
   ....
   ....
6. आपके नजदीकी बड़े शहर का नाम जहाँ आप परीक्षा देने समय पर पहुँच सकते हैं।
   ....

दिनाँक...../...../........ नाम व हस्ताक्षर

सम्पर्क सूत्रः- **रतनलाल सी. बाफणा ज्वेलर्स**, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगाँव-425001, फोन नं.-0257-2223903

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के त्रिदिवसीय कार्यक्रम

शुक्रवार, दि. 16 सितम्बर, 2011

अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक

समय : अपराह्न 1.30 बजे

श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन समय : रात्रि 8 बजे

शनिवार, दि. 17 सितम्बर, 2011

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा

समय : अपराह्न 1.30 बजे

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् का सम्मान कार्यक्रम एवं चिन्तन बैठक समय : रात्रि 8 बजे

कार्यक्रम स्थल

सामायिक-स्वाध्याय भवन,
शक्तिनगर छठी गली, पावटा सी रोड, जोधपुर

रविवार, दि. 18 सितम्बर, 2011

सम्मान समारोह एवं गुणी अभिनन्दन कार्यक्रम

समय : अपराह्न 1.30 बजे

कार्यक्रम स्थल

जयनारायण व्यास टाऊन हॉल, हाईकोर्ट रोड, जोधपुर

उपर्युक्त कार्यक्रमों में पधारने पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 12 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त होगा। अपने पधारने की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्र में से किसी एक को अवश्य करें-

1. श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, अध्यक्ष-9413329762, 2. श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, मंत्री-9414132521, 3. श्री भंवरलाल जी चौपड़ा (संयोजक-चातुर्मास व्यवस्था समिति)-9530346231, आवास व्यवस्था : 4.श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी, संयोजक-9828197000, 5.श्री महावीरजी बोथरा, सह संयोजक-9828582391, पूछताछ कार्यालय : श्री सम्पतराज जी बोथरा-0291-6419979

समाचार-विविधा

चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश एवं सतत धर्माराधन

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पावटा,जोधपुर में धर्माराधन का अपूर्व उत्साह

प्रवचन में श्रोताओं की विशाल उपस्थिति

तपाराधन की सततता, दशाधिक मासखमण की सम्भावना

बालकों का प्रति रविवार संस्कार शिविर

संघशिरोमणि-संघनायक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 का पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में 09 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। पूर्व में **साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा** का पावटा स्थित सिद्धान्तशाला में मंगलप्रवेश 3 जुलाई को हो चुका था।

आचार्यप्रवर 9 जुलाई को प्रातः महिला बाग से मूथा जी का मंदिर पधारे। यहाँ व्याख्यान के पश्चात् पूर्व में किसी प्रकार की घोषणा नहीं होने पर भी कर्णाकर्णि श्रावकों के आनुमानिक समाचारों के आधार पर पाली, मेड़ता, पीपाड़, भोपालगढ़, गोटन, बालोतरा, ब्यावर आदि समीपवर्ती एवं स्थानीय भाई-बहिन दोपहर से ही मूथा जी के मन्दिर पहुँचने लगे और देखते ही देखते विशाल संख्या में श्रद्धालु एकत्रित हो गये। अपराह्न 2.20 पर गुरुदेव ने अपनी सन्त-मण्डली के साथ मूथाजी के मन्दिर से विहार किया। पीछे-पीछे संघ-सदस्य देव-गुरु-धर्म की जय-जयकार के नारों के साथ विहार-सेवा का लाभ ले रहे थे। मार्ग में जैन ही नहीं, अपितु जैनेतर भाई-बहिन भी बिना आडम्बर के इस विहार दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित हो गये। जय महावीर, जय गुरु हस्ती, जय गुरु हीरा, जय गुरु मान, जैन धर्म की जय के जयकारों के साथ पूज्य गुरुदेव का लगभग 3 बजे पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में विशाल जनमेदिनी के साथ चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। मंगल-प्रवेश के पश्चात्

आयोजित सभा में कतिपय श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव का भाव-भीना स्वागत करते हुए धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप करने की बात रखी। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. ने जोधपुर को महान् आचार्यों की साधनाभूमि बताते हुए उपस्थित जनसमुदाय को चातुर्मासकाल में अधिक से अधिक धर्म-ध्यान, त्याग-तप एवं साधना-आराधना करने की प्रभावी प्रेरणा की।

17 वर्षों के बाद परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर का चातुर्मास प्राप्त होने पर सूर्यनगरी जोधपुर के संघ-सदस्यों में अपार उत्साह नज़र आ रहा है। अपने आराध्य गुरु भगवन्तों एवं महासती मण्डल की सेवा में निरन्तर दर्शनार्थ उपस्थित होकर सैकड़ों की संख्या में भाई-बहिन नियमित रूप से प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, ज्ञानचर्चा, सायंकालीन प्रतिक्रमण जैसे विविध अनुष्ठानों में भाग लेकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना कर रहे हैं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त के चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश के साथ ही तेला, उपवास, आयम्बिल एवं एकासने की लड़ी निरन्तर चल रही है। प्रतिदिन एकासन, उपवास, आयम्बिल, नींवी, बेले, तेले, दया-संवर आदि के पच्चक्खाण अच्छी संख्या में हो रहे हैं। चार, पांच, छः, सात की तपस्याएं भी निरन्तर चल रही हैं। अभी तक लगभग 30 अठाइयाँ हो चुकी हैं। 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17 दिनों तक की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुई हैं। लगभग 10 तपस्वी मासखमण की ओर बढ़ रहे हैं। बाह्य तप के साथ पूज्य गुरुदेव ने अन्तरंग तप की विशेष प्रेरणा की, जिसके फलस्वरूप अनेक भाई-बहिनों ने एक माह, एक वर्ष तथा आजीवन क्रोध कषाय-त्याग का नियम ग्रहण किया है। चातुर्मासिक पक्खी एवं गुरुपूर्णिमा को दो धर्मचक्र की आराधना हुई। पावटा स्थित प्रवचन हॉल प्रतिदिन पूरा भरा रहता है। रविवार एवं विशेष पर्वों पर नीचे के हॉल के साथ ही ऊपर के हॉल में भी प्रवचन चलता है। प्रत्येक रविवार को प्रातः 6.30 से 7.30 बजे तक तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. शुद्ध सामायिक की आराधना के साथ ध्यान करवाते हैं, जिसमें लगभग 600 साधकों की उपस्थिति रहती है। विशेषकर युवा वर्ग में ध्यान की विशेष रुचि देखी जा रही है। नियमित रूप से युवक अच्छी संख्या में सामायिक का लाभ ले रहे हैं।

एक दिन व्याख्यान में पधारने वाले अभिभावकों से परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रेरणा करते हुए कहा कि आप लोग व्याख्यान में पधारते हैं।

आपके बच्चों को भी रविवार का अवकाश रहता है। अतः आप व्याख्यान के समय उनको भी साथ लेकर पधारें, ताकि उनको भी गुरु-भगवन्तों के दर्शन-वन्दन के साथ ज्ञानार्जन का लाभ प्राप्त हो सके। प्रेरणास्वरूप बाल संस्कार शिविर के रूप में कार्यक्रम रविवार, 17 जुलाई से प्रारम्भ हुआ। 17 जुलाई को लगभग 350 शिविरार्थियों ने तथा 24 जुलाई को 500 शिविरार्थियों ने भाग लिया। 31 जुलाई रविवार के दिन यह संख्या 575 पहुँच गयी है। रविवार को आने वाले बालक-बालिकाओं को हमारे प्रबुद्ध श्रावक-श्राविका एवं युवक संघ के सदस्य उन्हें संभालने के साथ व्यवस्थित रूप से ज्ञानार्जन की व्यवस्था करते हैं। बच्चों के लिए अल्पाहार एवं पुरस्कार की व्यवस्था भी स्थानीय संघ द्वारा की जा रही है। बाल संस्कार शिविर के बच्चें ज्ञानार्जन के साथ गुरु-दर्शन एवं वन्दन का लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं।

26 से 30 जुलाई 2011 तक पंचरंगियों का आयोजन भाइयों एवं बहिनों में हुआ। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने पंचरंगी में भाग लिया। पंचरंगी के प्रसंग को देखते हुए श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने पाँचों दिन परीक्षाओं का आयोजन किया, जिसके विषय थे- 25 बोल, 67 बोल, सामान्य प्रश्नोत्तरी, 'स' से उत्तर दीजिए एवं आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के जीवन-दर्शन पर आधारित प्रश्नोत्तरी। परीक्षा कार्यक्रम में काफी भाई-बहिनों ने भाग लेकर अपनी ज्ञान अभिवृद्धि की। पंचरंगी कार्यक्रम के तहत 28 जुलाई को घोर तपस्वी पूज्य श्री सागरमल जी म.सा. का पुण्य-दिवस तप एवं त्याग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गुरुदेव ने सामूहिक नींवी करने की प्रभावी प्रेरणा की, जिसके फलस्वरूप लगभग 250 नीवी हुईं। 29 जुलाई को रत्नसंघीय शील आराधिका महासती श्री छोगा जी म.सा. का जन्म-दिवस भी त्याग-तप के साथ मनाया गया। इस दिन अधिकांश भाई-बहिनों तथा शिविर में पधारे स्वाध्यायी बन्धुओं ने दया एवं संवर व्रत की आराधना की। 30 जुलाई को आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 85वींपुण्य-तिथि धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप के साथ मनाई गई।

24 से 30 जुलाई 2011 तक गुरुदेव के पावन सान्निध्य में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा सप्तदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 140 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। सभी स्वाध्यायियों ने आचार्यप्रवर, संतमुनिराजों एवं महासती मण्डल से ज्ञानार्जन किया। शिविर में पधारे वरिष्ठ प्रशिक्षकों ने भी अपने अनुभव एवं चिन्तन के

आधार पर कुशलतापूर्वक अध्यापन करवाया।

धर्म-आराधना करने वाले श्रावक-श्राविकाओं एवं बाहर गांव से पधारने वाले अतिथियों के स्वागत-सत्कार में संघ एवं संघ के सभी कार्यकर्ता समर्पित रूप से अपनी महनीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। सभी कार्यकर्ताओं के मन में चातुर्मास के प्रति उत्साह की भावना है। वहीं धर्मध्यान एवं तपाराधना में भी भाई-बहिन बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। श्रावक एवं श्राविकाएँ ही नहीं हमारे संत एवं सतीवर्ग में भी तपस्या की अच्छी आराधना चल रही है। श्रावकबन्धु आचार्यप्रवर की सेवा में तथा श्राविका बहिनें शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में साधना-आराधना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55-56, जैन बुक डिपो वाली गली, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर, फोन नं. 0291-6419979

सम्पर्क सूत्र-श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना-9413329762, श्री भंवरलाल जी चौपड़ा-9530346231

उपाध्यायप्रवर का नागौर में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश एवं धर्माराधन का ठाट

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 आचीणा से मध्यान्तर के ग्रामों को सिंचित करते हुए 2 जुलाई 2011 को नया दरवाजा के बाहर, नागौर पधारे। तत्पश्चात् 3 जुलाई 2011 को प्रातः लगभग 9.15 बजे उपाध्यायप्रवर ने अपनी सन्त-मण्डली सहित नया दरवाजा से विहार किया। विहार के समय जोधपुर, पाली, मेड़ता, भोपालगढ़, गोटन, बालोतरा, ब्यावर आदि अनेक समीपवर्ती क्षेत्रों से पधारे हुए एवं स्थानीय भाई-बहिनों की विशाल उपस्थिति रही। सभी संघ-सदस्य कतारबद्ध एवं अनुशासित होकर जय-जयकार के जयनादों के साथ विहार-सेवा का लाभ ले रहे थे। लगभग 9.30 बजे उपाध्यायप्रवर का अपनी सन्त-मण्डली सहित गणेश चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। उपाध्यायप्रवर

के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश से नागौरवासियों के चेहरे प्रफुल्लित थे। **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा** 4 का 6 जुलाई को जैन उपासरा, सुराणों की पोल, नागौर में चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ।

उपाध्यायप्रवर एवं महासती मण्डल का चातुर्मास प्राप्त होने से नागौरवासियों में अत्यन्त उत्साह है। स्थानीय भाई-बहिन प्रातः प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर शास्त्र वाचन एवं ज्ञानचर्चा तथा सायंकालीन प्रतिक्रमण जैसे अनुष्ठानों में भाग लेकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना कर रहे हैं। चातुर्मास के मंगल-प्रवेश के साथ ही तेला, उपवास एवं आयम्बिल की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को सामूहिक एकासन एवं दयाव्रत का आयोजन चल रहा है। तपस्या के क्रम में अब तक ग्यारह की 1 , अठाई 4 एवं सात की 1 तपस्या हुई है तथा अच्छी संख्या में तेले की आराधना हुई है। पंचरंगी का आयोजन भी हुआ है। धार्मिक पाठशाला निरन्तर 3 से 4 बजे तक चल रही है। शास्त्रवाचन 2 से 3 बजे तक होता है। अनेक भाई-बहिन एवं बच्चे सामायिक, प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। बाहर से पधारे हुए दर्शनार्थी भाई-बहिन भी दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ ले रहे हैं। यहां भाई लोग उपाध्यायप्रवर की सेवा में तथा बहनें महासतीवृन्द की सेवा में साधना-आराधना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। दोनों स्थानों पर रात्रिकालीन ज्ञानचर्चा एवं संवर-पौषध की आराधना चल रही है।

चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, गणेश चौक, लोहियों के चौक के पास, नागौर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-श्री भंवरलाल जी कांकरिया, 9414216594, श्री सुरेन्द्र जी सुराणा, 9414118342

महासती मण्डल का चातुर्मासार्थ प्रवेश

मसूदा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का सदर बाजार स्थित स्थानक में 3 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। मंगल प्रवेश के साथ ही धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की आराधना हो रही है। एकासना, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही हैं। पांच, छः, सात की तपस्या भी चल रही हैं। प्रार्थना एवं व्याख्यान में भी अच्छी उपस्थिति रहती है। **सम्पर्क सूत्र**- गजराज जी नाहर, 01462-266821, पारसमल जी गांग, 01462-266866

भोपाल- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9 का भोपाल कोहेफिजा कॉलोनी, भोपाल में 3 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। प्रातःकालीन प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर चौपाई, ज्ञानचर्चा एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण जैसे धार्मिक अनुष्ठानों में सभी भाई-बहिन उत्साह से भाग ले रहे हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तेले की लड़ी चल रही है। 27 से 31 जुलाई तक पांच दिवसीय नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। इसके अतिरिक्त दया, एकासन, आयम्बिल, संवर, दया आदि धर्माराधना अच्छी चल रही है, तपस्याएं भी चल रही है। **सम्पर्क सूत्र-** यशवन्त सिंह जी बांठिया, 9425601656, संजय जी नाहर, 9424410955

पाली-मारवाड़- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 का सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में 6 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही आयम्बिल एवं एकासन की लड़ी चल रही है। अब तक एक पंचरंगी का आयोजन हुआ है। दो बहनें निरन्तर दयाव्रत की आराधना कर रही हैं, तीन भाई निरन्तर संवर व्रत की आराधना कर रहे हैं। दस पच्चक्खाणों का आयोजन निरन्तर चल रहा है। उपवास, बेले, तेले की भी आराधना हुई है। व्याख्यान के पश्चात् प्रतिदिन नवकारमंत्र का जाप चल रहा है। सामूहिक तेले की भी आराधना हुई है। दोपहर में भगवती सूत्र की वाचना चल रही है। प्रातः प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानध्यान एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण में भाई-बहिन उत्साह से भाग ले रहे हैं। **सम्पर्क सूत्र-** रूपकुमार जी चौपड़ा, 9414122304, ताराचन्द जी सिंघवी, 02932-250021

मालवीय नगर जयपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 का जैन स्थानक मालवीय नगर, जयपुर में 6 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। मालवीय नगर क्षेत्र का यह प्रथम चातुर्मास होने से स्थानीय भाई-बहिनों में अच्छा उत्साह है। चातुर्मास का प्रारम्भ धर्मचक्र से हुआ, जिसमें 42 बहिनों ने भाग लिया, बयालीस में एक बेला तथा एक तेला था। अब तक पन्द्रह, अठाई के पच्चक्खाण हुए हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेले की लड़ी चल रही है। एकासन के मासखमण चल रहे हैं। एक पचरंगी का आयोजन हुआ, जिसमें 25 बहिनों ने भिक्षुदया भी की। प्रातः भगवतीसूत्र व प्रथम कर्मग्रन्थ का वाचन चल रहा है। प्रवचन के पश्चात् एवं दोपहर में भाई-

बहिन सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल लगन व उत्साह के साथ सीख रहे हैं। **सम्पर्क सूत्र-** प्रमोद जी मोहनोत, 9829052094, पूनमचन्द जी भण्डारी, 9314566796

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 का श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत स्वाध्याय भवन में 3 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही एकासना, उपवास, तेले की लड़ी चल रही है। 20-25 भाई-बहिनों के एकान्तर चल रहे हैं। एक पचरंगी एवं एक धर्मचक्र की आराधना हुई है। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिताओं का आयोजन चल रहा है। प्रार्थना, प्रवचन, चौपाई में अच्छी उपस्थिति रहती है। **सम्पर्क सूत्र-** छगनमल जी मुथा-02930-233045, सुमतिचन्द जी मेहता-9414462729

भोपालगढ़- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का जैन स्थानक पुराना उपासरा में 4 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही बेले-तेले की लड़ी चल रही है। आठ बहनें एकान्तर तप कर रही हैं। एक नौ की तपस्या हुई है। प्रार्थना के बाद नवयुवक मण्डल के सदस्य ज्ञानार्जन कर रहे हैं। दोपहर में प्रश्नव्याकरण का वाचन चल रहा है। प्रवचन में विपाकसूत्र एवं समरादित्य चारित्र का वाचन चल रहा है। दोपहर में लगभग 40 बच्चे सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल सीख रहे हैं। 10-15 श्राविकाएँ भक्तामर एवं दशवैकालिक के चार अध्ययन कण्ठस्थ सीख रही हैं। **सम्पर्क सूत्र-**शिम्भुलाल जी चोरडिया-9414672678, सोहनलाल जी बोथरा-9414601024

बजरिया, सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 का सामायिक-स्वाध्याय भवन, बजरिया में 4 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, त्याग-तप की प्रभावना चल रही है। 'बने बहुश्रुता श्राविका', 'युवा कदम स्थानक की ओर', स्वाध्यायी संगोष्ठी, पारिवारिक परिचय आदि कार्यक्रम चल रहे हैं। बेले, एकासन तथा आयम्बिल की लड़ी चल रही है। अभी तक तेला, पचोला, अठाई, नौ के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। 28 एकान्तर तप चल रहे हैं। प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर ज्ञानचर्चा, शास्त्रवाचना एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण में भाई-बहिन उत्साह से भाग ले रहे हैं। **सम्पर्क सूत्र-** गणपतलाल

जी जैन-9460317013, रूपनारायण जी जैन-9414030634

वैपेरी, चेन्नई- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 का मरलेचागार्डन, वेपेरी, चेन्नई में 6 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास के दिन अच्छी संख्या में श्रावकों ने तथा लगभग 200 श्राविकाओं ने रात्रि-संवर एवं पौषध व्रत की आराधना की। चातुर्मास के प्रारम्भ से "24 तीर्थंकर आराधना 20 बोलों की साधना" 24 दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन चल रहा है, जिसमें 97 साधक साधनारत हैं। पचोले की लड़ी जिसमें प्रतिदिन दो पचोला (एक श्रावक, एक श्राविका) एवं 8, 9,10, 11, 12, 16, 21 आदि की कई तपस्यों के पच्चक्खाण हो चुके हैं। बेयासना तथा आयम्बिल की लड़ी चल रही है। 'एक कदम धर्म की ओर' युवा जागृति अभियान कक्षा प्रतिदिन प्रातः 8 से 9 बजे तक निरन्तर रूप से चल रही है। प्रति रविवार 'मेरी समाधि, मेरे हाथ' दैनिक जीवन में आने वाली छोटी-छोटी समस्याओं का प्रश्नोत्तर द्वारा समाधान किया जाता है। 22 से 24 जुलाई तक 'मुझे स्वाध्यायी बनना है' स्वाध्यायी शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 85 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। 30 जुलाई को आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 85वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय 500 एकासन, तेले का सामूहिक आयोजन सुसम्पन्न हुआ। **सम्पर्क सूत्र-** झूमरमल जी बाघमार- 044-25384132, 9841089858, उगमचन्द जी कांकरिया-9444351245

जानकी नगर, इन्दौर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से ही आयम्बिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। एकान्तर तप भी चल रहे हैं तथा एकासन, आयम्बिल एवं ग्यारह-ग्यारह सामायिक के मासखमण चल रहे हैं। प्रतिदिन 3 से 4 बजे तक नवकार मंत्र का जाप चल रहा है। 8, 9, 11 एवं 20 की तपस्याएँ चल रही हैं। 24 से 29 जुलाई तक ग्यारह-ग्यारह सामायिक की पंचरंगी हुई, एक धर्मचक्र हुआ। 28 से 30 जुलाई को सामूहिक तेले हुए। सोमवार एवं गुरुवार को महिला मण्डल ज्ञान-ध्यान सीख रहा है। **सम्पर्क सूत्र-**रतनलाल जी सुराणा-0731-2400546, 9425910951, जितेन्द्र जी चौपड़ा-9302127805

गंगापुर सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का जैन स्थानक (महावीर भवन) में 3 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही उपवास, आयम्बिल, एकासना, तेले की लड़ी एवं

अठाई की कड़ी चल रही है। प्रातः प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर ज्ञानचर्चा एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण आदि अनुष्ठानों में स्थानीय भाई-बहिन रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं। धर्मध्यान एवं तप-त्याग का ठाट लगा हुआ है। **सम्पर्क सूत्र-** श्री राजीव कुमार जी जैन-9414032058, रेवतीप्रसाद जी जैन-9413503959

मांडल- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का जैन स्थानक में 9 जुलाई 2011 को सुख-शांति पूर्वक चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही दया, एकासना, तेले एवं आयम्बिल की लड़ी चल रही है। द्रव्य से भद्रोत्तर तप भी चल रहा है। दस पच्चक्खाण निरन्तर हो रहे हैं। दो अठाई, एक नौ की तपस्या हुई है। एक तपस्वी मासखमण की ओर बढ रहे हैं। एक पचरंगी हुई है, नित्य संवर, सामायिक, उपवास हो रहे हैं। जैनेतर लोगों में भी उपवास, अठाई आदि तपस्याएं हुई हैं। प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा में अच्छी उस्थिति रहती है। **सम्पर्क सूत्र**-भागचन्द जी जैन-02587-248248, 9673253108

वैशाली नगर अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 का स्थानक भवन, वैशाली नगर अजमेर में 4 जुलाई 2011 को चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही उपवास, आयम्बिल, एकासना व तेले की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। एक बहिन के 19 की तपस्या चल रही है। 1 अगस्त से 8 अगस्त तक महिलाओं का शिविर रखा गया है। सामूहिक एकासना में 75, सामूहिक पांच-पांच सामायिक में 70, सामूहिक आयम्बिल में 40, सामूहिक दया में 35-40 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। दोपहर को बहनें प्रतिक्रमण, आगम एवं थोकड़ों का अध्ययन कर रही हैं। **सम्पर्क सूत्र**-जीतमल जी कोठारी-9414708603, पारसमल जी चोरडिया-9928371671

जोधपुर में केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 24 से 30 जुलाई 2011 तक केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में जयपुर, मुम्बई, नवसारी, आलनपुर, अलीगढ़, बजरिया, सवाईमाधोपुर, बेगूं, भीलवाड़ा,

चेन्नई, देवली, हिण्डौन सिटी, जरखोदा, खेरली, कोटा, कुश्तला, पीपाड़ तथा स्थानीय जोधपुर शहर के लगभग 140 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। इस शिविर में नया प्रयोग किया गया, जिसके अन्तर्गत स्वाध्यायी एक-एक विषय की गूढ़ जानकारी प्राप्त कर सकें तथा उसका गहन अध्ययन कर सकें अत: सात दिन के इस शिविर में पांच दिन के विषय निर्धारित कर शिविरार्थियों को उन विषयों को चुनने की स्वतंत्रता दी गयी। शिविर के प्रथम दिन स्वाध्याय संघ की जानकारी, स्वाध्यायियों की दिनचर्या एवं उनसे अपेक्षाओं की जानकारी दी गयी। द्वितीय दिवस सूत्र-दिवस के दिन स्वाध्यायियों द्वारा स्वयं चुनी गयी कक्षाओं में सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, 12 व्रत तथा 10 प्रत्याख्यानों का प्रशिक्षण दिया गया। तृतीय दिवस तत्त्व दिवस को 25 बोल, कर्म प्रकृति, गति-आगति, समिति-गुप्ति तथा गुणस्थान के थोकड़े स्वाध्यायियों ने सीखे। चतुर्थ दिवस पर सभी स्वाध्यायियों को अंतगड़ सूत्र वाचन, विवेचन एवं उसे प्रभावी एवं रोचक कैसे बनाएं, इसका प्रशिक्षण दिया गया। पंचम दिवस आगम-दिवस के दिन उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, सुखविपाक, आचारांग तथा तत्त्वार्थ सूत्र के कुछ अध्ययन तथा चयनित सूत्रों को कण्ठस्थ कराकर उनका अर्थ समझा गया। षष्ठ दिवस इतिहास दिवस पर तीन सत्रों में तीर्थंकर केवली काल, स्थानकवासी परम्परा की मूल मान्यताएं तथा रत्नसंघ के इतिहास की विशेष जानकारी सामूहिक रूप से सभी ने प्राप्त की। सप्तम दिवस पर वक्तृत्व शैली कैसे विकसित हो, उसके टिप्स सीखे। कुल मिलाकर इन सात दिनों में गागर में सागर भरने का प्रयास रहा। प्रात: 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक की दिनचर्या में प्रात:कालीन सामूहिक ध्यान एवं विशिष्ट उद्बोधन के साथ शुरुआत होती तथा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ओजस्वी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के आगमिक, तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के तात्विक, श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. के सत्प्रेरक एवं श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. के मार्मिक प्रवचन को श्रवण कर सभी स्वाध्यायियों को अपना आत्म-निरीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। व्याख्यान पश्चात् प्रतिदिन सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु विकल्पात्मक प्रश्नों की परीक्षा आयोजित की गयी। परीक्षा पश्चात् तीन कालांशों में ज्ञानार्जन हुआ तथा तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी की विशेष कक्षा जिसमे प्रतिदिन के विषयों को पुष्ट करने हेतु विशिष्ट ज्ञान की जानकारी प्राप्त हुई । सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में प्रतिदिन विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम स्वाध्यायियों को पर्युषण में करायी जाने वाली

प्रतियोगिता नये-नये रूप में करवाने हेतु बताया गया।

शिविर में विद्वान् प्रशिक्षकों में आदरणीय श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, श्री पदमचन्द जी मुणोत-जयपुर, डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री मूलचन्द जी बाफना-जोधपुर, श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, डॉ. श्वेता जी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर, श्री दिलीप जी जैन-जोधपुर, श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन-जयपुर तथा कमलेश मेहता-जोधपुर ने अपनी महनीय सेवाएं प्रदान की। शिविर व्यवस्था में कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी की विशेष सेवा प्राप्त हुई।

-नवरतन डागा, संयोजक

श्राविका मण्डल द्वारा त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन चेन्नई में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा श्राविकाओं में धार्मिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञानार्जन के उद्देश्य से चेन्नई महानगर में 23 से 25 सितम्बर 2011 तक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को आने-आने का मार्ग व्यय दिया जायेगा। चेन्नई पधारने पर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 के दर्शन-वन्दन व प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा। चेन्नई शिविर स्थल एवं सम्पर्क सूत्र- मरलेचा गार्ड, नं. 48, हन्टर रोड, गोपाल मेन्शन स्ट्रीट, अयप्पा ग्राउण्ड के पास, शूले, चेन्नई, फोन-044-32426373, 09841089858, श्रीमती मधु जी सुराणा-09382679660, श्रीमती मंजू जी भण्डारी-09342677066, श्रीमती मोहनकौर जी जैन-09351590014, श्री उगमचन्द जी कांकरिया-09444351245

जैनधर्म के विषयों का प्रशिक्षण

वाराणसी- आई.एस.जे.एस. तथा पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन धर्म के विषयों पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 4 से 8 जून 2011 तक पार्श्वनाथ विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीस विदेशी जिज्ञासुओं ने जैनधर्म-दर्शन के गूढ़ विषयों का अध्ययन किया। अमेरिका से पधारे भौतिकी के इमेरटस प्रोफेसर प्रो. पारसमल अग्रवाल, वाराणसी के प्रो. मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी, प्रो. सुदर्शनलाल जैन तथा संत प्रशमरति विजय जी

म.सा. ने प्रशिक्षण दिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 6 जून 2011 को 'संल्लेखना' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

प्राकृत भाषा एवं साहित्य की 21 दिवसीय 23 वीं पाठ्यशाला सम्पन्न

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान एवं भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान के तत्त्वावधान में प्राकृत भाषा एवं साहित्य की 21 दिवसीय पाठ्यशाला का 23 वाँ आयोजन 8 से 29 मई तक हुआ। विगत 22 वर्षों से बिना किसी व्यवधान के संस्थान प्रतिवर्ष समर स्कूल का आयोजन कर रहा है। इस पाठ्यशाला में 17 विद्यार्थियों ने सफलता पूर्वक पाठ्यक्रम को पूर्ण किया और प्रमाणपत्र प्राप्त किए। पाठ्यशाला का आरम्भ दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व डीन ऑफ कॉलेजेज डॉ. एस.एस. राणा के सभापतित्व में प्रो. सत्यरंजन बैनर्जी के उद्घाटन अभिभाषण के साथ 8 मई को हुआ।

इस पाठ्यशाला में प्रो. सत्यरंजन बनर्जी-कोलकाता, डॉ. अनीता बन्दोपाध्याय-कोलकाता, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य-लाडनूँ, प्रो.दीनानाथ शर्मा-अहमदाबाद, डॉ. कमलेश जैन-जयपुर, डॉ. दामोदर शास्त्री-लाडनूँ और डॉ. कमल कुमार जैन-पूना ने अध्यापन का कार्य किया। 29 मई के समापन समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी ने अध्यक्षता की तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने समापन भाषण दिया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुल-सचिव डॉ. केबी.सुब्बारायुडु समारोह में विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. श्वेता जैन-जोधपुर ने प्रथम, धन्यकुमार जैन-म.प्र. ने द्वितीय तथा राहुल जोशी-भोपाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अन्त में कुलपति त्रिपाठी जी ने अध्येताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र दिए।

डॉ. डी.एस.कोठारी की स्मृति में डाक टिकट

मानवतावादी वैज्ञानिक, समर्पित गाँधीवादी, महान शिक्षाविद् एवं भारतीय रक्षा विज्ञान के जनक डॉ. दौलतसिंह कोठारी (1906-1993) के जन्मदिन पर भारत सरकार के डाक विभाग ने उनकी स्मृति में 6 जुलाई, 2011 को पाँच रूपये मूल्य का डाक टिकट जारी किया। यह कार्यक्रम जैन महासभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सभागार में न्यायाधीश श्री दलवीर भण्डारी, भारतीय डाक सेवा के सदस्य श्री कमलेश्वर

प्रसाद, दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश सिंह, दिल्ली सर्किल की प्रमुख डाकपाल श्रीमती रामेश्वरी हाण्डा, डॉ. कोठारी के ज्येष्ठ पुत्र प्रो. लक्ष्मण कोठारी तथा देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों, दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों, डाक विभाग के अधिकारियों एवं जैन समाज के शीर्ष नेताओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सभी वक्ताओं ने डॉ. दौलतसिंह कोठारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ.कोठारी विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयक 'नैतिक मूल्यपरक शिक्षा' के पक्षधर थे। विख्यात वैज्ञानिक और शिक्षाविद् होने के बावजूद डॉ. कोठारी सादगी, अपरिग्रह और निरभिमानिता के जीवन्त प्रतिमान श्रावक थे। जैन धर्म, जैन सन्तों और जीवन-मूल्यों में उनकी प्रबल आस्था का श्रेय वे अपनी धर्मपरायण व्रतनिष्ठ माँ को देते थे। अहिंसा और विज्ञान तथा चरित्र और शिक्षा के सुमेल पर उन्होंने बहुत जोर दिया था।

पन्द्रवें महावीर पुरस्कार हेतु नामांकन आमंत्रित

भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा 15 वाँ महावीर पुरस्कार के लिए चार वर्गों में प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं-

1. अहिंसा व शाकाहार,
2. शिक्षा,
3. चिकित्सा तथा
4. सामाजिक उत्थान व सेवा।

इन चारों क्षेत्रों में दिए जाने वाले प्रत्येक पुरस्कार में 10 लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किये जायेंगे। इन पुरस्कारों हेतु नामांकन पूरे राष्ट्र से आमंत्रित हैं। प्राप्त नामांकन में से चयन समिति द्वारा विचार-विमर्श कर विजेताओं का चयन किया जाएगा। नामांकन भेजने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2011 है। अधिक जानकारी तथा फार्म www.bmfawards.org पर उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र- No.11, Ponnappa lane, Triplicane, Chennai-600005, Ph. 044-28481353/ 28480668, Fax: 044-28481354, Email:bmfawards@gmail.com

उत्तरप्रदेश में कत्लखाने का विरोध करें

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा केन्द्र सरकार के खाद्य मंत्रालय के सहयोग से आठ नए स्वचालित बूचड़खाने खोलने का निर्णय लिया गया है एवं इसके आदेश भी प्रसारित हो गए हैं। सभी अहिंसा जीवदया प्रेमियों से निवेदन है कि पोस्टकार्ड के माध्यम से राष्ट्रपति, खाद्य-कृषि व पर्यावरण मंत्री तथा उत्तरप्रदेश के राज्यपाल व मुख्यमंत्री के समक्ष विरोध प्रकट करें एवं जीवदया में भागीदार बनें।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की ओर से महिलाओं में नैतिक एवं धार्मिक जागृति हेतु सप्तदिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर सामायिक स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक स्थानक में 23 से 29 जून 2011 तक आयोजित किया गया। इस शिविर में 115 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में नौ कक्षाएँ लगाई गईं जिसमें शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन कराया गया। अध्यापन कार्य श्री अरूण जी मेहता, श्री रंगरूप सा डागा, श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, मोहिनी जी कछावाह, श्रीमती रतन जी चोरडिया आदि ने किया। शिविर में भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वालों को पुरस्कार भी दिया गया। डॉ. चंचलमल जी चोरडिया, श्री धर्मचन्द जी जैन एवं श्री श्रीकान्त जी जैन ने विशिष्ट विषयों पर व्याख्यान दिए।

-सुनीता मेहता, अध्यक्ष

आगरा- जैन जागृति महिला मण्डल का 12 जून 2011 को गठन हुआ। महिला मण्डल के तत्त्वावधान में 21 से 30 जून तक दस दिवसीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 50 बच्चों ने भाग लिया एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा की तैयार की।

थांदला- श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु' द्वारा रचित पुस्तक 'लग्न की वेला' पर आधारित 'साहित्य पढ़ो क्षयोपशम करो' प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उत्तर पुस्तिका भेजने की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2011 है। 'लग्न की वेला' का मूल्य 10 रुपये, प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 10 रुपयें तथा डाक खर्च 05 रुपये कुल 25 रुपये का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजकर पुस्तक मंगवा सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- **श्री भरत भंसाली**, धर्मधारा, 128, रघुनंदन मार्ग, थांदला, जिला-झाबुआ (मध्यप्रदेश) मोबाइल-9406850428

इन्दौर- भारतीय जैन संघटना, इन्दौर द्वारा समग्र जैन समाज के लिए 24 सितम्बर 2011 को इन्दौर में विधवा, विधुर, परित्यक्ता परिचय सम्मेलन रविन्द्र नाट्यगृह में आयोजित किया जा रहा है। इसमें विधवा, विधुर, परित्यक्ता के अलावा 30 वर्ष से अधिक उम्र के अविवाहित युवक-युवती भी भाग ले सकते हैं, जो विधवा, विधुर परित्यक्ता को जीवनसाथी बनाने के इच्छुक हों। अधिक जानकारी एवं आवेदन हेतु बी.जे.एस. की वेबसाइट **bjsindore.org** देखें। **सम्पर्क सूत्र-** भारतीय जैन संघटना, 141, एल.जी.दवा बाजार, आर.एन.टी.

मार्ग, इन्दौर-452001 फोन-0731-4056416 फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि 06 सितम्बर 2011 है।

बधाई/चुनाव

जसवन्तगढ़- सुश्री हर्षाली जैन सुपुत्री श्रीमती बीना-राहुल जी जैन ने अजमेर बोर्ड की दसवीं कक्षा में 93.67 प्रतिशत अंक अर्जित कर राजस्थान में 20वाँ तथा जिला चुरु में 10वाँ स्थान प्राप्त किया।

जोधपुर- श्री निशित सुपुत्र श्रीमती नीना एवं डॉ. अनिल भण्डारी ने **IIT-JEE**

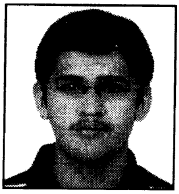

की परीक्षा में देशभर में 40वाँ स्थान प्राप्त किया। सी.बी.एस.ई. की 12वीं कक्षा भी 91 प्रतिशत अंकों में उत्तीर्ण की। भारतीय विज्ञान संस्थान (**IISC**) बैंगलुरु द्वारा आयोजित किशोर वैज्ञानिक खोज प्रतियोगिता में उनका भारत में छठा स्थान रहा एवं स्कालरशिप हेतु चयन हुआ है। भाभा एटोमिक रिसर्च सेण्टर में भी ट्रेनिंग केम्प हेतु चयन हुआ है।

बालोतरा- सुश्री शैफाली दांती सुपुत्री श्री बाबुलाल जी दांती ने दसवीं बोर्ड में 13वाँ स्थान प्राप्त किया है।

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ की वार्षिक साधारण सभा में 26 जून 2011 को स्वाध्याय संघ के चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें श्री मिठालाल जी मकाणा-अध्यक्ष, श्री मनोहरलाल जी डूँगरवाल-मंत्री एवं श्री मोहनलाल जी अखावत-कोषाध्यक्ष मनोनीत किए गए।

श्रद्धा भण्डारी, जोधपुर

नेहा पारख, मुम्बई

मेघा बाफना, जोधपुर

प्रिन्स बम्ब, ब्यावर

कोमल भंसाली, जोधपुर

नीतू जैन, जयपुर

जितेन्द्र चौपड़ा, बालोतरा

सी.ए. उत्तीर्ण छात्र/छात्राएँ

1. सुश्री श्रद्धा भंडारी सुपुत्री श्रीमती सरोज-लक्ष्मीरूपचन्द जी भंडारी, जोधपुर
2. सुश्री नेहा पारख सुपुत्री श्रीमती बेला-सुभाष जी पारख, जोधपुर

3. सुश्री मेघा बाफना सुपुत्री श्रीमती संतोष–नवरतन जी बाफना, जोधपुर
4. श्री प्रिन्स कुमार सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी बम्ब, ब्यावर
5. सुश्री कोमल भंसाली सुपुत्री श्रीमती कान्ता–विरेन्द्र जी भंसाली, जोधपुर
6. सुश्री नीतू जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्द जी जैन, जयपुर
7. श्री जितेन्द्रकुमार चौपड़ा सुपुत्र श्री राजेन्द्रकुमार जी चौपड़ा, बालोतरा

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री नरपतराज जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री

धनराज जी भण्डारी का 71 वर्ष की उम्र में 28 जुलाई को देहावसान हो गया। आप सरलस्वभावी, शान्त एवं चिन्तनशील श्रावक थे। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत–सतिवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा–भक्ति थी। आपने सन् 1951 में स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा लगभग 20 से अधिक क्षेत्रों में जाकर सेवाएं प्रदान की थी। आप थोकड़ों के अच्छे जानकार थे। आपने शीलव्रत के प्रत्याख्यान के साथ ही अन्य कई प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

पीपाड़सिटी- श्रद्धानिष्ठ–धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पारसीदेवी जी

धर्मपत्नी स्वाध्यायी सुश्रावक स्व. श्री नेमीचन्द जी बागरेचा मेहता का 8 जुलाई, 2011 को स्वर्गवास हो गया। दृढ़धर्मी श्राविकारत्न की आचार्य भगवन्त, उपाध्यायप्रवर एवं रत्नसंघ के संत–सतीवृन्द के प्रति अनन्य आस्था–भक्ति थी। उन्होंने 37 वर्ष की उम्र में शीलव्रत का खंद किया तथा 40 वर्ष की उम्र में रात्रि भोजन त्याग व जमीकन्द का त्याग कर दिया था। नित्य पाँच सामायिक के साथ तपाराधन के क्षेत्र में श्राविकारत्न ने आठ–ग्यारह की बड़ी तपश्चर्या के साथ उपवास–बेले–तेले की अनेक तपस्याएँ कीं। सतीवृन्द के सान्निध्य में संवर–पौषध की साधना में वे अग्रणी रहती थीं। श्राविकारत्न के सुपुत्र श्री धनरूपचन्द जी, श्री उज्ज्वलचन्द जी, श्री सुमतिचन्द जी के साथ बागरेचा मेहता परिवार की ज्ञान–ध्यान, त्याग–तप और साधना–आराधना में सक्रियता अनुकरणीय है। श्री सुमतिचन्द जी वर्षों से रत्नसंघ एवं पीपाड़ संघ को समर्पितभाव से सेवाएँ दे रहे हैं।

उज्जैन- धर्मानुशासनप्रिय सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी मारू का 72 वर्ष की वय में 6 जुलाई 2011 को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन ग्यारह सामायिक, दोनों समय प्रतिक्रमण एवं रात्रि-संवर करते थे। शीलव्रत, रात्रि-चौविहार त्याग, जमीकंद-त्याग आदि आपके कई नियम थे। आप श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक-संघ, नमकमंडी उज्जैन के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में संघ संरक्षक थे।

तलवण्डी (कोटा)- धर्म के प्रति समर्पित सुश्राविका श्रीमती रतनबाई धर्मपत्नी श्री

रामकल्याण जी जैन (गेंता वाले) का 81 वर्ष की आयु में 27 जून, 2011 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय तथा नवकारसी करती थीं। विगत 30 वर्षों से आपने शीलव्रत अंगीकार कर रखा था तथा आजीवन रात्रिभोजन त्याग का नियम था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- श्री संजय जी कांकरिया आत्मज स्व. श्री सुमेरमल जी कांकरिया का 9

जुलाई 2011 को 45 वर्ष की वय में मुम्बई में असामयिक स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ परिवार में जन्मे एवं पले-बढ़े श्री कांकरिया जी रत्नसंघ के पूर्व मारवाड़ क्षेत्रीय प्रधान श्रावकरत्न श्री नरपतराज जी चौपड़ा के दामाद थे।

इन्दौर- समाजसेवी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री वर्द्धमान जी चाणोदिया का 76 वर्ष की

आयु में 29 जून 2011 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं रत्नसंघीय संत-सतीवर्ग के प्रति अगाध श्रद्धा थी तथा आप सभी संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहते थे। आप अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे और जीवनभर समाजसेवा में तत्पर रहे।

मदनगंज किशनगढ़- धर्मशीला सुश्राविका श्रीमती सोभागदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री

धनराज जी पोखरणा का 82 वर्ष की आयु में 16 जुलाई 2011 को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती एवं संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप शान्त स्वभावी, सरलमना एवं धार्मिक रुचि वाली श्राविका थीं। मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किए गए।

जोधपुर- सुश्रावक श्री रतनलाल जी मालू का 87 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपने खींचन में संचालित पक्षी चुग्गाघर के रख-रखाव में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। बीमार पक्षियों की अपने हाथों से आप खूब सेवा करते

थे।

उदयपुर- सियाचिन में 21 जुलाई 2011 को रात करीब नौ बजे बंकर विस्फोट में

लेफ्टिनेंट अर्चित वर्डिया शहीद हो गए। लेफ्टिनेंट अर्चित वर्डिया श्रमण संघ के तृतीय आचार्यसम्राट् श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के संसार पक्षीय भतीजे थे। श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के मंत्री वीरेन्द्र डांगी एवं नरेन्द्र वर्डिया शहीद लेफ्टिनेंट अर्चित के बड़े पापा हैं।

निझर (गुजरात)- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बाबूलाल जी कांकरिया का 62 वर्ष

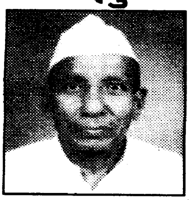

की आयु में 25 जून, 2011 को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से मौन, सामायिक, ध्यान एवं योग साधना करते थे। आपने 33,31,21,15, 11, 9, 8,3 आदि अनेक तप किए। रत्नसंघ के संत-सतीवृंद के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

अजमेर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गुमानमल जी नाहटा (मूलतः ब्यावर निवासी) का

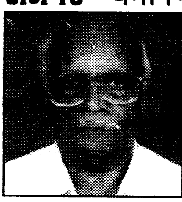

82 वर्ष की आयु में 19 जुलाई 2011 को त्याग-प्रत्याख्यान के साथ देहावसान हो गया। सहृदय, स्पष्टभाषी, मिलनसार, धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत, संत-सतियों की सेवा में पूर्णतः समर्पित दानवीर, करुणामय, निष्ठावान श्री नाहटा जी को आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. से लेकर वर्तमान तक के चारों आचार्यों एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का निकट से सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहता है।

अजमेर- उदारमना सुश्रावक श्री सौभागमल जी कर्णावट का 85 वर्ष की वय में 27

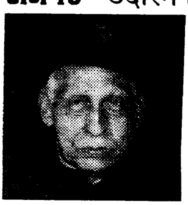

जून 2011 को स्वर्गवास हो गया। अपने मिलनसार स्वभाव एवं मृदुता के कारण समाज एवं जन-जन में आप लोकप्रिय थे। वे संत-सती वर्ग की सेवा में एवं समाजोत्थान के कार्यों में सदा अग्रणी रहते थे।

बालोतरा- संघहितैषी सुश्रावक श्री चम्पालाल जी बोकड़िया का 19 जून 2011 को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक गुरुभक्त चम्पालाल जी बोकड़िया का जीवन धार्मिक क्रिया-कलापों से युक्त था। उन्होंने अपने जीवन में सामायिक, प्रतिक्रमण आदि करने के साथ कई प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सामाजिक कार्यों में भी आपका योगदान

सराहनीय था। आपकी आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

गंगापुर सिटी- श्री विकास जैन सुपुत्र श्रीमती शशि-भागचन्द जी जैन (फाजिलाबाद वाले) का 25 जुलाई 2011 को 23 वर्ष की अल्पायु में ब्रेन ट्यूमर के कारण देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन में कई प्रत्याख्यान ले रखे थे। नियमित रूप से आप प्रातः व सायं की प्रार्थना बोलते थे। आपके आजीवन ब्रह्मचर्य एवं रात्रि-भोजन का त्याग था। आपने अपनी मृत्यु के समय भी लोगस्स का ध्यान किया, प्रार्थना बोली तथा आपके दादा श्री रामदयाल जी जैन, रिटायर्ड तहसीलदार ने संथारे का प्रत्याख्यान कराया। आप हमेशा आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का गुणगान किया करते थे। प्रार्थना के लिए आप पारिवारिक जन को भी कहा करते थे। आपके जीवन में दयाभाव कूट-कूट कर भरे थे।

कनाना- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती काजूदेवी जी संचेती धर्मपत्नी श्री प्रकाशकरण जी संचेती का 30 जुलाई 2011 को देहावसान हो गया। आप साम्प्रदायिकता की भावना से परे संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के कनाना विराजने पर आपने अच्छा लाभ लिया था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय किया करती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

युवक परिषद् द्वारा सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा शाखा स्तर एवं व्यक्तिगत स्तर पर निम्नांकित सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं-1. सर्वश्रेष्ठ शाखा 2. शाखा स्तर पर (चतुर्विध संघ-सेवा-सम्मान) (सामायिक-स्वाध्याय सम्मान) (धार्मिक शिक्षण सम्मान) (स्वधर्मि-वात्सल्य एवं समाज सेवा-सम्मान) 3. व्यक्तिगत सम्मान (तप-वर्षीतप, मासखमण करने पर) (संयम-12 व्रत धारण करने पर) (संत-सती सेवा : 7 दिन लगातार तथा वर्ष में कम से कम 200 कि.मी. विहार सेवा) (समाज सेवा-सम्मान) (खेलकूद) (शिक्षा) 4. अन्य सम्मान (युवारत्न स्तोक रत्न सम्मान - थोकड़े कण्ठस्थ करने पर) (दिवस विशेष पर सराहनीय सम्मान) (आओ 25 बोल सीखें राष्ट्रीय अभियान) (धोवन पानी राष्ट्रीय अभियान) (सामूहिक पारिवारिक प्रार्थना)। सम्पर्क-घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. 0291-2641445

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

11000/- जिनवाणी आजीवन संरक्षक सदस्यता हेतु प्रत्येक

116 Shri Dulichand Ji Kishanlal Ji Nahta, KGF (Karnataka)

4000/- मण्डल के सत्साहित्य की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

731 श्री रिषभ जी संकलेचा, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

13134 Shri Arun ji Hirawat, Kandivali (East), Mumbai (M.H.)
13135 Shri Roop Chand ji Kumbhat, Bangaluru (Karnataka)
13136 श्री प्रदीप कुमार जी जैन, झालारापाटन, जिला–झालावाड़ (राजस्थान)
13137 श्री कामेश जी जैन, बी–25, मालवीयनगर, अलवर (राजस्थान)
13138 श्री सौभाग्यचन्द जी सुराणा, 366, शान्ति कुंज, अलवर (राजस्थान)
13139 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, शिव ज्योति कन्वेन्ट स्कूल के पास, कोटा (राजस्थान)
13140 Shri Abhishek ji Singhvi, Sukhdev Vihar, New Delhi
13141 Shri Himanshu N. Shah ji, Jamnagar (Gujrat)
13142 श्री ज्ञानमल जी कोठारी, आजादनगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
13143 श्री इन्द्रसिंह जी कोठारी, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
13144 श्री रवि जी कोठारी, सहाड़ा, जिला–भीलवाड़ा (राजस्थान)
13145 श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पोस्ट–जुणदा, राजसमन्द (राजस्थान)
13146 श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, खांखला, भीलवाड़ा (राजस्थान)
13147 श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
13148 श्री हीरालाल जी जैन, सुरपुर, वाया–घासुण्डा, जिला–चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
13149 श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नवाणिया, उदयपुर (राजस्थान)
13150 श्री शांतिलाल जी गोठी, शांति सेल्स, राजधानी रोड़, धमतरी (छत्तीसगढ़)
13151 Smt. Sangeeta ji Mehta, Bangalore (Karnataka)
13152 Shri Vikas ji Bomb, Mint Street, Chennai (Tamilnadu)
13153 Shri Prem Chand ji Jain, Dehradun (Uttarakhand)
13154 सौ.कां. शान्ता जी बाफणा, रांका कॉलोनी, नाशिक (महाराष्ट्र)
13155 श्री शिवचरण जी जैन, अरावली मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
13156 Shri Manoj ji Talesara, Char Rasta, Vapi (Gujarat)
13157 श्री आनन्द जी कोटेचा, गाँधीपेठ, चिंचवड, जिला–पुणे (महाराष्ट्र)
13158 Shri Amrish ji Singhvi, Ahemedabad (Gujarat)
13159 श्री राजमल जी सांड, पोस्ट–हरसुद, जिला–खण्डवा (मध्यप्रदेश)
13160 सौ.कां. संगीता जी आलीझाड़, चालीसगाँव, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)

13161 Shri Vishal Kumar ji Rathore, Leelanagar, Pune (M.H.)
13162 श्री अजय जी चणोदिया, 7, शान्ति नगर, मनोरमागंज, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13163 Shri Shanti Lal ji Anchalia, Bangalore (Karnataka)
13164 श्रीमती शान्ता जी भण्डारी, एस.वी. रोड़, गोरेगाँव (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
13165 श्री सुरेशचन्द जी गोलेच्छा, लालजी थान, बालोतरा, बाड़मेर (राजस्थान)
13166 श्रीमती वन्दना जी बोहरा, टी नगर, चेन्नई (तमिलनाडु)
13167 श्री अमित कुमार जी जैन, आदर्श नगर-बी, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13168 श्री अंकित कुमार जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5011/- श्री पंकज जी, नीरज जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पिता डॉ. पी.एम. कुम्भट एवं माताश्री श्रीमती कुसुम जी कुम्भट की शादी के 50वर्ष पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

2500/- श्री ताराचन्द जी बाफना एवं श्रीमती भंवरीदेवी जी बाफना, जोधपुर, सुश्री मेघा बाफना सुपुत्री संतोष-नवरतन सा बाफना के प्रथम प्रयास में सी.ए. फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण करने की खुशी में भेंट।

2101/- श्रीमती कुसुम जी कुम्भट-डॉ. पी.एम. कुम्भट, जोधपुर, दौहित्री सुश्री नेहा पारख सुपुत्री श्रीमती बेला सुभाष जी पारख सुपौत्री स्व. श्री पारसमल जी 'प्रसून' के सी.ए. फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खुशी में भेंट।

2100/- श्री अजय जी चाणोदिया, इन्दौर, श्री वर्धमान जी चाणोदिया का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2100/- श्री सुमेरमल जी कांकरिया, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री संजय जी कांकरिया (कंवर साहब श्री नरपतराज जी चौपड़ा) का दि. 9 जुलाई 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्रीमती कंचनदेवी-प्रसन्नमल जी फोफलिया, जोधपुर, अपने दोहिते श्री निशित जी भंडारी के आई आई टी में 40वीं रेंक प्राप्त करने की खुशी में।

1101/- श्री डिग्गी प्रसाद जी, महावीर प्रसाद जी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार जी जैन के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती पुष्पा सुखराज जी कोठारी, कोथरुड-पुणे, श्री सुखराज जी हीरालाल जी कोठारी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- देवेन्द्र कुमार जी भंसाली, दिल्ली, पूज्य पिताश्री स्व. श्री मुन्नालाल जी एवं पूजनीया माताश्री स्व. श्रीमती रतनदेवी जी भंसाली की पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती गीता जी, शान्तिचन्द जी कोठारी, जयपुर, सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुरेश कुमार जी, दिलीप कुमार जी, चन्द्रकान्त जी रांका, पीपलगाँव-बसवंत, नाशिक, सपरिवार परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हस्तीमल जी, प्रकाश जी, इन्द्र जी एवं उत्तम जी नाहटा, अजमेर, पूज्य पिताश्री श्री गुमानमल जी नाहटा का दिनांक 19 जुलाई 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- धनरूपचन्द जी, उज्जवलचन्द जी सुमतिचन्द जी मेहता, पीपाड़ शहर, पूजनीया माताश्री श्रीमती पारसकंवर मेहता का 8 जुलाई 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती उषा जी-प्रेमचन्द जी बोहरा, जोधपुर, अपने पुत्र चि. नीतिन बोहरा संग सौ. वन्दना के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री हुकमीचन्द जी विनोदकुमार जी डोसी, बैंगलोर, चि. संतोष कुमार सुपुत्र हुकमीचन्द जी डोसी के पचौले की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री सुरेशचन्द जी जैन (पुशेदा वाले), जयपुर, सुश्री नीतू जी जैन के सी.ए. फाइनल की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रामकल्याण जी जैन (गेंतावाले) कोटा, श्री पारस कुमार जी, सुरेश जी, नेमीचन्द जी एवं जम्बूकुमार जी जैन (पोरवाल) की मातुश्री श्रीमती रतनबाई जी जैन का 27 जून को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती मधु जी जैन, धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र श्री कुलदीप जी जैन का आइसोलक्स कोर्सेन इण्डिया में इन्जीनियर पद (टी.एण्ड डी) पर चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती शकुन्तला देवी, सतीश कुमार, विजयप्रकाश जैन, जयपुर, पूज्य स्व. श्री कस्तुरचन्द जैन (खौह वाले) की द्वितीय पुण्य-स्मृति पर सप्रेम भेंट।

500/- सौ. शान्ता जी, महेन्द्र जी बाफणा, नाशिक, सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती ज्ञानकंवर-सुमेरचन्द जी चौधरी, जोधपुर, अपनी सुपुत्री मंजू गांग के स्वास्थ्यलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती सुन्दरबाई जी मालू धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलाल जी मालू, खींचन वाले, श्री रतनलाल जी मालू पुण्य स्मृति में सादर भेंट।

500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी लोकेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, स्व. श्रीमती विमलादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रणजीतसिंह जी भण्डारी की 32वीं पुण्य तिथि के अवसर पर।

500/- श्री लड्डूलाल जी त्रिलोकचन्द जी जैन (चौरू वाले), चौरू, अपने सुपुत्र चि. मनीष का शुभ विवाह सौ. कां. शिखा सुपुत्री श्री मुकेश जी जैन आलनपुर के संग सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री सुभाषचन्द, प्रवीणकुमार, रविन्द्रकुमार, संदीपकुमार जी हुण्डीवाल, जोधपुर, महासती श्री निरंजना जी म.सा. द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में मासक्षपण तप सुखशांति पूर्वक होने के उपलक्ष्य में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई, श्रीमती शोभा चोरडिया धर्मपत्नी श्री कमल जी चोरडिया को स्तम्भ सदस्य बनाने हेतु।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को साभार प्राप्त

1101/- श्री डिग्गीप्रसाद जी महावीरप्रसाद जी जैन, करेला वाले, सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. प्रदीपकुमार जैन के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्रीमती मधु-धर्मेन्द्रकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र श्री कुलदीप जैन का 'आइसोलक्स कोर्सन इण्डिया' में इंजीनियर पद (टी एण्ड डी) पर चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री मोहनलाल जी सोहनलाल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. प्रमोद सुपुत्र श्री सोहनलाल जी संग सौ. कां. सीमा सुपुत्री श्री धर्मराज जी जैन के शुभ विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

60000/- श्री दलीचन्द जी सुरेशकुमार जी कवाड़, चेन्नई (तमि.)

24000/- श्री संदीप जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)

12000/- मैसर्स उमरावकंवर रिखबराज जी बाघमार, चेन्नई (तमि.)

12000/- श्री केवलचन्दजी संचेती, चेन्नई (तमि.)

12000/- श्रीमती कविता जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)।

12000/- श्रीमती शान्ता जी चोरडिया, बैंगलोर (कर्नाटक)

12000/- श्री महेन्द्र जी गांग, जोधपुर (राज.), श्री मनमोहनमल जी गांग की स्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तद्नुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण शुक्ला 15	शनिवार	13.08.2011	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8	सोमवार	22.08.2011	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 11	गुरुवार	25.08.2011	पर्युषण पर्व प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14	रविवार	28.08.2011	चतुर्दशी, पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 4	गुरुवार	01.09.2011	सम्वत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8	सोमवार	05.09.2011	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला 14	रविवार	11.09.2011	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन कृष्णा 8	बुधवार	21.09.2011	अष्टमी

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई । इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत पांच वर्षो से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

- आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
- आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
- आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
- आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।
- छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

- चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
- सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-**
B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाऊस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

प्लॉट नं. 170 ललवाणी भवन, आस्था हॉस्पीटल के पीछे
द्वितीय पोलो, पावटा, जोधपुर 342001 फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है ।

Opening Ceremony of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

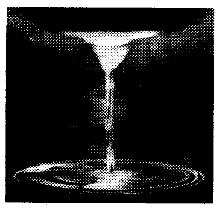
Electric Arc Furnace

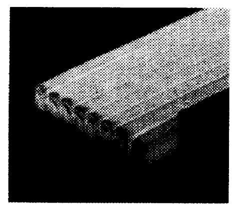
Billets

Rolling Mill

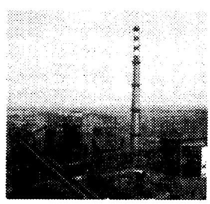
Captive Power Plant

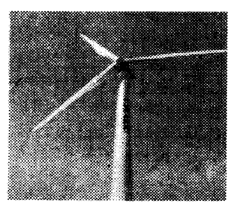
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

•●•

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office	:	022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office	:	022-23669818
Mobile	:	09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

युग मनीषी, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक परमाराध्य आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्म दिवस वर्ष 2010-11 को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई थी। यह एक पंचवर्षीय एवं बहुउद्देश्यी योजना थी, जिसे गतवर्ष पाली में आयोजित आमसभा में संघ द्वारा दो वर्ष के लिए आगे विस्तारित कर दिया गया है।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के प्रमुख उद्देश्य –

1. परमाराध्य, अध्यात्म योगी, युग मनीषी परम उपकारी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वीं जयन्ती वर्ष को शताब्दी वर्ष के रूप में मनाना। 2. कोई भी युवारत्न बंधु धनाभाव या साधनाभाव से उच्च शिक्षा से वंचित न रहें। 3. युवारत्न बन्धुओं का शैक्षणिक उन्नयन, चारित्र निर्माण एवं चहुँमुखी विकास करना। 4. प्रतिभाशाली युवाओं एवं युवतियों की खोज हो सकें। 5. रत्नसंघ में जैन दर्शन के विद्वान तैयार करना। 6. युवारत्न बन्धुओं एवं बहिनों में संघ के प्रति कर्त्तव्य एवं गुरुओं के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण की भावना विकसित करना।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना द्वारा आयोजित शिविर –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना की चयन समिति द्वारा पिछले पांच वर्षों से लगातार लाभान्वित छात्र-छात्राओं के धार्मिक ज्ञान अभिवृद्धि के लिए शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अब तक 9 शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इन शिविरों का आयोजन आचार्य भगवंत एवं उपाध्याय भगवंत के सान्निध्य में किया गया। गुरु भगवंतों का लाभ लाभान्वित छात्र-छात्राओं द्वारा पूर्णरूपेण लिया गया।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के लक्ष्य की ओर बढ़ते चरण –

योजना समिति द्वारा अपने लक्ष्य से कई ज्यादा छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस योजना की प्रगति की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।

वर्ष	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
लक्ष्य	96	193	291	390	500
प्राप्ति	130	250	400	560	450

- कई प्रशासनिक एवं प्रोफशनल युवारत्नबंधु एवं बहिनें तैयार।
- शिविरों में अध्यापन कार्य के लिए कई युवारत्नबंधु एवं बहिनें तैयार।

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097), 2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729), 3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164), 4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065), 5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742) 6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597), 7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570) 8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932), 9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589) 10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411), 11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

ISSN 2249-2011

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2011 ★ श्रावण, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।